।। श्री वीतरागाय नमः ।।

विशद
महामृत्युञ्जय विधान

(पं. आशाधरजी कृत संस्कृत विधान के पद्यानुवाद सहित)

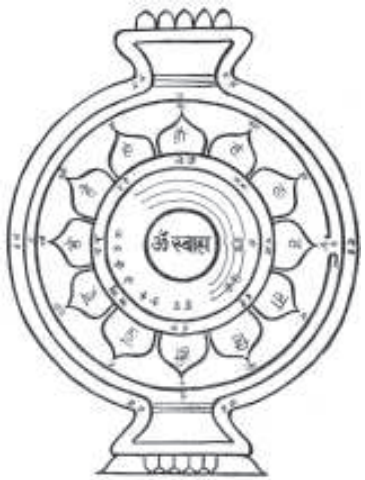

मृत्युञ्जय यंत्र

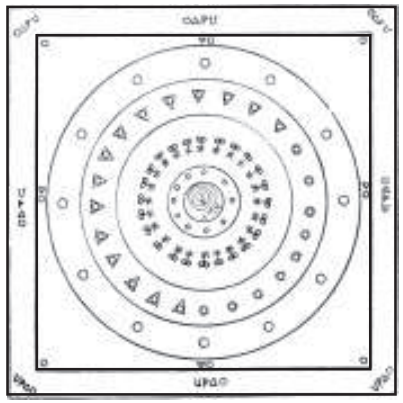

माण्डना

रचयिता : प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति – विशद महामृत्युञ्जय विधान

आशीर्वाद – प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति, पंचकल्याणक प्रभावक
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण – प्रथम – 2010 प्रतियाँ –1000

संकलन – मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग – क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी महाराज
ब्र. लालजी भैया, सुखनन्दनजी भैया

संपादन – ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), आस्था, सपना दीदी

संयोजन – ब्र. सोनू (9829127533), किरण, आरती दीदी

प्राप्ति स्थल – 1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट,
मनिहारों का रास्ता, जयपुर मो.: 9414812008
फोन : 0141-2311551 (घर)

2. श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय
बरौदिया कलाँ, जिला-सागर (म.प्र.)
फोन : 09993965053

3. विवेक जैन, 2529, मालपुरा हाऊस,
मोतिसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर
फोन : 2503253, मो.: 9414054624

4. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार, ए-107, बुध विहार, अलवर
मो.: 9414016566

पुनः प्रकाशन हेतु – 51/- रु.

-: अर्थ सौजन्य :-

* श्री महावीरजी जैन * श्री अशोकजी सुरलाया * श्री महेन्द्रजी जैन
* श्री डल्लभजी जैन * श्री ललितजी भँवरलालजी ठोला
* श्रीमती सीमाजी वीरेन्द्रजी जैन * गुप्तदान

कृति – **विशद महामृत्युञ्जय विधान**

आशीर्वाद – प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति, पंचकल्याणक प्रभावक
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण – प्रथम – 2010 प्रतियाँ –1000

संकलन – मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग – क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी महाराज
ब्र. लालजी भैया, सुखनन्दनजी भैया

संपादन – ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), आस्था, सपना दीदी

संयोजन – ब्र. सोनू (9829127533), किरण, आरती दीदी

प्राप्ति स्थल –
1. निर्मलकुमार गोधा
जैन सरोवर समिति, 2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट,
मनिहारों का रास्ता, जयपुर मो.: 9414812008
फोन : 0141–2311551 (घर)
2. श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय
बरौदिया कलाँ, जिला–सागर (म.प्र.) फोन : 09993965053
3. विवेक जैन, 2529, मालपुरा हाऊस,
मोतिसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर
फोन : 2503253, मो.: 9414054624
4. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार, ए–107, बुध विहार, अलवर
मो.: 9414016566

पुनः प्रकाशन हेतु – 51/– रु.

–: अर्थ सौजन्य :–

स्व. श्री जीतमलजी बागड़िया (बघेरवाल) सातावाला बाई की स्मृति में
धर्मपत्नी श्रीमती सूरजबाई, सुपुत्र-श्री जम्बूकुमार, श्री जयकुमार, सुपौत्र- श्री महेन्द्रकुमार,
श्री यशवर्धन, सुपौत्री- यशोधरा जैन बागड़िया, नेमीसागर कॉलोनी, जयपुर
* श्री संजयकुमार जैन (223, आर.के.पुरम्, कोटा)
* श्री भागचन्दजी सुरलाया (केथून वाले), नई धानमंडी, कोटा
* श्री कस्तूरचंदजी (दोतड़ा वाले) बाजार नं. 1, रामगंजमड़ी

आस्था की पुकार

"हे स्वामी ! हम नहीं भिखारी हैं, हम चरणों के दास पुजारी है।
मृत्युञ्जय को पाएँ, तुम जैसे बन जाएँ, मिट जाए जन्म-मरण।।
हमने... बड़े पुण्य से अवसर पाया है, जिन पूजा का भाव बनाया है।

कुन्दकुन्दाचार्य स्वामी ने श्रावक के आवश्यक कर्त्तव्यों में प्रथम आवश्यक कर्त्तव्य देवपूजन को माना है। जिनेन्द्र देव की जल, चंदन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, दीप, धूप, फल, अर्घ्य, द्वारा सच्चे भाव से पूजन करने पर ही फल की प्राप्ति होती है। वर्तमान में प्राणी यत्र-तत्र कुगुरु, कुदेव, कुशास्त्र की सेवा करके अपने कष्ट, दुःख से छुटकारा पाना चाहते हैं। जैन होकर के भी जिन्हें जिनेन्द्र देव, शास्त्र, गुरु पर श्रद्धान नहीं है ऐसे प्राणी ही अपना संसार बढ़ा रहे हैं। भक्ति मुक्ति का साधन है। पूजन भक्ति आराधना करने वाला ही मृत्युञ्जयी बनता है। फिर मृत्यु का नाम सुनते ही प्राणियों का हृदय काँप जाता है कि इस पर्याय को छोड़कर अन्य पर्याय में जाना पड़ेगा। ये अज्ञानी की सोच होती है किन्तु ज्ञानी सोचता है कि यदि जाना ही है तो क्यों न कुछ सत् कार्य करके ही जाएँ और महाव्रत धारण करके समस्त कर्मों का क्षय करके मृत्युञ्जय के अधिकारी बने।

मृत्युञ्जय विधान करने से कर्मों का क्षय तो होता ही है, अनेक बीमारी जैसे हार्ट-अटैक, कैंसर, टी.बी. आदि बाह्य उपद्रव की व्याधियाँ भी इस विधान के यथावत विधि-विधान से करने पर दूर होती हैं। यद्यपि प्राचीन समय में इस विधान का नाम सुनने में नहीं आता था किन्तु वर्तमान में यह विधान जगह-जगह मिल जाता है। जहाँ पर **प.पू. तीर्थ जीर्णोद्धारक, सिद्धांतविज्ञ, साहित्य रत्नाकर, चँवलेश्वर के छोटे बाबा, क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज** ने स्व-लेखनी से सरल भाषा में अनेक विधान लिखे हैं उसी क्रम में पण्डित आशाधार कृत महामृत्युञ्जय विधान का पद्यानुवाद हमारे सामने प्रस्तुत किया।

गुरु महिमा का वर्णन कहाँ तक करूँ ? शब्द वर्णन करने में समर्थ नहीं हैं। ऐसे गुरु को पाकर मैं हमेशा गौरवान्वित महसूस करती हूँ जो मुझे इतने महान् सरल स्वभावी, क्षमामूर्ति, प्रेम का सागर, जन-जन पर बरसाने वाले गुरु मिले। यद्यपि स्वास्थ्य की अनुकूलता न होने पर भी जन-जन के कल्याणार्थ समय-समय पर रचना करते रहते हैं। भगवान उन्हें आरोग्य लाभ देकर, समस्त दुःख, कष्ट, दर्द, क्लेश मुझे प्राप्त हो जाएँ और मेरे सारे सुख, खुशी गुरु को प्राप्त हो जाएँ, यह मेरी कामना है अंत में त्रय भक्ति युक्त नवकोटिपूर्वक बार-बार नमोस्तु।

मेरे गुरुवर मेरे दिल में ज्ञान ज्योति जला देना।
मेरी इस रूह को रब सी खिलाकर के खिला देना।।
तेरे चरणों की सेवा में है मेरी आरजू इतनी।
समाधि के समय आकर मुझे मुझसे मिला देना।।

- ब्रह्मचारिणी आस्था दीदी

यंत्र प्राणप्रतिष्ठा मंत्र

(अथ सामुदायिक प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र)

ॐ आं क्रों ह्रीं अ सि आ उ सा य र ल व श ष स ह अमुष्य प्राणा अमुष्य जीव इह स्थिताः। अमुष्य मृत्युञ्जय-यन्त्रमन्त्रतन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि कायवांगमनश्चक्षुःश्रोत्रृघ्राण-प्राणाः इहैवायान्तु। अत्र सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

अनेन मन्त्रेण यन्त्रोपरि नववारं पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अथ प्रत्येक प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रः

ॐ ह्रीं क्रों अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः वमल्व्र्यूं बम्ल्व्र्यूं नमः परमात्मने। ॐ हं सः क ख ग घ ङ ॐ ह्रां णमो अरहंताणं क्ष्म्ल्व्र्यूं। च छ ज झ ञ - ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ष्म्ल्व्र्यूं जलदेवतायां प्राणाः। ट ठ ड ढ ण - ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं य्म्ल्व्र्यूं अग्निदेवतायां प्राणाः। त थ द ध न - ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं र्म्ल्व्र्यूं वायुदेवतानां प्राणाः। प फ ब भ म - ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्म्ल्व्र्यूं आकाशदेवतायां प्राणाः। ॐ य र ल व श ष स ह क्ष त्र ज्ञ - ॐ णमो अर्हत् केवलिभ्यो झ्म्ल्व्र्यूं आनन्ददेवतायां प्राणाः। जीवा इह स्थिताः। सर्व यन्त्र-मन्त्र-तन्त्ररूपेण-दिव्यदेहस्य अस्य पूजकस्य सप्तधातु रूपकायेन्द्रियाणि कायवाङ्मनश्चक्षुः-श्रोत्रृघ्राणजिह्वेन्द्रियाणि, सुरुचिरं सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। अनेन मन्त्रेण यन्त्रोपरि सप्तवारं गन्धपुष्पाक्षतांजलिं क्षिपेत्।

विधान की विधि

किसी भी शुभ तिथि-नक्षत्रादि में इस विधान को किया जा सकता है। लकड़ी के तख्त पर या किसी वेदी पर श्वेत वस्त्र लगाकर रंग अथवा चावलों से मण्डप बनावें। प्रथम कर्णिका के मध्य ॐ मिश्रित ह्रींकार (अनाहत मन्त्र) का न्यास करें। पश्चात् वलय प्रारम्भ करें। प्रथम-वलय में भगवत् जिनसहस्रनाम पूजा हेतु दशकोष्ठ बनावें तथा एक-एक कोठे में दश अथवा सौ-सौ बिन्दु रखें। अन्तिम कोठे में 108 बिन्दु रखें। द्वितीय वलय में चौबीस तीर्थंकर एवं शासन यक्ष-यक्षियों की अर्चना हेतु 72 कोठे बनावें, तीसरे वलय में पन्द्रह तिथिदेवता एवं नवग्रह देवता के सम्मान हेतु 24 कोठे बनावें। चौथे वलय में अकारादि द्वादश बीजाक्षरों की पूजा हेतु 12 कोठे बनावें। इस प्रकार क्रम से माण्डला बनाकर पूजा विधि प्रारम्भ करें।

प्रथम यज्ञदीक्षा, सकलीकरण, दिग्पाल ध्वजारोहण, वेदीशुद्धि, मण्डप-प्रतिष्ठा, कलशस्थापन व दीपक स्थापन करें, अनन्तर मण्डल पर मंगलाष्टक, आयुधाष्टक, पताकाष्टक एवं कलशाष्टक स्थापित करें। पश्चात् चन्द्रप्रभ या अन्य किसी तीर्थंकर की प्रतिमा एवं मृत्युञ्जय यन्त्र को स्थापित कर पञ्चामृत अभिषेक करें। साथ ही महामण्डलाराधनादि विधि कर पश्चात् सहस्रनाम आदि क्रम से पूजा करें। अकारादि बीजाक्षरों की पूजन के पश्चात् मण्डल के दशों दिशाओं में दिग्पाल पूजा करें, पश्चात् द्वारपाल पूजन कर जाप्य एवं जयमाला करें, आनन्दस्तवन पूर्वक शान्तिपाठ, आरती एवं विसर्जन विधि करें।

पूजन के लिये अपनी व्यवस्था के अनुसार कितने भी इन्द्र-इन्द्राणि बनाए जा सकते हैं। सभी इन्द्र-इन्द्राणियों के वस्त्र पीले ही होने चाहिए। इस विधान को दो से पाँच दिन में किया जा सकता है। विधान पर्यन्त सभी इन्द्र-इन्द्राणी संयम से रहें एवं शुद्ध भोजन करें।

इत्यलम्।

महामंत्र

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उव्वज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

मंगलाष्टकम्

(नोट- ''कुर्वंतु ते मंगलम्'' बोलते हुए पुष्पांजलि क्षेपण करें)

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र-महिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः।
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु मे (नो) मंगलम्।।

श्रीमन्नम्र - सुरा - सुरेन्द्र - मुकुट, प्रद्योत - रत्नप्रभा-
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु मे (नो) मंगलम्।।1।।

सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति-श्री-नगराधिनाथ-जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु मे (नो) मंगलम्।।2।।

नाभेयादि-जिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिः
स्त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु मे (नो) मंगलम्।।3।।

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवता,
श्रीतीर्थंकरमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा।

द्वात्रिंशत् त्रिदशाऽधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चेत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु मे (नो) मंगलम्।।4।।

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पञ्च ये,
ये चाष्टांग-महानिमित्त-कुशला येऽष्टौ वियच्चारिणः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु मे (नो) मंगलम्।।5।।

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणाऽवनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु मे (नो) मंगलम्।।6।।

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनाऽमरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्यशाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु मे (नो) मंगलम्।।7।।

यो गर्भाऽवतरोत्सवो भगवतां जन्माऽभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु मे (नो) मंगलम्।।8।।

इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्य-संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यापाय रहिता निर्वाण लक्ष्मीरपि।।9।।

।। इति मंगलाष्टकम्।।

यज्ञ दीक्षा (सकलीकरण)

शोधये मन्त्रपूतेन हस्तौ शस्तेन वारिणाः।
अपहस्ति तं पंकार्हत्पादपद्मार्चनोद्यतः।।

ॐ ह्रीं असुजर-सुजर भव स्वाहा।

ॐ णमो अरहंताणं श्रुतांगदेवि प्रशस्त हस्ते ह्रूं फट् स्वाहा।

(जल से हाथों की शुद्धि करें)

ॐ ह्रीं अर्हन्मुख कमलनिवासिनी सर्वपापमलक्षयंकरी श्रुत-ज्वालासहस्र-प्रज्ज्वलिते सरस्वती मम पापं हन-हन दह-दह क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षीरधवले अमृतसम्भवे वं वं हूं फट् स्वाहा।

(जल से शरीर की शुद्धि करें)

ॐ ह्रीं भूः शुद्ध्यतु स्वाहा। (जल से भूमि शुद्ध करें)

ॐ ह्रीं क्ष्वीं आसनं निक्षिपामि स्वाहा। (नियुक्त स्थान परआसन बिछावें)

ॐ ह्रीं ह्युं-ह्युं णिसिहि-णिसिहि आसने उपविशामि स्वाहा।

(आसन पर बैठें)

ॐ ह्रीं मौन स्थिताय स्वाहा। (पूजा के प्रसंग को छोड़ मौन ग्रहण करें)

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानपि वारिभिः।
समहितो यथाम्नायं करोमि सकलीक्रियाम्।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन पात्रशुद्धिं करोमि स्वाहा। (पूजा के पात्रों को जल से शुद्ध करें)

ॐ ह्रीं अर्हं झ्रीं वं मं हं सं तं झ्वीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ उ सा समस्ततीर्थ-पवित्र जलेन शुद्धपात्रनिक्षिप्त पूजाद्रव्याणि शोधयामि स्वाहा। (पूजा द्रव्य को जल से शुद्ध करें)

हस्त संघटन

दोनों हाथों की कनिष्ठा आदि पाँचों अँगुलियों के मूल की रेखाओं, मध्य की रेखाओं और अग्रभाग की रेखाओं पर नीचे लिखे पञ्च नमस्कार मंत्रों का केशर से न्यास करें।

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं	**या**	**अ**	**कनिष्ठा**
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं	**या**	**सि**	**अनामिका**
ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं	**या**	**आ**	**मध्यमा**
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं	**या**	**उ**	**तर्जनी**
ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं	**या**	**सा**	**अंगुष्ठ**

अनन्तर- ॐ ह्रीं अर्हं वं मं हं सं तं पं अ सि आ उ सा हस्त संघट्टनं करोमि स्वाहा।

(उक्त मंत्रपूर्वक दोनों हाथों को नमस्कार मुद्रा में सम्पुटित करें।)

निम्न अंगन्यास विधिपूर्वक सम्पुटित हाथों को नीचे दर्शाये गये शरीर के अंग-उपांगों पर स्पर्श करावें।

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं स्वाहा।	**हृदये**
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं स्वाहा।	**ललाटे**
ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं स्वाहा।	**शिरसो दक्षिणे**
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं स्वाहा।	**शिरसः पश्चिमे**
ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं स्वाहा।	**शिरसोत्तरे**

इति प्रथमांगन्यासः

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं	**शिरोमध्ये (सिर के ऊपर)**
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं	**ललाटे (मस्तक पर)**
ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं	**शिरसो दक्षिणे (सिर के दांई ओर)**

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं	**शिरसः पश्चिमे (सिर के बांई ओर)**
ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं	**शिरसोत्तरे (सिर के आगे की ओर)**

इति द्वितीयांग न्यासः

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं	**नाभौ (नाभि के पास स्पर्श)**
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं	**नाभे-र्दक्षिणे (नाभि के दांयीं ओर)**
ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं	**नाभे-र्वामे (नाभि के बांयीं ओर)**
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं	**कवचाय हूं फट्। दक्षिणभुजे (दांई भुजा)**
ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं	**अस्त्राय फट्। वामभुजे (बांई भुजा)**

इति तृतीयांग न्यासः

ॐ णमो अरहंताणं क्ष्म्ल्व्र्यूं मम हृदयं रक्ष-रक्ष ह्रां स्वाहा।

- हृदये (हृदय का स्पर्श करें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्म्ल्व्र्यूं मम शिरो रक्ष-रक्ष ह्रीं स्वाहा।

- शिरोमध्ये (सिर का स्पर्श करें)

ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं छ्रम्ल्व्र्यूं मम शिखां रक्ष-रक्ष ह्रूं स्वाहा।

- शिखायां (मस्तक के ऊपर भाग का स्पर्श करें)

ॐ ह्रौं णमो उव्वज्झायाणं म्ल्व्र्यूं मम वज्राणि वज्रकवचं रक्ष-रक्ष ह्रौं स्वाहा। - दक्षिणभुजे (दाईं भुजा का स्पर्श करें)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं श्म्ल्व्र्यूं मम दुष्टं निवारय-निवारय अस्त्राय फट् ह्रः स्वाहा। - वामभुजे (बांईं भुजा का स्पर्श करें)

इति चतुर्थांग न्यासः

अथ दिग्बन्धन

तथा वाम प्रदेशिन्यां न्यस्य पञ्चनमस्कृतीः।
पूर्वादिदिक्षु रक्षार्थं दशस्वपि निवेशयेत्।।

(बांयें हाथ की तर्जनी अँगुली पर महामन्त्र व अ सि आ उ सा इन पंचाक्षरों का न्यास कर दिग् रक्षार्थ निम्न मंत्रपूर्वक तर्जनी अँगुली को दस दिशाओं में घुमावें)

आँ ह्रां क्षां	**ॐ ह्रां णमो अरहंताणं**	**पूर्वस्यां दिशि**
ईं ह्रीं क्षीं	**ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं**	**आग्नेय्यां दिशि**
ऊँ ह्रूं क्षूं	**ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं**	**दक्षिणस्यां दिशि**
ऋं ह्रें क्षें	**ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं**	**नैऋत्यां दिशि**
एं ह्रैं क्षैं	**ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं**	**पश्चिमायां दिशि**
ऐं ह्रों क्षों	**ॐ ह्रां णमो अरहंताणं**	**वायव्यां दिशि**
ओं ह्रौं क्षों	**ॐ ह्रों णमो सिद्धाणं**	**उत्तरस्यां दिशि**
ॐ ह्रं क्षं	**ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं**	**ईशान्यां दिशि**
अं ह्रः क्षः	**ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं**	**अधरस्यां**
अः ह्रीं क्षीं	**ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं**	**उर्ध्वायां**

इति दिग्बन्धन

ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष-रक्ष हूं फट् स्वाहा।

(सप्तवार पुष्पाक्षत मन्त्रित कर परिचारकों पर क्षेपण करें।)

ॐ हूं फट् किरिटिं-किरिटिं घातय-घातय परविघ्नान् स्फोटय-स्फोटय सहस्रखण्डकान् कुरु-कुरु परविद्यां छिन्दि-छिन्दि, परमन्त्रान् भिन्दि-भिन्दि, क्षः फट् स्वाहा।

(श्वेत सरसों अभिमन्त्रित कर दशों दिशाओं में क्षेपण करें।)

तिलक मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो अरहंताणं रक्ष-रक्ष स्वाहा।

- ललाटे (मस्तक पर तिलक लगावें)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो सिद्धाणं रक्ष-रक्ष स्वाहा। - हृदये

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो आयरियाणं रक्ष-रक्ष स्वाहा। - दक्षिण भुजे

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो उवज्झायाणं रक्ष-रक्ष स्वाहा। - वाम भुजे

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं रक्ष-रक्ष स्वाहा। - कण्ठे

सिद्ध भक्ति

सम्मत्तणाण दंसण वीरिय सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलघु-मव्वावाहं अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं।।
तवसिद्धे-णयसिद्धे, संजमसिद्धे-चरित्तसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमंसामि।।

इच्छामि भन्ते ! सिद्धभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं। सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्तजुत्ताणं। अट्ठविह कम्म विप्पमुक्काणं, अट्ठगुणसंपण्णाणं, उड्ढलोयमत्थयह्मि पयिट्ठियाणं, तव सिद्धाणं, णयसिद्धाणं, संजमसिद्धाणं, चरित्तसिद्धाणं, अतीताणागदवट्टमाण-कालत्तयसिद्धाणं, सव्वसिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

(नव बार णमोकार मंत्र का जाप्य करें)

जिनमतमिव सूक्ष्मं यत्सुखस्पर्श दक्षं,
क्षपित विविधबाधं साध्वलंकार मुख्यं।
शुचितरमपदोषं सद्गुणं तत् दधेऽहं,
परमजिनमखेऽस्मिन् सान्तरीयोत्तरीयम्।।

ॐ ह्रीं श्वेतवर्णे सर्वोपद्रवहारिणी सर्वजनमनोरंजिनी परिधानोत्तरीये धारणीये हं हं झं झं वं वं सं सं तं तं पं पं परिधानोत्तरीयं धारयामि स्वाहा।

(अपने वस्त्रों का स्पर्श करें)

उन्मुद्रिताशेषविनेयपद्म, श्रीकेवलार्कोदयपूर्वशैलम्।
यष्टुं जिनं जीवदया समुद्रं, मुद्रां दधे चारुमनामिकायाम्।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः मुद्रिका धारणं करोमि स्वाहा। (अँगूठी धारण करें)

सम्यक् पिनद्ध नव निर्मल रत्नपक्ति-रोचि-र्वहद्वलय जात बहुप्रकार।
कल्याण निर्मितमहं कटकं जिनेश, पूजाविधान ललिते स्वकरे करोमि।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः कंकण प्रणयनं करोमि स्वाहा। (कंकण धारण करें)

शीर्षण्य शुम्भन्मुकुटं त्रिलोकी, हर्षान्न राज्यस्य च पट्टबन्धम्।
दधामि पापोर्मिकुलप्रहन्तृ, रत्नाढ्य मालाभिरुदञ्चितांगम्।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय नमः शेखरावधारण करोमि स्वाहा। (मुकुट धारण करें)

चेतश्चमत्कार करीजनानां गन्धादिनां या विदुषां विशेषात्।
स्वर्भोगमाला वहु दिव्यशक्त्या, मालां दधे मूर्ध्नि जिनार्चिता तां।।

(पुष्पमाला धारण करें)

दृग्बोध चारित्रगुणत्रयेण दृत्त्वा धृत्वात्रिधोपासक भावसूत्रम्।
द्रव्यं च सूत्रं त्रिगुणं सुमुक्ता-फलं तदारोपण मुद्वहामि।।

ॐ ह्रीं नमः परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकृतार्हं रत्नत्रय स्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा। (ब्रह्मसूत्रं विभृयात्)

ॐ वज्राधिपयते आं ह्रां अः ऐं ह्रौं ह्रः श्रूं ह्रं क्षः इन्द्राय संवषौट्।

(यजमान उक्त मंत्र का 21 बार स्मरण करें वा विधानाचार्य 21 बार उक्त मंत्र का उच्चारण करता हुआ पुष्प वा लोंग यजमान के सिर पर क्षेपण करें)

वर्धमान मंत्र

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे नमो नमः। स्वस्ति 2, जीव 2, नन्द 2, वर्द्धस्व 2, विजस्व 2, अनुशाधि 2, पुनीहि 2, पुण्याहं 2, मांगल्यं 2, पुष्पाञ्जलिः। सोदकानि पुष्पाणि क्षिपेत्।

ॐ शोधयामि भू भागं जिनेन्द्राभिषेकोत्सवो।
कलधौतो ज्वलस्थूल कलशापूर्णवारिणा।।

ॐ ह्रीं नमः सर्वज्ञाय सर्वलोकनाथाय धर्मतीर्थंकराय श्रीशान्तिनाथाय परमपवित्रेभ्यः शुद्धेभ्यो नमः पवित्रजलेन भूमि शुद्धिं करोमि स्वाहा।

क्षेत्रं मखेऽस्मिन् परिपालयन्तं, विघ्नानशेषान पसारयन्तं।
वैश्वानराशापरिकल्पितेन, श्री क्षेत्रपालं बलिनाधिनोमि।।

ॐ आं क्रों ह्रीं अत्रस्थित क्षेत्रपाल ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं क्षेत्रपालाय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।
(मण्डप के आग्नेय कोण में क्षेत्रपाल को अर्घ्यं से सम्मानित कर लाल वस्त्र की ध्वजा को आरोपित करें)

सर्वेषु वास्तुषु सदा निवसन्तमेनं, श्री वास्तुदेवमखिलस्य कृतोपकारं।
प्रागेव वास्तुविधि कल्पित यज्ञभाग-मीशानकोण वश पूजनयाधिनोमि।।

ॐ आं क्रों ह्रीं वास्तु देवाः ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं वास्तु देवेभ्यः इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

विहारकाले जगदीश्वराणा-मवाप्तसेवार्थकृतापदानं।
हुत्वार्चितो वायुकुमार देव ! त्वं वायुना शोधय यागभूमिम्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं वायुकुमार देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं वायुकुमाराय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।
महीपतां कुरु-कुरु ह्रूं फट् स्वाहा। (षड्दर्भ पूलेन भूमिं संमार्जयते)

विहारकाले जगदीश्वराणा-मवाप्तसेवार्थकृतापदानं।
हुत्वार्चितो मेघकुमार देव ! त्वं वारिणा शोधय यागभूमिम्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं मेघकुमार देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं मेघकुमाराय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।
धरां प्रक्षालय-प्रक्षालय अं हं सं वं झं ठं यक्ष फट् स्वाहा।

(भूमि पर जल के छींटे मारें)

गर्भान्वयादौ श्रीमज्जिनेन्द्रै-निर्वाण पूजासु कृतापदानं।
हुत्वार्चितो वह्निकुमार देव ! त्वं ज्वालया शोधय यागभूमिम्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं अग्निकुमार देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं अग्निकुमाराय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।
भूमिं ज्वालय-ज्वालय अं हं सं वं झं ठं यक्ष फट् स्वाहा।

(कपूर जलाकर भूमि को संतप्त करें)

तुष्टा अमी षष्टि सहस्रनागा, भवन्तवार्या भुवि कामचाराः।
यज्ञावनीशानदिशाप्रदत्त-सुधोपमानांजलि पूर्णवार्भिः।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षष्टसहस्रसंखेभ्यो ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं षष्टसहस्रसंखेभ्यो नागेभ्य इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

(ऐशान दिशा में जल के छींटे मारें)

वार्दर्भगन्धैः सुमनऽक्षतौघैः, धूपप्रदीपैरमृतोपमान्नैः।
अभ्यर्चये मंगलमष्टभेदं, भूम्यर्चनाया विधिनाधिनोमि।।

ॐ आं क्रों ह्रीं दर्भमथनाय नमः	**अर्घ्यं**
ॐ ह्रीं नीरजसे नमः	**जलं**
ॐ ह्रीं शीलगन्धाय नमः	**गन्धं**
ॐ ह्रीं अक्षताय नमः	**अक्षतम्**
ॐ ह्रीं विमलाय नमः	**पुष्पं**
ॐ ह्रीं परमसिद्धाय नमः	**नैवेद्यं**
ॐ ह्रीं ज्ञानोद्योताय नमः	**दीपं**
ॐ ह्रीं श्रुत धूपाय नमः	**धूपं**
ॐ ह्रीं अभीष्ट फलदाय नमः	**फलं**

(इति भूम्यर्चनम्)

पादपीठे कृते स्वर्ग-पादमौले जिनेशिनः।
शैलेन्द्र स्नान पीठस्य, पीठं प्रक्षालयाम्यहम्।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन पीठ-प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

श्रीवर्ण विदधेशुभ्रैः सदकेः शुचिभिः फलैः।
देव देवस्य पीठेऽस्मिन्, सर्वलक्षण संयुते।।

ॐ ह्रीं श्री जिनभद्रपीठे ''श्री'' कार लेखनं करोमि स्वाहा।
(मण्डप के पूर्वादि दशों दिशाओं में इन्द्रादि दिग्पालों को विधिपूर्वक आह्वान एवं सम्मानित कर क्रमशः पीत-रक्त-कृष्ण-श्याम-पीत-पीत-पीत-श्वेत-श्वेत-श्वेत वर्णिम ध्वजा आरोपित करें।)

ततो बहिश्चापि सुरेन्द्रमग्निं-यमं तथा नैर्ऋतिमम्बुधिं च।
मरुत्कुबेरो सशेखरं च, दिशाधिनाथान् क्रमतो यजामि।।

।। दिग्पाल पूजा विधानाय दिक्षु पुष्पाक्षतान् क्षिपेत्।।

अथ पूर्वस्यां दिशि शक्र पूजनमाह

भास्वन्तमैरावण वारणेन्द्र-मारूढमिन्द्राण्यधि राजमिन्द्रम्।
हस्तै-र्विराजक्षत कोटि शस्त्रं ? संपूजये प्राग्जिनराजयज्ञे।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण ...... हे इन्द्रदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं इन्द्राय इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

(पूर्व दिशा में पीत ध्वजा चढ़ायें)

अथाग्नेय्यामग्नि दिक्पालाह्वानाद्यह

देदीप्यमानानल कीलजाला, स्फुटं स्फुलिङ्गात्मक शक्तिहस्तं।
प्रशस्तवस्ता रुहमग्निदेवं, स्वाहा समेतं परिपूजयामि।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं रक्तवर्ण .... हे आग्नेय देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं आग्नेयाय इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

(आग्नेय दिशा में रक्तवर्ण ध्वजा चढ़ायें)

अथ दक्षिणस्यां दिशि यमजयनमाहह्वह्व

प्रचण्डचण्डान्वित बाहुदण्ड-मुद्दण्डकोद्दण्ड भटैः परीतम्।
छाया कटाक्ष द्युति भासमानं, लोलायवाहं यममर्चयामि।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कृष्णवर्ण ... हे यमदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं यमाय इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।
(दक्षिण दिशा में कृष्ण वर्ण की ध्वजा चढ़ायें)

अथ नैऋतकोणे नैऋत्य पूजनमाहह्वह्व

ऋक्षाक्षतं व्यञ्जित वृक्षदेहं, ऋक्षाधिरूढ़ं दृढ़मुद्गरास्त्रम्।
भास्वत्तिरीटोज्ज्वल रत्नकान्तिं, नैऋत्यधीशं निरुतं यजामि।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्यामवर्ण ... हे नैऋतदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं नैऋताय इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।
(नैऋत्य दिशा में श्याम वर्ण की ध्वजा चढ़ायें)

अथ पश्चिमायां दिशि वरुणार्चनमाहह्वह्व

भीमाहि पाशं मकराधिरूढ़ं, मुक्तामयाकल्प विराजमानं।
मनोरमस्त्रा परिवेष्टयमानं, जिनाध्वरेऽस्मिन् वरुणं समर्चे।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पीतवर्ण ... हे वरुणदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं वरुणाय इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।
(पश्चिम दिशा में कृष्ण वर्ण की ध्वजा चढ़ायें)

अथ वायव्यां दिशि पवनं प्रतिपद्यतेहह्वह्व

महामहीजायुध शोभिहस्तं, तुरंगमारूढ़मुदारशक्तिं।
विलाशभूषान्वित वायुवेगी, सहासमेतं पवनं यजामि।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पीतवर्ण ... हे पवनदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं पवनाय इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।
(वायव्य दिशा में पीत वर्ण की ध्वजा चढ़ायें)

अथोत्तरस्यां दिशि कुबेरार्चनमाहह्वह्व

अनेनरत्नोज्वल पुष्पकाख्यं, विमानमारूह्य विभासमानं।
धनादिदेवी सहितं वहन्तं, करेण शक्तिं धनदं यजामि।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पीतवर्ण ... हे कुबेर ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं कुबेराय इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।
(उत्तर दिशा में पीत वर्ण की ध्वजा चढ़ायें)

अथैशान्यामीशानार्चनमाहह्वह्व

जटाकिरीटं वृषभादिरूढ़ं, त्रिशूलहस्तं धवलोज्वलाङ्गम्।
ललाटनेत्रं गिरिराजपूत्री, समेतमीशानमिहार्चयामि।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं धवलवर्ण... हे ईशानदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं ईशानाय इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।
(ऐशान दिशा में श्वेत वर्ण की ध्वजा चढ़ायें)

अथाधरस्यां दिशि धरणेन्द्रार्चनमाहह्वह्व

स्वकीय वेगार्जित वायुवेग-मारूढ़मुत्तुङ्ग कठोरकूर्मम्।
पद्मावतीशं धरणेन्द्रमत्र, यजामि धात्रीं धरण प्रकीर्तिम्।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं धवलवर्ण ... हे धरणेन्द्र ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं धरणेन्द्राय इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।
(मण्डप के नीचे की ओर श्वेत ध्वजा चढ़ायें)

अथोर्ध्वायां दिशि सोम सन्मानमाहह्वह्व

विदारितास्यं विकरालमूर्ति, चलच्चटाटोपमुदारसौर्यम्।
सिंहं समारूढ़ मदभ्र कान्तिं, सोमं समर्चाम्यथ रोहणीशम्।।10।।

ॐ आं क्रों ह्रीं धवलवर्ण ... हे सोमदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं सोमाय इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।
(मण्डप के ऊपर की ओर श्वेत ध्वजा चढ़ाये)

सर्वाह्णयक्षार्चनम्

श्यामं जिनार्क्वमुकुटं द्विरदाधिरूढ़ं, हस्तद्वयेन रचिताञ्जलि मूढ़मानम्।
अन्येन मूर्द्धनि जिनाङ्कित धर्मचक्रं, सर्वाह्णयक्षमिह सादर माह्वयामि।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सर्वाह्णयक्ष ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं सर्वाह्णयक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।
(मण्डप के ऊपर षट्वर्णिम विशाल ध्वजा आरोपित करें)

मालाक्ष सूत्रारु कुठारधारण, प्रशस्त हस्तं शतमाल्य कोमलम्।
सुसप्तमङ्गीकृत विश्वरूपिणं, सुचन्द्रनाथस्य यजे त्रिलोचनम्।।

ॐ आं क्रों ह्रीं चन्द्रप्रभ जिनशासन विजय यक्ष ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं विजययक्षाय इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

लुलायरूढ़ां जिनचन्द्रनाथ, प्रभाविनीं ज्वालिनि काशितांगम्।
फलासि चक्रांकुश वाण पाश, धनुस्त्रिशूलाष्टभुजां यजामि।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्वेतवर्णे, अष्टभुजे फलासि चक्रांकुश वाणपाश चाप त्रिशूलहस्ते चन्द्रनाथस्य शासनदेवते ज्वालामालिनी देवि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं ज्वालामालिन्यै इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

यं पाण्डुकामल शिलागतमादिदेव- मस्नापयन्सुरवरा सुरशैलमूर्ध्नि।
कल्याणमीप्सुरहमक्षत तोयपुष्पैः, सम्भावयामि पुर एव तदीय बिम्बम्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं जगतां शान्तिं कुर्वन्तु श्रीवर्णे चन्द्रप्रभ जिनबिम्ब स्थापनं करोमि।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थाधिनाथ चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र इह पाण्डुकशिला पीठे तिष्ठ-तिष्ठेति स्वाहा।

जल गन्धाक्षतैः पुष्पैः, दीप धूप फलादिभिः।
अर्चयामि जिनं चन्द्रं, अनर्घ्यपदसिद्धये।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेतसूत्रवृतान पूर्ण-कुम्भान् सदक भूषितान्।
संस्थाप्य कोण कोठेषु, पुष्पाणि प्रक्षिपाम्यहम्।।

ॐ ह्रीं पाण्डुकशिला वेदिकान्ते दिक्कोणे चतुःकुम्भ स्थापनं करोमि स्वाहा।
मण्डापान्तः समंतात् भूषणादिवस्तुषु च पृथक् कुंकुमाक्त पुष्पाक्षतं क्षिपेत्।
(मण्डप के अन्दर भाग में भूषणादि सभी वस्तुओं पर पुष्पाक्षत क्षेपण करें)
निम्नमन्त्रेण मण्डपमिमं बहिः पंचवर्णेन सूत्रेण त्रीवारान्वेष्टयेत्।

ॐ अनादि परमब्रह्मणे नमो नमः। ॐ ह्रीं जिनाय नमो नमः। ॐ चतुर्मंगलाय नमो नमः। ॐ चतुर्लोकोत्तमाय नमो नमः। ॐ चतुःशरणाय नमो नमः अस्य....... नामधेय यजमानस्य..... नामधेय याजकस्य च सुरासुरनरनृपयक्षदेवतागण-गन्धर्वस्य कुलगोत्रनामदेशादि भागगृहाराम परिचारकस्य पुण्याहमन्त्रैः पुण्याहं वाचयेत् (करोमि) प्रीणंतां ते कुलं, प्रीणंतां ते आयुः, प्रीणंतां ते मातृपितृ सुहृद्बन्धुवर्गस्य प्रीणंतां। त्वं जीव, त्वं विजयस्व, ते मांगल्यं मांगल्यं भवतु। सपरिवारो वर्धस्व वर्धस्व, विजयस्व विजयस्व, भवतु भवतु, सर्वदा शिवं।

कुमुदादि द्वारपालानुकूलनं

रक्षार्थमस्य पूर्वादिद्वारदक्षिणभागके।
कुमुदं चांजनं यक्ष्ये वामनं पुष्पदन्तकं।।

ॐ ह्रीं तोरणोपान्तापसव्य देशेषु, कुंकुमाक्त पुष्पाक्षतं क्षिपेत्।

पूर्वस्यां दिशिह्वह्व

पुरुहूतदिशि स्थितिमेहि करोद्धतकाञ्चनदण्डगखण्डरुचे।
विधिना कुमुदेश्वर सव्यशये धृतपंकजशङ्कित कङ्कणके।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कुमुद प्रतिहार ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं कुमुदेश्वराय इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण।
(मण्डप के पूर्व दिशा की ओर स्थापना करें व अर्घ चढ़ायें)

निम्न मन्त्रों से वेदी के अग्रभाग में पञ्चवर्ण चूर्ण स्थापित करें।

ॐ ह्रीं नागराजाय अमित तेजसे स्वाहा। श्वेत चूर्ण

ॐ ह्रीं हेमप्रभाय धनदाय अमित तेजसे स्वाहा। पीत चूर्ण

ॐ ह्रीं हरित्प्रभाय मम शत्रु मथनाय स्वाहा। हरित चूर्ण

ॐ ह्रीं रक्तप्रभाय मम सर्वशंकराय वषट् स्वाहा। रक्त चूर्ण

ॐ ह्रीं कृष्णप्रभाय मम शत्रु विनाशनाय फट् घे घे स्वाहा। कृष्ण चूर्ण

माण्डले के मध्य कर्णिका पर मिश्रीपूरित गोले को स्थापित करें। अनन्तर वेदी पर पञ्चकुम्भ एवं दीपक स्थापित करें।

कलश स्थापन मन्त्र

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणे मतेऽस्मिन् ..... संवत्सरे..... मासे ..... पक्षे ..... तिथौ ..... वासरे ..... नगरे ..... विधानस्य निर्विघ्नसमाप्त्यर्थं मण्डप-भूमिशुद्ध्यर्थं, पात्रशुद्ध्यर्थं, शान्त्यर्थं, पुण्याहवाचनार्थं मंगल-कलश स्थापनं करोमि ह्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

दीपक स्थापन मन्त्र

रुचिर दीप्तिकरं शुभदीपकं, सकललोकसुखाकरमुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुंमलकं मुदा।।

ॐ अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

पूर्वादिदिक्षु वेद्या मंगल शान्तिक जयेष्ट सिद्ध्यर्थम्।
मंगलशस्त्र पताकाकलशानथ योजयेष्टशः क्रमशः।।

मंगलादि अष्टद्रव्य स्थापन प्रतिज्ञानाय दिक्षु पुष्पाक्षतं क्षिपेत्।

विधान वेदी के अग्रभागों में पूर्वादि आठों दिशाओं में क्रमशः मंगलाष्टक, आयुधाष्टक, पताकाष्टक एवं कलशाष्टक स्थापित करें।

दक्षिणस्यां दिशिह्वह्व

अञ्जनाशु यम दिग्विभागतः स्थानमेहि जिनयज्ञकर्मणि।
भक्तिभारकृत दुष्टनिग्रहः पूतशासन कृतामवन्ध्यकः।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं अञ्जन प्रतिहार ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं अञ्जन प्रतिहाराय इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण।
(मण्डप के दक्षिण दिशा में स्थापन करें व अर्घ चढ़ायें)

पश्चिमायां दिशिह्वह्व

पश्चिमासु विततासु हरित्सु भूरिभक्तिभरभूकृतपीठाः।
वामन स्वहित काम्ययाध्वरे तिष्ठ विघ्नविलयं प्रणिधेहि।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं वामन प्रतिहार ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं वामन प्रतिहाराय इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण।
(मण्डप के पश्चिम दिशा में स्थापन करें व अर्घ चढ़ायें)

उत्तरस्यां दिशिह्वह्व

पुष्पदन्त भवनासुरमध्ये सत्कृतोऽसि यत इत्थमवोचम्।
उत्तरक्ष मणिदण्डकराग्रस्तिष्ठ विघ्न विनिवृत्ति विधायी।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुष्पदन्त प्रतिहार ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं पुष्पदन्त प्रतिहाराय इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण।
(उत्तर दिशा में स्थापना व अर्घ चढ़ायें)

वेद्यां चन्द्रोपकादिषु कुंकुमाक्त पुष्पाक्षतं क्षिपेत्।

(वेदी में स्थित चन्दोवे आदि पर पुष्पाक्षत क्षेपण करें।)

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः। प्रोक्षण जलाभिमन्त्रणं।

(दर्भ की पूली से वेदी पर जल सिञ्चन करें।)

ॐ ह्रीं शील गन्धाय नमः। इति वेद्यां गन्धचर्चनम्।

(यहाँ पान के मध्य दीपक व अन्नादि पदार्थों से, लवण से एवं जलपूर्ण अष्ट कलशों से वेदी की अवतरण विधि करें।)

मंगलद्रव्याष्टक स्थापनं

छत्राब्द ध्वजचामर युगतोरण तालवृन्त नन्द्यावर्तम्।
दीपं च प्रवणमुखं न्यसामि मन्त्रार्पितं श्रियै स्वाहान्तम्।।

1. ॐ श्वेतछत्रश्रियै स्वाहा। 2. ॐ ध्वजश्रिये स्वाहा।
3. ॐ चामर श्रियै स्वाहा। 4. ॐ तोरणश्रियै स्वाहा।
5. ॐ तालवृन्त श्रियै स्वाहा। 6. ॐ नन्द्यावर्तश्रियै स्वाहा।
7. ॐ दीप श्रियै स्वाहा। 8. ॐ दर्पण श्रियै स्वाहा।

।। इति मंगलद्रव्याष्टक स्थापनं।।

अथ आयुधाष्टक स्थापनं

उत्तङ्गमत्तद्विरदेन्द्ररूढ़ा, रूढोग्रवज्रायुधमुद्वहन्ती।
ऐन्द्री वसत्विन्द्रदिशीहवेद्यां, हेमप्रभा विघ्न विघातनाय।।1।।

ॐ इन्द्राण्यै .....स्वाहा। (वज्र)

या वैष्णवी विष्णु रथाङ्गयाना जिष्णोर्जिनेशः सवने सुनीला।
प्रत्यर्थिचक्र प्रतिघातचक्रं, धृत्त्वेयमास्तां दिशि सा यमस्य।।2।।

ॐ वैष्णव्यै .....स्वाहा। (चक्र)

कौमारिका कोमल विद्रुमाभा, शिखण्डियाना धृतमण्डलाग्रा।
प्रचण्ड मूर्तिर्वसतात्प्रतीच्यां वेद्यां जिनेन्द्राध्वर विघ्नशान्त्यै।।3।।

ॐ कौमार्यै.....स्वाहा। (तलवार)

वाराहिका वन्य वराहयाना श्यामप्रभा भीकरसीरपाणिः।
अत्रोत्तरस्यां दिशि वेदिकाया-मास्तां समस्ताध्वर विघ्नशान्तयै।।4।।

ॐ वाराहिकायै .....स्वाहा। (सीर, अंकुश)

प्रद्मप्रभाङ्गा श्रितपद्मयाना विद्वेषिसंत्रासकमुद्गरास्त्रा।
ब्रह्माणिसंज्ञा जिनयज्ञवेद्यां हुताशनाशां समलंकरोतु।।5।।

ॐ ब्रह्माण्यै .....स्वाहा। (मूशल)

श्वेतच्छदाभोन्दुरुवाहनस्था, लक्ष्मीर्गदालक्षितशस्तहस्ता।
विघ्नोपनोदाय दिशीह वेद्याः, प्रवर्ततां दक्षिण पश्चिमायाम्।।6।।

ॐ लक्ष्म्यै .....स्वाहा। (गदा)

चामुण्डिका प्रेतगतासमध्य-मार्तण्डदीप्तिर्धृतदण्डशक्तिः।
प्रत्यूहशान्त्यैदिशि वेदिकायाः, प्रवर्ततामुत्तरपश्चिमायाः।।7।।

ॐ चामुण्ड्ये .....स्वाहा। (शक्ति)

उचण्डशाक्वरगते धृतभिण्डिमाले, रुद्राणि रुद्रामल चन्द्रकान्ते।
पूर्वोत्तरस्यां दिशि तिष्ठ वेद्यां, विद्यानिधे-रध्वर विघ्नशान्त्यै।।8।।

ॐ रुद्राण्यै.....स्वाहा। (भाला)

।। इत्यायुधाष्टक स्थापनं।।

अथ वेद्याः पूर्वादिदिक्षु पताकाष्टक स्थापनं

वेदी के पूर्वादि आठों दिशाओं में क्रमशः **पीत-पदम्-कृष्ण-हरित्-श्वेत-नील-श्याम** एवं **पञ्चवर्णिम** ध्वजा स्थापित करें।

पीत प्रभाह्वया देवी प्रीतवर्णमिदं ध्वजं।
धृत्त्वा जयाय श्रीवेद्यां, पूर्वस्यां दिशि तिष्ठतु।।1।।

ॐ प्रभावत्यै ..... स्वाहा। (पूर्व दिशा में पताका लगायें)

पद्माख्य देवी पद्माभा, पद्मवर्णमिदं ध्वजं।
धृत्त्वा जयाय श्रीवेद्यां, आग्नेयां दिशि तिष्ठतु।।2।।

ॐ पद्मायै ..... स्वाहा।

सा मेघ मालिनी कृष्णा, कृष्णवर्णमिदं ध्वजं।
धृत्त्वा जयाय श्रीवेद्यां, अपाच्यां दिशि तिष्ठतु।।3।।

ॐ मेघमालिन्यै ..... स्वाहा।

हरिन्मनोहरादेवी, हरिद्वर्णमिदं ध्वजं।
धृत्वा जयाय श्रीवेद्यां, नैऋत्यां दिशि तिष्ठतु ।।4 ।।

ॐ मनोहरायै ..... स्वाहा।

श्वेताभाचन्द्रमालेयं, श्वेतवर्णमिदं ध्वजं।
धृत्वा जयाय श्रीवेद्यां, प्रचीत्यां दिशि तिष्ठतु ।।5 ।।

ॐ चन्द्रमालायै ..... स्वाहा।

नीलाभा सुप्रभादेवी, नीलवर्णमिदं ध्वजम्।
धृत्वा जयाय श्रीवेद्यां, वायव्यां दिशि तिष्ठतु ।।6 ।।

ॐ सुप्रभायै ..... स्वाहा।

श्यामप्रभा जयादेवी, श्यामवर्णमिदं ध्वजं।
धृत्वा जयाय श्रीवेद्यां, उदीच्यां दिशि तिष्ठतु ।।7 ।।

ॐ जयायै ..... स्वाहा।

विजयापञ्चवर्णाभा पञ्चवर्णमिदं ध्वजं।
धृत्वा जयाय श्रीवेद्यां, ऐशान्यां दिशि तिष्ठतु ।।8 ।।

ॐ विजयायै ..... स्वाहा।

।। इति पताकाष्टक स्थापनं ।।

अथः वेद्याः पूर्वादिदिक्षु कलशाष्टक स्थापनम्

वेदी के आठों ही दिशाओं में तीर्थमिट्टी मिश्रित सुगन्धित जलपरि-पूर्ण आठ कलश स्थापित करें।

तीर्थाम्बुपूर्ण शरणोत्तममंगलार्थं, संकल्पनाष्टसमलंकृतशुभ्रकुम्भान्।
वेद्यष्टदिक्षु विनिवेश्य सपञ्चवर्ण- सूत्रेण तांस्त्रिगुणमेव वृणोमि सिद्ध्यै ।।

ॐ ..... इति कलशाष्टक स्थापनं।

(नोट - यज्ञकर्त्ता पञ्चामृत या जलाभिषेक अपनी सुविधानुसार करें।)

अभिषेक पाठ (भाषा)

रचयिता : प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

श्रीमत् जिनवर वन्दनीय हैं, तीन लोक में मंगलकार।
स्याद्वाद के नायक अनुपम, अनन्त चतुष्टय अतिशयकार।।
मूल संघ अनुसार विधि युत, श्री जिनेन्द्र की शुभ पूजन।
पुण्य प्रदायक सद्दृष्टि को, करने वाली कर्म शमन।।1 ।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री मत् मेरू के दर्भाक्षत, युक्त नीर से धो आसन।
मोक्ष लक्ष्मी के नायक जिन, का शुभ करके स्थापन।।
मैं हूँ इन्द्र प्रतिज्ञा का शुभ, धारण करके आभूषण।
यज्ञोपवीत मुद्रा कंकण अरु, माला मुकुट करूँ धारण।।2 ।।

ॐ ह्रीं नमो परमशान्ताय शांतिकराय पवित्रीकृतायाहं रत्नत्रय स्वरूपं यज्ञोपवीत धारयामि।

हे विबुधेश्वर ! वृन्दों द्वारा, वन्दनीय श्री जिन के बिम्ब।
चरण कमल का वन्दन करके, अभिषेकोत्सव कर प्रारम्भ।।
स्वयं सुगन्धी से आये ज्यों, भ्रमर समूहों का गुंजन।
गंध अनिन्द्य प्रवासित अनुपम, का मैं करता आरोपण।।3 ।।

ॐ ह्रीं परम पवित्राय नमः नवांगेषु चंदनानुलेपनं करोमि।

जो प्रभूत इस लोक में अनुपम, दर्प और बल युक्त सदैव।
बुद्धी शाली दिव्य कुलों में, जन्मे जो नागों के देव।।
मैं समक्ष उनके शुभ अनुपम, करने हेतु संरक्षण।
स्नपन भूमि का करता हूँ, अमृत जल से प्रक्षालन।।4 ।।

ॐ ह्रीं जलेन भूमि शुद्धिं करोमि स्वाहा।

इन्द्र क्षीर सागर के निर्मल, जल प्रवाह वाला शुभ नीर।
हरता है संसार ताप को, काल अनादि जो गम्भीर।।
जिनवर के शुभ पाद पीठ का, प्रक्छालन करता कई बार।
हुआ उपस्थित उसी पीठ को, प्रक्छालित मैं करूँ सम्हार।।5।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्र: नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठ-प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

श्री सम्पन्न शारदा के मुख, से निकले जो अतिशयकार।
विघ्नों का नाशक करता है, सदा सभी का मंगलकार।।
स्वयं आप शोभा से शोभित, वर्ण रहा पावन श्रीकार।
श्री जिनेन्द्र के भद्र पीठ पर, लिखता हूँ मैं अपरम्पार।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोमिं स्वाहा।

गिरि सुमेर के अग्रभाग में, पाण्डुक शिला का है स्थान।
श्री आदि जिन का पहले ही, इन्द्र किए अभिषेक महान्।।
कल्याणक का इच्छुक मैं भी, जिन प्रतिमा का स्थापन।
अक्षत जल पुष्पों से पूजा, भाव सहित करता अर्चन।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीवर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा।

(चौकी पर चारों दिशा में चार कलश स्थापित करें।)

उत्तमोत्तम पल्लव से अर्चित, कहे गये जो महति महान्।
स्वर्ण और चाँदी ताँबे अरू, रांगा निर्मित कलश महान्।।
चार कलश चारों कोणों पर, जल पूरित ज्यों चउ सागर।
ऐसा मान करूँ स्थापन, भक्ति से मैं अभ्यन्तर।।8।।

ॐ ह्रीं स्वस्त्ये चतु: कोणेषु चतु: कलश स्थापनं करोमि स्वाहा।

(जल से अभिषेक करें)

श्री जिनेन्द्र के चरण दूर से, नम्र हुए इन्द्रों के भाल।
मुकुट मणि में लगे रत्न की, किरणच्छवि से धूसर लाल।।

जो प्रस्वेद ताप मल से हैं, मुक्त पूर्ण श्री जिन भगवान।
भक्ति सहित प्रकृष्ट नीर से, मैं करता अभिषेक महान्।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ह्वीं ह्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

(चार कलश से अभिषेक करें)

इष्ट मनोरथ रहे सैकड़ों, उनकी शोभा धारे जीव।
पूर्ण सुवर्ण कलशा लेकर शुभ, लाए अनुपम श्रेष्ठ अतीव।।
भव समुद्र के पार हेतु हैं, सेतु रूप त्रिभुवन स्वामी।
करता हूँ अभिषेक भाव से, श्री जिनेन्द्र का शिवगामी।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं वृषभादि वर्धमानांतंचतुर्विंशति तीर्थंकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे .... देशे ... नाम नगरे एतद् ... जिनचैत्यालये वीर नि. सं. ... मासोत्तममासे ... मासे ... पक्षे ... तिथौ ... वासरे प्रशस्त ग्रहलग्न होरायां मुनिआर्यिका-श्रावक-श्राविकाणाम् सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषेकं करोमि स्वाहा। इति जलस्नपनम्।

(सुगंधित कलशाभिषेक करें)

जिनके शुभ आमोद के द्वारा, अन्तराल भी भली प्रकार।
चतुर्दिशा का परम सुवासित, हो जाता है शुभ मनहार।।
चार प्रकार कर्पूर बहुल शुभ, मिश्रित द्रव्य सुगन्धी वान।
तीन लोक में पावन जिन का, करता मैं अभिषेक महान्।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ह्वीं ह्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर पूर्णसुगंधितकलशाभिषेकेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

इत्याशीर्वाद:

उदक चंदन..... महंयजे।

ॐ ह्रीं क्लीं त्रिभुवनपते अभिषेकांते अर्घ्यं निर्वपामीति स्वहा।

शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री वीतरागाय नमः

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोएसव्वसाहूणं।

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलिपण्णतो धम्मो लोगत्तमा। चत्तारि शरणं पव्वज्जामि अरिहंते शरणं पव्वज्जामि सिद्धेशरणं पव्वज्जामि साहू शरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं शरणं पव्वज्जामि। ॐ ह्रीं अनादि मूल मंत्रेभ्यो नमः सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ नमोर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजो मूर्तये नमः श्री शान्तिनाथ शान्ति कराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व पर कृच्छ्रोपद्र विनाशनाय सर्व क्षामडामर विघ्न विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ ह्रूं क्षूं किरिटिं किरिटिं घातय घातय पर विघ्नान स्फोटय स्फोटय सहस्र खण्डान् कुरु कुरु पर मुद्रां छिन्द छिन्द पर मंत्रान् भिन्द भिन्द क्षाः क्षः वाः वः ह्रूं फट् सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत विद्यायै णमो अरिहन्ताणं ह्रौं सर्व विघ्न शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदातप विनाशाय ह्रीं शान्तिनाथाय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय अशोक तरु सत्प्रातिहार्य मंडिताय अशोकतरु सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सुर पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य मंडिताय सुर पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य मंडिताय दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय म्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय चामरोज्ज्वल सत्प्रातिहार्य मंडिताय चामरोज्ज्वल सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय र्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सिंहासन सत्प्रातिहार्य मंडिताय सिंहासन सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय घ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दुन्दुभि सत्प्रातिहार्य मंडिताय दुन्दुभि सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय झ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य मंडिताय छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय स्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय भामंडल सत्प्रातिहार्य मंडिताय भामंडल सत्प्रातिहार्य शोभन पद प्रदाय ख्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशान्ति कराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय प्रतिहार्याष्ट सहिताय बीजाष्ट मंडन मंडिताय सर्व विघ्न शान्तिकराय नमः सर्व शान्तिं कुरु कुरु।

तव भक्ति प्रसादालक्ष्मीपुर राज्यगेह पदभ्रष्टोपद्रव दारिद्रयोद्भवोपद्रव स्वचक्र परचक्रोद्भयोपद्रव प्रचंड पवनालन जलोद्भयोपद्रव शाकिनी डाकिनी भूत पिशाच कृतोपद्रव दुर्भिक्षव्यापार वृद्धिरहितोपद्रवाणां विनाशनं भवतु।

श्री शान्तिरस्तु शिवमस्तु जयोस्तु नित्यमारोग्यमस्तु सर्वेषां पुष्टिरस्तु तुष्टिरस्तु समृद्धिरस्तु कल्याणमस्तु सुखमस्तु अभिवृद्धिरस्तु कुलगोत्रधनधान्यं सदास्तु श्री सद्धर्मवलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धि रस्तु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो संपूर्ण कल्याण मंगल रूप मोक्ष पुरुषार्थश्च भवतु।

इत्याशीर्वादः

लघु शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते, श्री पार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगणपरिवेष्टिताय, शुक्लध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयंभुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनंत संसार चक्र परिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनंत ज्ञानाय, अनंत वीर्याय, अनंत सुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्य वशंकराय, सत्य ज्ञानाय, सत्य ब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणा मंडल मंडिताय, ऋष्यार्यिका श्रावक श्राविका प्रमुख चतुःसंघोपसर्ग विनाशनाय, घाति कर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय। **अपवायं अस्माकं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **मृत्युं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **अति कामं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **रति कामं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **क्रोधं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **अग्नि भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वशत्रु भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वोपसर्गं** छिंद छिंद भिंद भिदं। **सर्वविघ्नं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व राजभयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व चोर भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व दुष्ट भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व मृग भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व परमत्रं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वात्म चक्रभयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व शूल रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व क्षय रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व कुष्ठ रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व क्रूररोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व नरमारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गज मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वाश्व मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गो मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व महिष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व धान्य मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व वृक्ष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गुल्म मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वपत्र मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व पुष्प मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व फल मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व राष्ट्र मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व देश मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व विष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व बेताल शाकिनी भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व वेदनीयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व मोहनीयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व कर्माष्टकं** छिंद छिंद भिंद भिंद।

ॐ सुदर्शन महाराज मम चक्र विक्रम तेजो बल शौर्य वीर्य शांतिं

कुरु कुरु। **सर्व जनानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व भव्यानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व गोकुलानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मंटब पत्तन द्रोणमुख संवाहनंदनं** कुरु कुरु। **सर्व लोकानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व देशानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व यजमानानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व दुख हन हन दह दह पच पच कुट कुट शीघ्रं शीघ्रं।**

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि व्यसन वर्जितं।
अभयं क्षेम आरोग्यं स्वस्ति-रस्तु विधीयते।।

श्री शांति मस्तु। ... कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। चंद्रप्रभु वासुपूज्य-मल्लि-वर्धमान पुष्पदंत-शीतल मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नमः।

(इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गन्धोदक धारा वर्षणम्)

शांति मंत्रह्ह ॐ नमोर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजो मूर्तये नमः श्री शान्तिनाथ शान्ति कराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व पर कृच्छ्रद्रोपद्रव विनाशनाय सर्व क्षामडामर विघ्न विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्व देशस्य सर्व राष्ट्रस्य सर्व संघस्य तथैव सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।
शांतिः निरन्तर तपोभव भावितानां।।
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां।।

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः।।
अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु जल की धारा देते हैं।।

अर्घह्ह **उदक चन्दन..... जिन-नाथ-महं यजे।**

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

विनय पाठ

रचयिता : प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ।।

कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।
अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान्।।

दुःखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।
सुर-नर-किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान।।

अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।
निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज।।

समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश।।

निर्मल भावों से प्रभु, आए तुम्हारे पास।
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश।।

भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार।।

करके तव पद अर्चना, विघन रोग हों नाश।
जन-जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश।।

इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार।।

निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।
भक्त मानकर हे प्रभु ! करते स्वयं समान।।

अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव ।
जब तक मम जीवन मण्डल, ध्याऊँ तुम्हें सदैव ।।

परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल।
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल।।

जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ति धाम।
चौबीसों जिनराज को, करते विशद प्रणाम।।

(इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान।
हरें अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान।।1।।

मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध।।2।।

मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय।।3।।

मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म।।4।।

मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव।।5।।

इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।
समृद्धि सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार।।6।।

मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान।।7।।

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु
अरहन्तों को नमन् हमारा, सिद्धों को करते वन्दन।
आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्याय का है अर्चन।।
सर्वलोक के सर्व साधुओं, के चरणों शत्-शत् वन्दन।
पञ्च परम परमेष्ठी के पद, मेरा बारम्बार नमन्।।

ॐ ह्रीं अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल चार-चार हैं उत्तम, चार शरण हैं जगत् प्रसिद्ध।
इनको प्राप्त करें जो जग में, वह बन जाते प्राणी सिद्ध।।
श्री अरहंत जगत् में मंगल, सिद्ध प्रभु जग में मंगल।
सर्व साधु जग में मंगल हैं, जिनवर कथित धर्म मंगल।।
श्री अरहंत लोक में उत्तम, परम सिद्ध होते उत्तम।
सर्व साधु उत्तम हैं जग में, जिनवर कथित धर्म उत्तम।।
अरहंतों की शरण को पाऊँ, सिद्ध शरण में मैं जाऊँ।
सर्व साधु की शरण केवली, कथित धर्म शरणा पाऊँ।।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चाल टप्पा)

अपवित्र या हो पवित्र कोई, सुस्थित दुस्थित होवे।
पंच नमस्कार ध्याने वाला, सर्व पाप को खोवे।।
भाई बीज पुण्य का बोवे। ...
अपवित्र या हो पवित्र नर, सर्व अवस्था पावें।
बाह्याभ्यन्तर से शुचि हैं वह, परमातम को ध्यावें।।
भाई जीवन सफल बनावें। ...

अपराजित यह मंत्र कहा है, सब विघ्नों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी।।
भाई बनो पुण्य की राशी। ...
पञ्च नमस्कारक यह अनुपम, सब पापों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी।।
भाई बनो सदा विश्वासी। ...
परं ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, अर्हं अक्षर माया।
बीजाक्षर है सिद्ध संघ का, जिसको शीश झुकाया।।
भाई गुण गाके हर्षाया। ...
मोक्ष लक्ष्मी के मंदिर हैं, अष्ट कर्म के नाशी।
सम्यक्त्वादि गुण के धारी, सिद्ध नमूँ अविनाशी।।
भाई आतम ज्ञान प्रकाशी।। ...
विघ्न प्रलय हों और शाकिनी, भूत पिशाच भग जावें।
विष निर्विष हो जाते क्षण में, जिन स्तुति जो गावें।।
जिनेश्वर की शरण जो आवें।। ...

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्राणि तत्त्वार्थ सूत्र दशाध्याय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शम्भू छन्द)

तीन लोक के स्वामी विद्या, स्याद्वाद के नायक हैं।
अनन्त चतुष्टय श्री के धारी, अनेकान्त प्रगटायक हैं।।
मूल संघ में सम्यक् दृष्टि, पुरुषों के जो पुण्य निधान।
भाव सहित जिनवर की पूजा, विधि सहित करते गुणगान।।1।।
जिन पुंगव त्रैलोक्य गुरु के, लिए विशद होवे कल्याण।
स्वाभाविक महिमा में तिष्ठे, जिनवर का हो मंगलगान।।
केवल दर्शन ज्ञान प्रकाशी, श्री जिन होवें क्षेम निधान।
उज्ज्वल सुन्दर वैभवधारी, मंगलकारी हो भगवान।।2।।
विमल उछलते बोधामृत के, धारी जिन पावें कल्याण।
जिन स्वभाव परभाव प्रकाशक, मंगलकारी हों भगवान।।
तीनों लोकों के ज्ञाता जिन, पावें अतिशय क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ति द्रव्यों में, विस्तृत ज्ञानी हैं भगवान।।3।।

परम भाव शुद्धी पाने का, अभिलाषी होकर मैं नाथ।
देश काल जल चन्दनादि की, शुद्धि भी रखकर के साथ।।
जिन स्तवन जिन बिम्ब का दर्शन, ध्यानादि का आलम्बन।
पाकर पूज्य अरहन्तादि की, करता हूँ पूजन अर्चन।।4।।
हे अर्हन्त ! पुराण पुरुष हे !, हे पुरुषोत्तम यह पावन।
सर्व जलादि द्रव्यों का शुभ, पाया मैंने आलम्बन।।
अति दैदीप्यमान है निर्मल, केवल ज्ञान रूपी पावन।
अग्नि में एकाग्र चित्त हो, सर्व पुण्य का करूँ हवन।।5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(दोहा छन्द)

श्री ऋषभ मंगल करें, मंगल श्री अजितेश।
श्री संभव मंगल करें, अभिनंदन तीर्थेश।।
श्री सुमति मंगल करें, मंगल श्री पद्मेश।
श्री सुपार्श्व मंगल करें, चन्द्रप्रभु तीर्थेश।
श्री सुविधि मंगल करें, शीतल नाथ जिनेश।
श्री श्रेयांस मंगल करें, वासुपूज्य तीर्थेश।।
श्री विमल मंगल करें, मंगलानन्त जिनेश।
श्री धर्म मंगल करें, शांतिनाथ तीर्थेश।।
श्री कुन्थु मंगल करें, मंगल अरह जिनेश।
श्री मल्लि मंगल करें, मुनिसुव्रत तीर्थेश।।
श्री नमि मंगल करें, मंगल नेमि जिनेश।
श्री पार्श्व मंगल करें, महावीर तीर्थेश।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(छन्द तांटक)

महत् अचल अद्भुत अविनाशी, केवल ज्ञानी संत महान्।
शुभ दैदीप्यमान मनः पर्यय, दिव्य अवधि ज्ञानी गुणवान।।
दिव्य अवधि शुभ ज्ञान के बल से, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।1।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पाञ्जलिं क्षिपेण करना चाहिये।)

जो कोष्ठस्थ श्रेष्ठ धान्योपम, एक बीज सम्भिन्न महान्।
शुभ संश्रोतृ पादानुसारिणी, चउ विधि बुद्धि ऋद्धीवान।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महा ऋद्धी धारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।2।।
श्रेष्ठ दिव्य मतिज्ञान के बल से, दूर से ही हो स्पर्शन।
श्रवण और आस्वादन अनुपम, गंध ग्रहण हो अवलोकन।।
पंचेन्द्रिय के विषय ग्राही, श्रेष्ठ महा ऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।3।।
प्रज्ञा श्रमण प्रत्येक बुद्ध शुभ, अभिन्न दशम पूरवधारी।
चौदह पूर्व प्रवाद ऋद्धि शुभ, अष्टांग निमित्त ऋद्धीधारी।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महा ऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।4।।
जंघा अग्नि शिखा श्रेणि फल, जल तन्तु हों पुष्प महान।
बीज और अंकुर पर चलते, गगन गमन करते गुणवान।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।5।।

अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, ऋद्धीधारी कुशल महान्।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारण करते जो गुणवान।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।6।।
जो ईशत्व वशित्व प्राकम्पी, कामरूपिणी अन्तर्धान।
अप्रतिघाती और आप्ती, ऋद्धी पाते हैं गुणवान।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।7।।
दीप्त तप्त अरू महा उग्र तप, घोर पराक्रम ऋद्धी घोर।
अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धिधारी, करते मन को भाव विभोर।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।8।।
आमर्ष अरू सर्वौषधि ऋद्धि, आशीर्विष दृष्टि विषवान।
क्ष्वेलौषधि जल्लौषधि ऋद्धि, विडौषधि मल्लौषधि जान।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।9।।
क्षीर और घृतस्रावी ऋद्धी, मधु अमृतस्रावी गुणवान।
अक्षीण संवास अक्षीण महानस, ऋद्धीधारी श्रेष्ठ महान्।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।10।।

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्।। इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।)

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन् ! ।
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् !, हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन् !।
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु ! अन्तरतम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल, होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।
शांतये शांति धारा करोति।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।
दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्यह्रह्र **ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नम:।**

जयमाला

दोहा- **मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।**
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

दोहा- **नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।**
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्-शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- **भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।**
पावें मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

समुच्चय महामृत्युञ्जय पूजा

स्थापना

अर्हत् सिद्ध महर्षि पावन, सहस्राष्ट जिनवर के नाम।
नवदेवों की करें अर्चना, सुर नर विद्याधर अभिराम।।
तिथि देव नवग्रह के स्वामी, द्वारपाल दिग्पाल प्रधान।
मृत्युञ्जय को प्राप्त श्री जिन, का करते अतिशय गुणगान।
सुरभित पुष्पों से करते हम, महामृत्युञ्जय का आह्वान।
सुख शांति आनन्द विशद हो, करते हम विधि से गुणगान।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(आल्हा छन्द)

क्षीरोदधि सम निर्मल जल से, धारा देते हैं हम तीन।
जन्म जरा मृत्यु रोगों को, करने आए हैं हम क्षीण।।
महामृत्युञ्जय की पूजा से, शांति मिलती है शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।1।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केसर चन्दन से घिसकर के, गंध बनाई अपरम्पार।
भव आताप नशाने का हम, उद्यम करते बारम्बार।।
महामृत्युञ्जय की पूजा से, शांति मिलती है शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।2।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगन्धित अक्षय अक्षत, धवल चढ़ाते हैं मनहार।
अक्षय पद पाने हम आए, सर्व जहाँ में विस्मयकार।।

महामृत्युञ्जय की पूजा से, शांति मिलती है शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।3।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केतकी आदि सुरभित, पुष्प चढ़ाते खुशबूदार।
कामबाण हो नाश हमारा, हो जाएँ हम भी अविकार।।
महामृत्युञ्जय की पूजा से, शांति मिलती है शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।4।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ ताजे नैवेद्य बनाकर, चढ़ा रहे हैं हम रसदार।
क्षुधा रोग हो नाश हमारा, पा जाएँ हम भव से पार।।
महामृत्युञ्जय की पूजा से, शांति मिलती है शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।5।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीप जलाकर लाए, यहाँ चढ़ाने को शुभकार।
मोह-तिमिर हो नाश हमारा, बन जाएँ हम भी अनगार।।
महामृत्युञ्जय की पूजा से, शांति मिलती है शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।6।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित धूप दशांगी में शुभ, खुशबू का न पारावार।
अग्नि में हम जला रहे हैं, कर्म नाश पाने शिव द्वार।।
महामृत्युञ्जय की पूजा से, शांति मिलती है शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।7।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सरस फल यहाँ चढ़ाते, सेव संतरा आम अनार।
भव सिन्धु से मुक्ति पाएँ, मिले मोक्ष फल का उपहार।।
महामृत्युञ्जय की पूजा से, शांति मिलती है शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।8।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत आदि से, अर्घ्य बनाया विविध प्रकार।
पद अनर्घ्य हो प्राप्त हमें अब, हो जाए आतम उद्धार।।
महामृत्युञ्जय की पूजा से, शांति मिलती है शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।9।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- परम सुगन्धित नीर से, करते शांति धार।
सुख-शांति आनन्द हो, शांति मिले अपार।। *शान्त्ये शांतिधारा*

दोहा- पुष्पाञ्जलि करते विशद, लेकर पुष्प महान।
नव गुण पाने के लिए, करते हम गुणगान।। *पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्*

जयमाला

दोहा- जिन अर्चा से भक्त जन, होते मालामाल।
महामृत्युञ्जय की यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(शम्भू-छंद)

अर्हन्तों की पूजा करते, भाव सहित गुण गाते हैं।
उनके अनुपम गुण पाने की, सतत भावना भाते हैं।।
सिद्ध अनन्तानन्त हुए हैं, सिद्धशिला पर जिनका वास।
हम भी सिद्धों को ध्याते हैं, करने आठों कर्म विनाश।।
गणधर आदि महाऋषि कई, उत्तम तप के धारी हैं।
श्रेष्ठ ऋद्धियों को पाकर भी, विशद कहें अविकारी हैं।।

कर्म निर्जरा करने हेतु, आतम ध्यान लगाते हैं।
विशद ज्ञान को पाने वाले, मृत्युञ्जय हो जाते हैं।।
सहस्राष्ट गुण के धारी जिन, सहस्रनाम को पाते हैं।
नाम मंत्र को जपने वाले, स्वयं सिद्ध बन जाते हैं।।
चन्द्रप्रभु की पूजा करके, नव देवों को ध्याते हैं।
नव कोटि से अर्चा कर नव, क्षायिक लब्धियाँ पा जाते हैं।।
वर्तमान चौबीसी के हम, तीर्थंकर के गुण गाएँ।
पूजा करने यक्ष-यक्षिणी, मेरे साथ यहाँ आएँ।।
पन्द्रह तिथि देवताओं का भी, हम करते हैं आह्वान।
यज्ञ भाग पाओ आकर के, करो प्रभु का आराधन।।
नवग्रह शांति निवारक जिन की, करते भाव सहित अर्चन।
तीन काल में कोई भी ग्रह, आके करें न कोई विघन।।
बीज वर्ण अ ध ठ ह क्ष स, स्वर सकल और ॐकार।
क्षी ल व र फ बीजाक्षर, कला युक्त हैं अपरम्पार।
दशों दिशाओं से आकर के, दश दिग्पाल करें अर्चन।।
द्वारपाल द्वारे पर रहकर, हरते हैं जो सभी विघन।
महामृत्युञ्जय पूजा होती, तीन लोक में पूज्य त्रिकाल।
सुर नर किन्नर विद्याधर भी, गाते हैं प्रभु की जयमाल।।

(घत्ता छन्द)

जय-जय त्रिपुरारी, आनन्दकारी, तीन लोक मंगलकारी।
मृत्युञ्जय धारी, जिन अविकारी, पूज्य विशद हैं शिवकारी।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हं ! जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- मृत्युञ्जय को पूजकर, करें भाव से जाप।
लक्ष्मीपति बनके विशद, पूर्ण नशाएँ पाप।।

इत्याशीर्वादः

महामृत्युञ्जय पूजन

महामण्डलाराधना

स्नानादि सिद्ध स्तवन, करके विधि सहित पूजन।
स्वर्ग मोक्ष का अंग यंत्र श्री, पूजोत्सव कर करो नमन्।।

प्रस्तावना पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री जिनेन्द्र अर्हंत सिद्ध श्री, और महर्षि का अर्चन।
मनः प्रसत्ति सूचनार्थ शुभ, पुष्पाञ्जलि करते क्षेपण।।

मनःप्रसत्तिः सूचनार्थ अर्चनापीठाग्रतः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अर्हंत् पूजन

स्थापना

भवनादिक के देव इन्द्र सब, आकर ग्रहण करो आसन।
त्रिजगपति तिष्ठें पीठाग्रे, रत्नमयी है सिंहासन।।
हृदय कमल पर स्थापित कर, योगीश्वर जिनको ध्याते।
उनको अर्चन हेतु हम भी, अपने उर में तिष्ठाते।
बनकर भक्त सभी जन प्रभु की, अपने सारे विघ्न हरें।
ऋद्धि सिद्धि सुख शांति पाने, अर्चा अतिशयकार करें।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अर्हं अ सि आ उ सा अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अर्हं अ सि आ उ सा अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अर्हं अ सि आ उ सा अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टकं

प्रासुक निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्म-जरादि रोग नशाएँ।
अर्हन्तों को पूज रचाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ।।1।।

ॐ ह्रां परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगन्धित चन्दन लाए, घिसकर यहाँ चढ़ाने आए।
अर्हन्तों को पूज रचाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ।।2।।

ॐ ह्रां परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत चढ़ा रहे शुभकारी, अक्षय पद पाने मनहारी।
अर्हन्तों को पूज रचाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ।।3।।

ॐ ह्रां परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प चढ़ाने को हम लाए, काम रोग मेरा नश जाए।
अर्हन्तों को पूज रचाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ।।4।।

ॐ ह्रां परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे यह नैवेद्य बनाए, क्षुधा नशाने को हम आए।
अर्हन्तों को पूज रचाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ।।5।।

ॐ ह्रां परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप जलाया प्यारा प्यारा, मोह नाश हो जाय हमारा।
अर्हन्तों को पूज रचाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ।।6।।

ॐ ह्रां परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में शुभ धूप जलाएँ, अपने आठों कर्म नशाएँ।
अर्हन्तों को पूज रचाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ।।7।।

ॐ ह्रां परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल यह सरस मँगाए, मोक्ष महाफल पाने आए।
अर्हन्तों को पूज रचाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ।।8।।

ॐ ह्रां परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य बनाया मंगलकारी, पद अनर्घ पाएँ शुभकारी।
अर्हन्तों को पूज रचाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ।।9।।

ॐ ह्रां परमब्रह्मणे अनन्तानन्त ज्ञानशक्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल द्रव्य रही शुभकारी, अर्चा हम करते मनहारी।
अर्हन्तों को पूज रचाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ।।

शान्त्ये शांतिधारा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथः स्तुति

दश गुण अर्जित दिव्य गात्र शुभ, तव चरणों में करूँ नमन्।
कोटि-प्रभाकर श्रेष्ठ निशाकर, जैत्र तेज तव पद अर्चन।।
दुर्जय घातिकर्म के जेता, चिर कालिक तव चरण नमन्।
घातोपजात सार दश गुणमय, शोभित तव करते वर्णन।।1।।

सुर निकाय से अर्चित जिनवर, करते हैं प्रभु गगन गमन।
दिव्य चतुर्दश अतिशयधारी, तव चरणों में करूँ नमन्।।
त्रिभुवन अधिपति सूचक अनुपम, प्रातिहार्य वसु हैं लक्षण।
अरिनाशक अर्हंत प्रभु तव, चरणों में शत्-शत् वंदन।।2।।

श्रेष्ठ परम केवल लब्धि के, धारी हैं तव चरण नमन्।
सम समस्त पद आलोकित जिन, तव पद में शत्-शत् वंदन।।
हे निरंत ! बल निरुपमान हे ! नित्य सौख्यकारी अर्हन्।
नित्य निरंजन चरण आपके, विशद भाव से विशद नमन्।।3।।

मुख्य सकल वस्तु मंगलमय, धारी तव पद में वंदन।
पाप हारि शिव सुखप्रद स्वामी, तव चरणों में करूँ नमन्।।
लोकपूज्य उत्तम त्रय जग में, करते तव पद में अर्चन।
शरण भूत तुम तीन लोक में, रक्षक तव पद करूँ नमन्।।4।।

पूर्व लब्ध केवल लब्धि नव, तव चरणों में विशद नमन्।
परमैश्वर्योपलब्धि धारी, तव पद में शत्-शत् वंदन।।
यूथ नाथ मुनि कुञ्जर हो तुम, तव पद करते हम अर्चन।
तीन लोक के एक नाथ तव, पद में हो सविनय वंदन।।5।।

(इति जिनार्चाभिमुखं स्तुतिं पठेत्) (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथातः सिद्धार्चन विधानं

स्थापना

तिष्ठे अष्टम भूमि शिखर पर, सौख्य संपदानंद महान्।
सिद्धि मुक्ति वनिता की भाँति, सिद्ध प्रभु सम आये समान।।
लोकालोक समान निरंतर, करने वाले हैं कल्याण।
परम विशुद्ध सिद्ध जिन का हम, करते हैं उर में आह्वान्।।
हृदय कमल पर तिष्ठा करके, अपने उर में ध्याते हैं।
सिद्धी दो हे नाथ ! हमें हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टकं

प्रासुक निर्मल नीर चढ़ाएँगे, जन्म-जरादि रोग नशाएँगे।
सिद्धों की हम स्तुति गाएँगे, सिद्धश्री को हम भी पाएँगे।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धाधिपतये जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केसर संघ घिसा लाए, भव संताप मेरा भी नश जाए।
सिद्धों की हम स्तुति गाएँगे, सिद्धश्री को हम भी पाएँगे।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धाधिपतये चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत बासमती के लाए हैं, अक्षय पद हम पाने आए हैं।
सिद्धों की हम स्तुति गाएँगे, सिद्धश्री को हम भी पाएँगे।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धाधिपतये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भाँति-भाँति के पुष्प मँगाए हैं, रति दोष को हरने आए हैं।
सिद्धों की हम स्तुति गाएँगे, सिद्धश्री को हम भी पाएँगे।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धाधिपतये पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के व्यंजन सरस बनाए हैं, क्षुधानाश के भाव जगाए हैं।
सिद्धों की हम स्तुति गाएँगे, सिद्धश्री को हम भी पाएँगे।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धाधिपतये नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग-जगमग दीप जलाए हैं, मोह नशाने को हम आए हैं।
सिद्धों की हम स्तुति गाएँगे, सिद्धश्री को हम भी पाएँगे।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धाधिपतये दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में हम धूप जलाएँगे, अपने आठों कर्म नशाएँगे।
सिद्धों की हम स्तुति गाएँगे, सिद्धश्री को हम भी पाएँगे।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धाधिपतये धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल यह महिमाकारी हैं, मुक्ति की अब मेरी बारी है।
सिद्धों की हम स्तुति गाएँगे, सिद्धश्री को हम भी पाएँगे।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धाधिपतये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाए हैं, पद अनर्घ्य पाने हम आए हैं।
सिद्धों की हम स्तुति गाएँगे, सिद्धश्री को हम भी पाएँगे।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धाधिपतये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम जलादि यज्ञांग ले आये हैं, मंगल द्रव्य चढ़ाने लाए हैं।
सिद्धों की हम स्तुति गाएँगे, सिद्धश्री को हम भी पाएँगे।।

शान्त्ये शांतिधारा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ सिद्ध स्तुति

सोरठा

अचल अधिष्ठित श्रेष्ठ, पुरुषार्थी तव पद नमन।
सिद्ध भट्टारक ज्येष्ठ, निष्ठितार्थ हे निरंजन !।।1।।

स्व प्रदाय तव पाद, अचल आपके पद नमन्।
अक्षय अव्याबाध, तुमको वंदन हम करें।।2।।

हे अनंत विज्ञान !, दृष्टि वीर्य सुख प्रद नमो।
करें आपका ध्यान, नीरज निर्मल तव चरण सदा।।3।।

नमूँ तुम्हें अच्छेद्य, अप्रमेय अक्षय तुम्हीं।
ध्यायूँ प्रभो अभेद्य, मन-वच-तन से आपको।।4।।

गौरव लाघववान, अगर्भ वास तव पद नमन्।
हे अक्षोभ्य ! गुणवान, अविलीन तुमको नमूँ।।5।।

नमूँ परम काष्ठात्म, योगरूप धारी परम।
अनंत गुणाश्रय आत्म, लोकाग्रवासी पद नमन्।।6।।

सिद्ध अधिष्ठित निष्ठ, हे अशेष ! पुरुषार्थी।
भूरि-भूरि विशिष्ट, सिद्ध भट्टारक पद नमन्।।7।।

(शम्भू छन्द)

सब तत्त्वार्थ बोध के धारी, विविध दुरित हे शुद्धीवान।
युक्ति शास्त्र अविरुद्ध आप हो, हे समृद्ध परम सुखवान।।
बहुविध गुण वृद्धिधारी हे, सर्वलोक में आप प्रसिद्ध।
विशद भाव से स्तुति करता, प्रमित सुनय जो हुए हैं सिद्ध।।

(इति सिद्ध भक्ति विधानम्) (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ महर्षि पर्युपासन विधिः

स्थापना

जो-जो हैं अनगार ऋषिगण, श्रेष्ठ मुनीश्वर यती महान्।
जिन मुद्रा को धारण करते, निजानंद करते रसपान।।
शील और गुण की सिद्धि के, हेतु हम करते अर्चन।
उनके पद पंकज का करते, विशद हृदय में आह्वानन्।
ऋद्धि सिद्धियाँ तुमने पाईं, महिमाशाली सर्व प्रधान।
आप समान सिद्धि दो हमको, करते हम भी तव गुणगान।।

ॐ सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र पवित्रतरगात्र चतुरशीतिलक्षणगुणगणधरचरणाः ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।

ॐ सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र पवित्रतरगात्र चतुरशीतिलक्षणगुणगणधरचरणाः !अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र पवित्रतरगात्र चतुरशीतिलक्षणगुणगणधरचरणाः !अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अथाष्टकं -चाल छन्द)

जल प्रासुक भर के लाए, भव रोग नशाने आए।
मुनिवर ऋद्धि के धारी, हैं जग में मंगलकारी।।1।।

ॐ गणधर चरणेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन है खुशबू वाला, भव ताप नशाने वाला।
मुनिवर ऋद्धि के धारी, हैं जग में मंगलकारी।।2।।

ॐ गणधर चरणेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत हम लाए, अक्षय पद पाने आए।
मुनिवर ऋद्धि के धारी, हैं जग में मंगलकारी।।3।।

ॐ गणधर चरणेभ्यः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम पुष्प चढ़ाने लाए, मम काम नाश हो जाए।
मुनिवर ऋद्धि के धारी, हैं जग में मंगलकारी।।4।।

ॐ गणधर चरणेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सरस मनहारी, है क्षुधा विनाशन कारी।
मुनिवर ऋद्धि के धारी, हैं जग में मंगलकारी।।5।।

ॐ गणधर चरणेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग यह दीप जलाए, मोहान्ध नशाने आए।
मुनिवर ऋद्धि के धारी, हैं जग में मंगलकारी।।6।।

ॐ गणधर चरणेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में गंध जलाएँ, आठों हम कर्म नशाएँ।
मुनिवर ऋद्धि के धारी, हैं जग में मंगलकारी।।7।।

ॐ गणधर चरणेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम श्रीफल सरस चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
मुनिवर ऋद्धि के धारी, हैं जग में मंगलकारी।।8।।

ॐ गणधर चरणेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम आठों द्रव्य मिलाएँ, अब पद अनर्घ प्रगटाएँ।
मुनिवर ऋद्धि के धारी, हैं जग में मंगलकारी।।9।।

ॐ गणधर चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ स्तुति

सब तीर्थों में होने वाले, सप्त ऋषि पाए चउ ज्ञान।
जगत् हितैषी के पद वंदन, तीन योग से करूँ महान्।।

औषधि रसबल बुद्धि विक्रिया, तप अक्षीण सप्त ये नाम।
अखिल ऋषि ऋद्धिधारी पद, नित्य स्मरण सहित प्रणाम।।

सब तीर्थों के अंतराल में, सप्त ऋषि यह महति महान्।
भव सागर से पार हेतु तव, हो प्रसन्न दो करुणा दान।।

केवलज्ञानी श्रुतकेवली, प्राप्त अवधि मनःपर्यय ज्ञान।
शिक्षक वादी श्रेष्ठ विक्रिया, धारी सप्त ऋषि गुणगान।।

मुख्य प्रमत्तादि पदधारी, ढाई द्वीप में महिमावान्।
ऊन तीन नव कोटि मुनि के, पद में वंदन विशद महान्।।

(इति महर्षि पर्युपासन विधिः) (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथातः स्वस्त्ययन विधान

(शम्भू छंद)

अर्हत् पञ्च कल्याणकधारी, श्रीयुत तीर्थंकर भगवान।
शेष केवली सर्व लोक के, अतिशयकारी रहे महान्।।
वागातम हे भाग्य विधाता !, अर्चनीय हैं जिन अविकार।
विघ्नों को उपशांत करो प्रभु, आप लोक में मंगलकार।।1।।
मूल और उत्तर गुणधारी, संज्ञा तुम पाये अनगार।
है निरवद्य चर्या निर्ग्रंथ मुनि, शुद्ध ध्यान के हो आधार।।
भवि जीवों के भाग्य विधाता, अर्चनीय हैं जिन अविकार।
विघ्नों को उपशांत करो प्रभु, आप लोक में मंगलकार।।2।।
अणिमादि शुभ अष्ट ऋद्धियाँ, अरु अक्षीण विक्रियावान।
राजऋषि सुर नर से पूजित, अतिशयकारी महिमावान।।3।।
अणिमादि शुभ अष्ट ऋद्धियाँ, अरु अक्षीण विक्रियावान।
राजऋषि सुर नर से पूजित, अतिशयकारी महिमावान।।4।।
कोष्ठ बुद्धयादि चउ विधि शुभ, आमर्षौषधि ऋद्धीवान।
ब्रह्म ऋषीश्वर नित्य अहर्निश, आत्म ब्रह्म का करते ध्यान।।5।।
जल आदि नाना विधि चारण, अंबर चारण ऋद्धीधार।
देव ऋषि नव देव वृंद शुभ, अतिशय पाते मंगलकार।।6।।
क्रोधानंत परम ज्योति युत, लोकालोक प्रकाशी नाथ।
ऋषियों से जो वंदनीय हैं, परम ऋषि कहलाए साथ।।7।।
श्रेणी द्वय आरोहण करते, सावधान होकर अविकार।
वे सब महामुनि वंदित हैं, कर्मोपशांत करें क्षयकार।।8।।
जो समग्र या एक देश में, हैं प्रत्यक्ष अत्यक्ष महान्।
सुख में जो अनुरक्त मुनीश्वर, जगत् मान्य हैं महिमावान।।9।।

उग्र दीप्त तप महातपोतप, घोर महाघोराति घोर।
उक्त साधना करने वाले, निवृत्त होते भाव विभोर।।10।।
श्रेष्ठ वचन बल काय मनोबल, अष्टांग निमित्तक महति महान्।
क्षीरामृतस्रावी भवि निवृत्त, ऋद्धिधारी अति गुणवान।।11।।
प्रमुख रहे प्रत्येक बुद्ध मुनि, शेष विविध ऋद्धि संयुक्त।
सर्व मोक्ष के राही अनुपम, सभी विकारों से उन्मुक्त।।12।।
शाप अनुग्रह शक्ति आदि की, रुचि से हैं जो रहित मुनीश।
जिन गुणस्तवन में रत रहते, ज्ञानी ध्यानी परम ऋशीष।।

(इति स्वस्त्ययनं मनः प्रसादन विधानम्) (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

सहस्त्रनाम विधान पूजन

स्थापना

हे तीर्थ प्रवर्तक तीर्थंकर !, हे सहस्र आठ गुण के धारी।
हे विश्व पूज्य ! हे समदृष्टा !, सर्वज्ञ देव मंगलकारी।।
हे ज्ञानसूर्य ! हे तेज पुञ्ज !, आनन्द कन्द हे त्रिपुरारी ! ।
हे धर्मसुधाकर चिदानन्द !, करुणा निधान हे दुःखहारी !।।
आह्वानन करके आज तुम्हें, उर में अपने बैठाते हैं।
शुभ सहस्रनाम के द्वारा हम, प्रभु गीत आपके गाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूह ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

शुभ जल के कलशा प्रासुक कर, हम पूजन करने आये हैं।
त्रय रोग नशाने हे भगवन !, त्रयधार कराने लाये हैं।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में घूम रहे हैं हम, पर साता कहीं न पाई है।
यह सुरभित गंध सुगन्धित ले, शुभ पद में आन चढ़ाई है।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

निज निधि को भूल रहे हैं हम, अक्षय पद हमने न पाया।
यह अक्षय लाये आज चरण, उस पद को मम मन ललचाया।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

घातक है जग में प्रबल काम, सबके मन में विकृति लाए।
हो कामवासना पूर्ण नाश, यह पुष्प मनोहर हम लाए।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम कर्म असाता के कारण, सदियों से जग में भटकाए।
अब क्षुधा वेदना नाश हेतु, नैवेद्य चरण में हम लाए।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम ज्ञान बिना इस भव वन में, दर-दर की ठोकर खाए हैं।
अब मोह अंध के नाश हेतु, यह दीप जलाकर लाए हैं।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुकर्म आत्मा को मलीन, सदियों से करते आए हैं।
निज वैभव पाने हेतु अमल, दश गन्ध जलाने लाए हैं।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

इस जग के सारे फल खाए, पर शिवफल प्राप्त न कर पाए।
अब मोक्ष महाफल पाने को, हम श्रीफल चरणों में लाए।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों के कारण से, मम अष्ट सुगुण न प्रकट हुए।
अब पद अनर्घ्य हो प्राप्त हमें, हम पद में आये अर्घ्य लिए।।
ये सहस्रनाम पावन जग में, जग जीवों का हितकारी है।
हम सहस्रनाम को प्राप्त करें, यह इच्छा विशद हमारी है।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक लेकर नीर से देते शांतिधार।
पुष्पाञ्जलि करते परम, पाने शिव उपहार।। *शान्त्ये शांतिधारा...*

श्रेष्ठ सुगन्धित पुष्प यह, लेकर दोनों हाथ।
पुष्पाञ्जलि करते परम, पाने शिवपद नाथ।।*पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्*

(नोट- जिन्हें सहस्रनाम के अर्घ्य देना इष्ट हो वह सहस्रनाम विधान से दें अथवा पेज नं. 132 से दे। जो आहूति देना चाहते हैं वह धूपादि से आहुति दे सकते हैं।)

प्रथम वलयः

दोहा- सहस्रनाम के हम यहाँ, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, पाने सुपद अनर्घ्य।।

(इति मण्डलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

प्रथम नाम श्रीमान् से लेकर, त्रिजगत् परमेश्वर शत् नाम।
सुर-नर इन्द्रों से जो पूजित, तिनको हम भी करें प्रणाम।।
नाम मंत्र का जाप निरन्तर, करके हम सिद्धी पाएँ।
तुम सम सिद्ध सुखों को पाकर, निज गुण में ही रम जाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं **श्रीमदादिशतनामावलिभ्यः** अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य भाषापति आदि करके, विश्व विद्यामहेश्वर अन्त।
नाममंत्र शत् के धारी जिन, होते तीर्थंकर भगवन्त।।
अतिशय श्रद्धा भक्ति द्वारा, नाम मंत्र का जाप करें।
कर्म महातम का छाया जो, सारा वह संताप हरें।।2।।

ॐ ह्रीं **दिव्यभाषापत्यादिशतनामेभ्यः** अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्थविष्ठ' को आदि करके, अन्त पुराण पुरुषोत्तम नाम।
सौ नामों का जाप स्तवन, पूजा कर पाया विश्राम।।
नाम मंत्र की महिमा प्रभु के, सारे जग में अपरम्पार।
भाव सहित हम अर्घ्य चढ़ाते, वन्दन करते बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं **स्थविष्ठादिशतनामेभ्यः** नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाशोक ध्वज आदि नाम हैं, भुवनेकपितामह अन्तिम नाम।
सुर-नर इन्द्रों से पूजित जिन, प्रभु के चरणों विशद प्रणाम।।
एक-एक शुभ नाम मंत्र यह, सर्व जहाँ में मंगलकार।
अर्घ्यं चढ़ाकर पूजा करते, इन्द्र बोलते जय-जयकार।।4 ।।

ॐ ह्रीं **महाशोकध्वजादिशतनामेभ्यः** अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वृक्ष लक्षणादि प्रभु के, नाम कहे हैं मंगलकार।
भाव सहित प्रभु नाप जाप कर, प्राणी होते भव से पार।।
विशद योग से तीर्थंकर के, ध्याते हैं हम भी यह नाम।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते बारम्बार प्रणाम।।5 ।।

ॐ ह्रीं **श्रीवृक्षलक्षणादिशतनामेभ्यः** अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामुनि शुभ नाम आदि कर, रहा अरिञ्जय अन्तिम नाम।
भाव सहित यह नाम जाप कर, प्राणी पावें मुक्ति धाम।।
नाम जाप की महिमा जग में, कही गई है अपरम्पार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करें वन्दना बारम्बार।।6 ।।

ॐ ह्रीं **महामुन्यादिशतनामेभ्यः** अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम असंस्कृत को आदिकर, अन्त दमेश्वर तक सौ नाम।
पूज्य हुए हैं तीन लोक में, उनको बारम्बार प्रणाम।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम सम्यक् अर्चन।
तव पद पाने हेतु प्रभु हो, चरणों में शत्-शत् वन्दन।।7 ।।

ॐ ह्रीं **असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनामेभ्यः** अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वृहद्बृहस्पति' नाम आदि सौ, पाने वाले जगत महान्।
सर्व अमंगल हरने वाले, करते हैं जग का कल्याण।।

भवि जीवों के भाग्य विधाता, सर्व जहाँ में अपरम्पार।
विशद भाव से वन्दन करते, प्रभु चरणों में बारम्बार।।8 ।।

ॐ ह्रीं **वृहद्बृहस्पत्यादिशतनामेभ्यः** अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु त्रिकालदर्शी आदिकर, पृथु नाम तक सौ यह नाम।
श्रेष्ठ सुसुन्दर विस्मयकारी, शोभनीक अतिशय अभिराम।।
चिन्तन मनन ध्यान कर प्राणी, कर देते कर्मों का क्षय।
सहस्रनाम में वर्णित अनुपम, इन नामों की जय-जय-जय।।9 ।।

ॐ ह्रीं **त्रिकालदर्श्यादिशतनामेभ्यः** अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिग्वासादि को आदिकर, नाम एक सौ आठ महान्।
नाम मंत्र यह जाप करे कोई, कोई करता है गुणगान।।
विशद भाव से अर्चा करके, ध्याता हूँ मैं यह शुभ नाम।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ने हेतु, करता बारम्बार प्रणाम।।10 ।।

ॐ ह्रीं **दिग्वासादिअष्टोत्तरशतनामेभ्यः** अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक सहस्र आठ शुभ गाए, शुभकारी जिनवर के नाम।
इनको ध्याने वाला पाए, अतिशयकारी मुक्ति धाम।।
विशद भाव से अर्चा करके, ध्याता हूँ मैं यह शुभ नाम।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ने हेतु, करता बारम्बार प्रणाम।।11 ।।

ॐ ह्रीं **श्रीमान् आदि सहस्राष्टनामेभ्यः** पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **जिनवर तीनों लोक में, होते पूज्य त्रिकाल।**
सहस्रनाम की गा रहे, भाव सहित जयमाल।।

चौपाई

जय-जय तीन लोक के स्वामी, त्रिभुवनपति हे अन्तर्यामी।
पूर्व भवों में पुण्य कमाया, पुण्योदय से नरभव पाया।।

तन निरोग पाकर के भाई, सुकुल प्राप्त कीन्हा सुखदायी।
तुमने उर में ज्ञान जगाया, अतिशय सम्यक् दर्शन पाया।।
भाव सहित संयम अपनाए, भव्य भावना सोलह भाए।
तीर्थंकर प्रकृति शुभ पाई, स्वर्गों के सुख भोगे भाई।।
गर्भादि कल्याणक पाए, रत्न इन्द्र भारी बरषाए।
छह महीने पहले से भाई, देवों ने नगरी सजवाई।।
जन्म कल्याणक प्रभु जी पाये, सहस्राष्ट शुभ गुण प्रगटाए।
गुणानुरूप नाम भी पाए, सहस्र आठ संख्या में गाए।।
नाम सभी सार्थक हैं भाई, सहस्र नाम की महिमा गाई।
तीर्थंकर पदवी के धारी, नामों के होते अधिकारी।।
मंत्र सभी यह नाम कहाए, मंत्रों को श्रद्धा से गाए।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाए, जो भी इनका ध्यान लगाए।।
महिमा का न पार है भाई, श्री जिनेन्द्र की है प्रभुताई।
जगत प्रकाशी जिन कहलाए, ज्ञानादर्श सुगुण प्रभु पाए।।
श्री जिनेन्द्र रत्नत्रय पाए, अनंत चतुष्टय प्रभु प्रगटाए।
धर्म चक्र शुभ प्रभु जी धारे, समवशरणयुत किए विहारे।।
समवशरण शुभ देव बनाते, श्री जिनवर की महिमा गाते।
प्राणी अतिशय पुण्य कमाते, पूजा अर्चा कर हर्षाते।।
जय-जयकार लगाते भाई, यह है जिनवर की प्रभुताई।
पुरुषोत्तम यह नाम कहाए, उनकी यह शुभ माल बनाए।।
अर्पित करते तव पद स्वामी, करते हम तव चरण नमामी।
नाथ ! प्रार्थना यही हमारी, दो आशीष हमें त्रिपुरारी।।
रत्नत्रय की निधि हम पाएँ, शिवपथ के राही बन जाएँ।
शिव स्वरूप हम भी प्रगटाएँ, शिवपुर जाकर शिवसुख पाएँ।।

दोहा- **सहस्रनाम का कंठ में, धारें कंठाहार।**
विशद गुणों को प्राप्त कर, पावें शिव का द्वार।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकर अष्टोत्तर सहस्रनाम समूहेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **जिन गुण के अनुपम सुमन, जग में रहे महान्।**
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने पद निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

अथ श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र पूजा

स्थापना

चन्द्रपुरी के श्रेष्ठ चन्द्र जिन, लक्षण पाए चन्द्र महान्।
चन्द्रकांत सम कांति पाए, रूप चन्द्र सम महिमावान।।
चन्द्र इन्द्र सम कीर्तिधारी, चन्द्रप्रभु तव पद अर्चन।
हृदय सरोवर के अम्बुज पर, करते हैं हम आह्वानन्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

भक्ति भाव से अर्चा करते, शीतल वारि सुघट में भरते।
ताप त्रय हरने हम आए, चन्द्रप्रभु पद शीश झुकाए।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति भाव से अर्चा करते, चंदन शीतल कर में धरते।
भव आताप नशाने आए, चन्द्रप्रभु पद शीश झुकाए।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शाल्याक्षत के पुंज बनाए, शुभ अखण्ड थाली भर लाए।
अक्षय पद पाने हम आए, चन्द्रप्रभु पद शीश झुकाए।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जुही मल्लिका पाटल लाए, पुष्प अर्चना हेतु पाए।
काम शत्रु मेरा नश जाए, चन्द्रप्रभु पद शीश झुकाए।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत से पूरित व्यंजन लाए, अर्चा करके हम हर्षाए।
क्षुधारोग नाशन को आए, चन्द्रप्रभु पद शीश झुकाए।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न पुंज के दीप जलाए, भक्ति से अर्चा को आए।
मोह तिमिर हरने हम आए, चन्द्रप्रभु पद शीश झुकाए।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशांगी शुद्ध बनाए, मन अर्चा करके हर्षाए।
अपने कर्म नशाने आए, चन्द्रप्रभु पद शीश झुकाए।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता आम खजूर सुपारी, लौंग नारियल भर के थारी।
मोक्ष महाफल पाने आए, चन्द्रप्रभु पद शीश झुकाए।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत पुष्प मंगाए, चरु दीप धूपादि लाए।
पद अनर्घ पाने हम आए, चन्द्रप्रभु पद शीश झुकाए।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

चन्द्रप्रभु जी चन्द्र किरण सम, धवल रहे अतिशयकारी।
मानो श्रेष्ठ चन्द्रमा दूजे, उदित हुए मंगलकारी।।
इन्द्रादि से वन्दनीय हैं, ऋषिपति हे जिनराज प्रभो !
बंध कषाय विजित हो अतएव, वंदू तुमरे चरण विभो।।1।।

जैसे दिनकर किरण तिमिर को, कर देती है नाश अहा।
देह कांति का सर्व लोक में, वैसा श्रेष्ठ प्रकाश रहा।।
सूर्य कांति जो बाह्य तिमिर की, नाशक जग में कहलाई।
ध्यान दीप की अतिशय कांति, अंतरतम हरती भाई।।2।।
स्वयं पक्ष को श्रेष्ठ मानते, रहे प्रवादी मद में चूर।
वचन रूप तव सिंहनाद से, निर्मद होते सारे क्रूर।।
मद से आर्द्र हुए हैं जिनके, गण्डस्थल जैसे गजराज।
सिंह गर्जना सुनकर भागे, गजराजों का सकल समाज।।3।।
अद्भुत कर्म तेज के धारी, सर्वलोक में परम पवित्र।
ज्ञानानन्त के धारी शाश्वत, विश्व नेत्र जन-जन के मित्र।।
सर्व दुःखनाशक जिनशासन, तीन लोक में श्रेष्ठ महान्।
स्थित करें परम पद में जो, त्रिभुवन वंदित रहा प्रधान।।4।।
सर्व दोष रूपी मेघों के, सघन कलंक रहित मनहार।
दिव्य ध्वनि अविरोध किरण से, प्रगटित होती मंगलकार।।
भव्य जीवरूपी कुमुदों को, करे प्रफुल्लित चन्द्र समान।
पावन करो पवित्र मेरा मन, करुणा कर मेरे भगवान।।5।।
जिन चन्द्रप्रभु हैं परम पावन, पूज्य पंकज द्वय चरण।
स्मरशरासन अपह अघमद, भव जलधि तारण तरण।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं संसार सरोवर तारक, चन्द्रनाथ जिनपति भगवान।
गणधर हैं वैदर्भ पिताश्री, नृप सुग्रीव गुणों की खान।।
शुभ्र अंशु छवि धारी निर्मल, मुक्ति रमा के ईश महान्।
धनुष डेढ़ सौ है ऊँचाई, चन्द्र मृगाङ्कित है पहिचान।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ द्वितीय वलय पूजा

द्वितीय वलय में वर्तमान 24 तीर्थंकर के अर्घ्य चढ़ावें एवं शासन यक्ष-यक्षियों को भेट दें।

स्थापना

कर्म रूप कल्मष रिपु जिनने, जीते पाया केवलज्ञान।
दिव्य ध्वनि से बोध जगाये, अखिल लोक में जिन भगवान।।
अक्षय निवृत्ति पाने वाले, वृषभादि महावीर महान्।
समृद्धि सौभाग्य प्रदायक, जिन का करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वर्द्धमानपर्यन्त चतुर्विंशति जिनेन्द्रः ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं वृषभादि वर्द्धमानपर्यन्त चतुर्विंशति जिनेन्द्रः ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं वृषभादि वर्द्धमानपर्यन्त चतुर्विंशति जिनेन्द्रः ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जिनशासन के देव ये, भक्ति परायण जान।
चौबिस गोमुख आदि शुभ, शांति करें महान्।।

ॐ ह्रीं आं क्रों ह्रीं गोमुखाद्याः चतुर्विंशतिप्रमाः जिनशासनदेवाः ! अत्र आगच्छ-आगच्छ।
ॐ ह्रीं आं क्रों ह्रीं गोमुखाद्याः चतुर्विंशतिप्रमाः जिनशासनदेवाः ! स्वस्थाने तिष्ठः तिष्ठः।
ॐ ह्रीं आं क्रों ह्रीं गोमुखाद्याः चतुर्विंशतिप्रमाः जिनशासनदेवाः ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

भक्त वत्सला देवियाँ, करें प्रभु गुणगान।
चक्रेश्वर्यादि सभी, शांति करें महान्।।

ॐ ह्रीं आं क्रों ह्रीं चक्रेश्वर्यादि चतुर्विंशति जिनशासनदेव्यः ! आगच्छ-आगच्छ।
ॐ ह्रीं आं क्रों ह्रीं चक्रेश्वर्यादि चतुर्विंशति जिनशासनदेव्यः ! स्वस्थाने तिष्ठः तिष्ठः।
ॐ ह्रीं आं क्रों ह्रीं चक्रेश्वर्यादि चतुर्विंशति जिनशासनदेव्यः ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक (छन्द-मोतियादाम)

चढ़ाते हैं प्रासुक यह नीर, मिटाने जन्म-जरा की पीर।
हुए जो तीर्थंकर चौबीस, चरण में झुका रहे हम शीश।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाने लाए गंध विशेष, नाश हो भव आताप जिनेश।
हुए जो तीर्थंकर चौबीस, चरण में झुका रहे हम शीश।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते अक्षत धवल अनूप, प्राप्त हो अक्षय निज स्वरूप।
हुए जो तीर्थंकर चौबीस, चरण में झुका रहे हम शीश।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प यह लाए विविध प्रकार, काम का करने हम संहार।
हुए जो तीर्थंकर चौबीस, चरण में झुका रहे हम शीश।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते यह नैवेद्य महान्, मिटे मम क्षुधा रोग भगवान।
हुए जो तीर्थंकर चौबीस, चरण में झुका रहे हम शीश।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करे यह दीपक तम का नाश, मोह हो मेरा पूर्ण विनाश।
हुए जो तीर्थंकर चौबीस, चरण में झुका रहे हम शीश।।6।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप यह जला रहे शुभकार, कर्म का करने हम संहार।
हुए जो तीर्थंकर चौबीस, चरण में झुका रहे हम शीश।।7।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस फल भर के लाए थाल, मोक्ष फल पाने यहाँ विशाल।
हुए जो तीर्थंकर चौबीस, चरण में झुका रहे हम शीश।।8।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाने लाए हैं यह अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ।
हुए जो तीर्थंकर चौबीस, चरण में झुका रहे हम शीश।।9।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा- मरुदेवी के लाल, नाभिराय के सुत कहे।
चरण झुकाएँ भाल, ऋषभनाथ के चरण में।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

श्री आदि जिन की शरण में, जो भक्ति करते भाव से।
गोवक्त्र (गोवदन) यक्ष चरणों में आके, गीत गाते चाव से।।
शासन सुरक्षा जिन प्रभु की, की गई जिन से अहा।
इस यज्ञ में निज भाग पाने, के लिए उनको कहा।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री वृषभदेवस्य शासनदेव गोमुखाय यक्ष ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

चक्रेश्वरी यक्षिणी आकर, गीत भक्ति के गाती है।
आदिनाथ के समवशरण में, जयकारा लगवाती है।।
जिनवर की भक्ति करने को, आज यहाँ करते आह्वान।
यह भाग देने को अनुपम, बुला रहे हैं सम्मान।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री वृषभदेवस्य शासनदेवी चक्रेश्वरी यक्षि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

सोरठा- अजितनाथ भगवान, कर्मशत्रु को जीतकर।
जग में हुए महान्, जिन पद वंदन हम करें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अजित जिन की भक्ति करने, भाव से आते रहे।
वह महायक्ष आये चरण में, गीत शुभ गाते रहे।।

शासन सुरक्षा जिन प्रभु की, की गई जिनसे अहा।
इस यज्ञ में निज भाग पाने, के लिए उनको कहा।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री अजितनाथस्य शासनदेव महायक्षाय अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

स्वयं रोहिणी यक्षी देवी, समोशरण में आती है।
अजितनाथ की भक्ति करके, जय-जयकार लगाती है।।
जिनवर की भक्ति करने को, आज यहाँ करते आह्वान।
यह भाग देने को अनुपम, बुला रहे हैं सम्मान।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री अजितनाथस्य शासनदेवी रोहिणी यक्षि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

अश्व चिह्न पहिचान, संभवनाथ जिनेन्द्र की।
करें विशद गुणगान, जिन गुण पाने के लिए।।3।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो श्री सम्भव जिनेश्वर, की शरण आते रहे।
वह यक्ष त्रिमुख जिन प्रभु के, चरणों सिर नाते रहे।।
शासन सुरक्षा जिन प्रभु की, की गई जिनसे अहा।
इस यज्ञ में निज भाग पाने, के लिए उनको कहा।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री संभवनाथस्य देवस्य शासनदेव त्रिमुखाय अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

सम्भव जिन के समवशरण में, प्रज्ञप्ती यक्षी आवे।
जिन शासन की बाधाएँ हर, श्री जिनेन्द्र के गुण गावे।।
जिनवर की भक्ति करने को, आज यहाँ करते आह्वान।
यह भाग देने को अनुपम, बुला रहे हैं सम्मान।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री संभवनाथस्य शासनदेवी प्रज्ञप्ती यक्षि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

अभिनंदन जिनदेव, चरण वंदना हम करें।
विनती करें सदैव, चरण-शरण हमको मिले।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सदा तीर्थेश-चौथे, की शरण आते रहे।
यक्ष यक्षेश्वर चरण में, गीत शुभ गाते रहे।।
शासन सुरक्षा जिन प्रभु की, की गई जिनसे अहा।
इस यज्ञ में निज भाग पाने, के लिए उनको कहा।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री अभिनंदननाथस्य शासनदेव यक्षेश्वराय अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

वज्रश्रृंखला यक्षी आकर, अभिनन्दन के गुण गावे।
जिन भक्तों के कष्ट निवारे, अपनी महिमा दिखलावे।।
जिनवर की भक्ति करने को, आज यहाँ करते आह्वान।
यह भाग देने को अनुपम, बुला रहे हैं सम्मान।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री अभिनंदननाथस्य शासनदेवी वज्रश्रृंखला यक्षि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

सुमतिनाथ पद माथ, झुका रहे हम भाव से।
मुक्ति पथ में साथ, दीजे हमको जिन प्रभो !।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमति जिन की शरण में, जो भाव से आते रहे।
तुम्बरु वह यक्ष आकर, जिनके गुण गाते रहे।।
शासन सुरक्षा जिन प्रभु की, की गई जिनसे अहा।
इस यज्ञ में निज भाग पाने, के लिए उनको कहा।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री सुमतिनाथस्य शासनदेव तुम्बुराय अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

वज्रांकुशा यक्षिणी आकर, सुमतिनाथ के गुण गावे।
जिन भक्ति में रत होकर के, चरणों में बलि-बलि जावे।।
जिनवर की भक्ति करने को, आज यहाँ करते आह्वान।
यह भाग देने को अनुपम, बुला रहे हैं सम्मान।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री सुमतिनाथस्य शासनदेवी वज्रांकुशाय यक्षि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

नृप धारण के लाल, पद्मप्रभ हैं पद्म सम।
वन्दन करें त्रिकाल, तव पद पाने के लिए।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्म प्रभु की भक्ति करने, भाव से आते रहे।
मातंग यक्ष चरणों में आके, जिनके गुण गाते रहे।।
शासन सुरक्षा जिन प्रभु की, की गई जिनसे अहा।
इस यज्ञ में निज भाग पाने, के लिए उनको कहा।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री पद्मप्रभनाथस्य शासनदेव मातंगयक्ष ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

अप्रति चक्रेश्वरी यक्षिणी, अपनी महिमा दिखलावे।
सद्भक्तों की संकटहारी, पद्मप्रभ जिन को ध्यावे।।
जिनवर की भक्ति करने को, आज यहाँ करते आह्वान।
यह भाग देने को अनुपम, बुला रहे हैं सम्मान।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री पद्मप्रभनाथस्य शासनदेवी अप्रतिचक्रेश्वरी यक्षि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

श्री सुपार्श्व के पाद, स्वस्तिक लक्षण शोभता।
रहे सभी को याद, जिनवर की महिमा अगम।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सुपारस के चरण में, भक्ति करते भाव से।
विजय यक्ष आके शरण में, गीत गाते चाव से।।
शासन सुरक्षा निज प्रभु की, की गई जिनसे अहा।
इस यज्ञ में निज भाग पाने, के लिए उनको कहा।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथस्य शासनदेव विजययक्ष ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

जिसका नाम पुरुषदत्ता है, वह रहती भक्ति में लीन।
श्री सुपार्श्व की कही यक्षिणी, भक्ति में नित रही प्रवीण।।
जिनवर की भक्ति करने को, आज यहाँ करते आह्वान।
यह भाग देने को अनुपम, बुला रहे हैं सम्मान।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथस्य शासनदेवी पुरुषदत्ता यक्षि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

कान्ति चन्द्र समान, चन्द्र चिह्न जिनका परम।
इन्द्र करें गुणगान, भक्ति में तल्लीन हो।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रप्रभु के यक्ष आये, अजित जिसका नाम था।
जिन प्रभु की भक्ति करना, मुख्य जिसका काम था।।
शासन सुरक्षा जिन प्रभु की, की गई जिनसे अहा।
इस यज्ञ में निज भाग पाने, के लिए उनको कहा।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चंद्रप्रभनाथस्य शासनदेव अजितयक्ष ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

स्वयं मनोवेगा देवी भी, समवशरण में आती है।
चन्द्रप्रभु की भक्ति करती, ज्वालामालिनी कहलाती है।।
जिनवर की भक्ति करने को, आज यहाँ करते आह्वान।
यह भाग देने को अनुपम, बुला रहे हैं सम्मान।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री चन्द्रप्रभनाथस्य शासनदेवी मनोवेगायक्षि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

पुष्पदंत ने अंत, कीन्हा है संसार का।
आप हुए जयवंत, सद्गुण के सरवर बने।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र की, भक्ति करे जो भाव से।
वह ब्रह्मयक्ष आके शरण में, गीत गावे चाव से।।
शासन सुरक्षा जिन प्रभु की, की गई जिनसे अहा।
इस यज्ञ में निज भाग पाने, के लिए उनको कहा।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री पुष्पदन्तनाथस्य शासनदेव ब्रह्मयक्ष ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

पुष्पदन्त की रही यक्षिणी, काली देवी कहलावे।
श्रद्धा भक्ति से जिनेन्द्र की, मंगलमय महिमा गावे।।
जिनवर की भक्ति करने को, आज यहाँ करते आह्वान।
यह भाग देने को अनुपम, बुला रहे हैं सम्मान।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री पुष्पदन्तनाथस्य शासनदेवी काली यक्षि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

शीतलनाथ जिनेन्द्र, शीलव्रतों को पाए हैं।
पूजें इन्द्र नरेन्द्र, मन में हर्ष मनाए हैं।।10।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल जिनेश्वर के चरण में, भक्ति करते भाव से।
यक्ष ब्रह्मेश्वर सदा ही, गीत गाते चाव से।।
शासन सुरक्षा जिन प्रभु की, की गई जिनसे अहा।
इस यज्ञ में निज भाग पाने, के लिए उनको कहा।।10।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री शीतलनाथस्य शासनदेव ब्रह्मेश्वर यक्ष ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

ज्वालामालिनी रही यक्षिणी, शीतल जिनके गुण गावे।
सुख-शांति सौभाग्यप्रदायक, जिनवर भक्ति को आवे।।
जिनवर की भक्ति करने को, आज यहाँ करते आह्वान।
यह भाग देने को अनुपम, बुला रहे हैं सम्मान।।10।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री शीतलनाथस्य शासनदेवी ज्वालामालिनी यक्षि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

होय कर्म का नाश, जिन श्रेयांस की भक्ति से।
आतम ज्ञान प्रकाश, होता है भवि जीव का।।11।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयांश जिनवर की शरण में, भक्ति करते भाव से।
वह यक्ष कुमार आके सदा भी, गीत गाते चाव से।।
शासन सुरक्षा जिन प्रभु की, की गई जिनसे अहा।
इस यज्ञ में निज भाग पाने, के लिए उनको कहा।।11।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री श्रेयांसनाथस्य शासनदेव कुमारयक्ष ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

स्वयं महाकाली देवी भी, श्री जिनेन्द्र के गुण गावे।
श्री जिनेन्द्र के समवशरण में, नाचे-गावे हर्षावे।।
जिनवर की भक्ति करने को, आज यहाँ करते आह्वान।
यह भाग देने को अनुपम, बुला रहे हैं सम्मान।।11।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री श्रेयांसनाथस्य शासनदेवी महाकाली यक्षि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

वासुपूज्य भगवान, तीन लोक में पूज्य हैं।
शत्-शत् करूँ प्रणाम, पूजा करके भाव से।।12।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र की, शुभ भक्ति करता भाव से।
वह यक्ष षण्मुख शरण आके, गीत गावे चाव से।।
शासन सुरक्षा जिन प्रभु की, की गई जिनसे अहा।
इस यज्ञ में निज भाग पाने, के लिए उनको कहा।।12।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री वासुपूज्यनाथस्य शासनदेव षण्मुखयक्ष ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

वासुपूज्य की रही यक्षिणी, गौरी महिमा दिखलावे।
जिनशासन के गुरु गौरव की, नृत्य गान कर गुण गावे।।
जिनवर की भक्ति करने को, आज यहाँ करते आह्वान।
यह भाग देने को अनुपम, बुला रहे हैं सम्मान।।12।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री वासुपूज्यनाथस्य शासनदेवी गौरी यक्षि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

(छन्द-जोगीरासा)

विमलनाथ का विमल ज्ञान है, द्रव्य चराचर भाषी।
कर्म नाशकर शिवपुर पहुँचे, पद पाया अविनाशी।।13।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलनाथ का यक्ष भाई, पाताल कहा है।
तीन योग से भक्ति में, जो लीन रहा है।।
यज्ञ भाग देने का, हमने भाव बनाया।
अतः आज आह्वानन, करके यहाँ बुलाया।।13।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री विमलनाथस्य शासनदेव पातालयक्ष ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

श्री विमल जिन के चरण की, शुभ भक्ति करती भाव से।
वह यक्षिणी गांधारी देवी, सिर झुकाती चाव से।।
हम बुलाते यज्ञ में शुभ, भेंट देने के लिए।
यह रहा सम्मान अनुपम, कार्य मंगल जो किए।।13।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री विमलनाथस्य शासनदेवी गांधारी यक्षि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

(छन्द-जोगीरासा)

अनंतनाथ जिनवर ने सारे, घाती कर्म विनाशे।
ज्ञान अनंतानंत प्राप्त कर, लोकालोक प्रकाशे।।14।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्तनाथ का यक्ष श्रेष्ठ किन्नर कहलाया।
श्री जिनेन्द्र की भक्ति करने हरदम आया।।
यज्ञ भाग देने का, हमने भाव बनाया।
अतः आज आह्वानन, करके यहाँ बुलाया।।14।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री अनन्तनाथस्य शासनदेव किन्नरयक्ष ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

श्री अनन्त जिन के चरण की, भक्ति करती भाव से।
वह यक्षिणी वैरोटी देवी, सिर झुकावे चाव से।।
हम बुलाते यज्ञ में शुभ, भेंट देने के लिए।
यह रहा सम्मान अनुपम, कार्य मंगल जो किए।।14।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री अनन्तनाथस्य शासनदेवी वैरोटी यक्षि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

धर्मनाथ भगवान लोक में, विशद धर्म के धारी।
सर्वलोक में जिनका दर्शन, होता मंगलकारी।।15।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मनाथ का यक्ष भाई किम्पुरुष जानो।
श्री जिनेन्द्र का भक्त रहा वह भाई मानो।।
यज्ञ भाग देने का, हमने भाव बनाया।
अतः आज आह्वानन, करके यहाँ बुलाया।।15।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री धर्मनाथस्य शासनदेव किंपुरुषयक्ष ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

श्री धर्म जिन की यक्षिणी है, अनन्तमति शुभ नाम है।
जैन शासन की सुरक्षा करना, जिसका काम है।।
हम बुलाते यज्ञ में शुभ, भेंट देने के लिए।
यह रहा सम्मान अनुपम, कार्य मंगल जो किए।।15।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री धर्मनाथस्य शासनदेवी अनन्तमति यक्षि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

कामदेव चक्रीपद पाया, तीर्थंकर पद धारा।
शांतिनाथ है तीन लोक में, पावन नाम तुम्हारा।।16।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ का यक्ष, गरुड़ कहलाया भाई।
उसने जिनकी भक्ति कर, अति प्रभुता आई।।
यज्ञ भाग देने का, हमने भाव बनाया।
अतः आज आह्वानन, करके यहाँ बुलाया।।16।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री शांतिनाथस्य शासनदेव गरुड़यक्ष ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

शांति जिन की यक्षिणी का, मानसी शुभ नाम है।
जैन शासन की सुरक्षा, करना जिसका काम है।।
हम बुलाते यज्ञ में शुभ, भेंट देने के लिए।
यह रहा सम्मान अनुपम, कार्य मंगल जो किए।।16।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री शांतिनाथस्य शासनदेवी मानसी यक्षि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

कुंथुनाथ गुणों के सागर, सर्व गुणों के दाता।
तीन लोकवर्ती जीवों के, कुंथुनाथ हैं त्राता।।17।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्थुनाथ के पास, यक्ष गन्धर्व कहा है।
श्री जिनेन्द्र का भक्त, सदा जो देव रहा है।।
यज्ञ भाग देने का, हमने भाव बनाया।
अतः आज आह्वानन, करके यहाँ बुलाया।।17।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री कुन्थुनाथस्य शासनदेव गंधर्वयक्ष ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

महामानसी यक्षिणी भी, भक्ति करती भाव से।
कुन्थु जिनवर के चरण में, गीत गाती चाव से।।
हम बुलाते यज्ञ में शुभ, भेंट देने के लिए।
यह रहा सम्मान अनुपम, कार्य मंगल जो किए।।17।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री कुंथुनाथस्य शासनदेवी महामानसी यक्षि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश किए प्रभु, आठ गुणों को पाए।
अरहनाथ भगवान जगत् में, सबके हृदय समाए।।18।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहनाथ का यक्ष, कुबेर कहा है भाई।
उसने जिनकी भक्ति कर, बहु प्रभुता पाई।।
यज्ञ भाग देने का, हमने भाव बनाया।
अतः आज आह्वानन, करके यहाँ बुलाया।।18।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री अरहनाथस्य शासनदेव कुबेरयक्ष ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

अरह जिन की यक्षिणी है, जया जिसका नाम है।
धर्म की रक्षा सुरक्षा, मुख्य जिसका काम है।।
हम बुलाते यज्ञ में शुभ, भेंट देने के लिए।
यह रहा सम्मान अनुपम, कार्य मंगल जो किए।।18।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री अरहनाथस्य शासनदेवी जयायक्षि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

कर्मरूप मल्लों की सेना, जिनके आगे हारी।
मल्लिनाथ भगवान आपकी, दुनियाँ बनी पुजारी।।19।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ का यक्ष, वरुण कहलाया भाई।
श्री जिनेन्द्र की भक्ति, जिसके हृदय समाई।।
यज्ञ भाग देने का, हमने भाव बनाया।
अतः आज आह्वानन, करके यहाँ बुलाया।।19।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री मल्लिनाथस्य शासनदेव वरुणयक्ष ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

मल्लि जिन की यक्षिणी भी, भक्ति करती चाव से।
नाम है विजया मनोहर, गीत गावे चाव से।।
हम बुलाते यज्ञ में शुभ, भेंट देने के लिए।
यह रहा सम्मान अनुपम, कार्य मंगल जो किए।।19।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री मल्लिनाथस्य शासनदेवी विजया यक्षि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

मुनिसुव्रत ने मुनि व्रतों को, अपने हृदय सजाया।
मोक्षमार्ग के राही जिनवर, केवलज्ञान जगाया।।20।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत का यक्ष, देव भृकुटि कहलाया।
श्री जिनेन्द्र की भक्ति, हेतु शरण में आया।।
यज्ञ भाग देने का, हमने भाव बनाया।
अतः आज आह्वानन, करके यहाँ बुलाया।।20।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथस्य शासनदेव भृकुटियक्ष ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

मुनिसुव्रत की यक्षिणी, करती सदा गुणगान है।
अपराजिता कहते हैं जिसको, वह भी बहुत महान है।।
हम बुलाते यज्ञ में शुभ, भेंट देने के लिए।
यह रहा सम्मान अनुपम, कार्य मंगल जो किए।।20।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथस्य शासनदेवी अपराजिता यक्षि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

मिथिलापुर नगरी के राजा, विजयसेन कहलाए।
जन्म प्राप्त कर नमिनाथ ने, सबके भाग्य जगाए।।21।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमिनाथ का यक्ष देव गोमेध कहाया।
जिनशासन का भक्त प्रभु के चरणों आया।।
यज्ञ भाग देने का, हमने भाव बनाया।
अतः आज आह्वानन करके यहाँ बुलाया।।21।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री नमिनाथस्य शासनदेव गोमेधयक्ष ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

नमि जिन की यक्षिणी शुभ, भक्ति करती भाव से।
नाम है बहुरूपिणी वह, सिर झुकावे चाव से।।
हम बुलाते यज्ञ में शुभ, भेंट देने के लिए।
यह रहा सम्मान अनुपम, कार्य मंगल जो किए।।21।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री नमिनाथस्य शासनदेवी बहुरूपिणी यक्षि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

पशुओं की पीड़ा को लखकर, मन में करुणा जागी।
नेमिनाथ जग की माया तज, क्षण में बने विरागी।।22।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ का यक्ष, पार्श्व कहलाया भाई।
जिन भक्ति करके पाई, उसने प्रभुताई।।
यज्ञ भाग देने का, हमने भाव बनाया।
अतः आज आह्वानन, करके यहाँ बुलाया।।22।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री नेमिनाथस्य शासनदेव पार्श्वयक्ष ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

यक्षिणी कुष्मांडिनी श्री, नेमिजिन की भक्त है।
भक्ति पूजा में सदा ही, जो रहे अनुरक्त है।।
हम बुलाते यज्ञ में शुभ, भेंट देने के लिए।
यह रहा सम्मान अनुपम, कार्य मंगल जो किए।।22।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री नेमिनाथस्य शासनदेवी कुष्मांडिनी यक्षि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

कर उपसर्ग पार्श्व के ऊपर, हार कमठ ने मानी।
ध्यान अग्नि से कर्म जलाए, बन गये केवलज्ञानी।।23।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ का यक्ष देव, मातंग कहाया।
जग प्रसिद्धि धरणेन्द्र, नाम शुभ जिसने पाया।।
यज्ञ भाग देने का, हमने भाव बनाया।
अतः आज आह्वानन, करके यहाँ बुलाया।।23।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री पार्श्वनाथस्य शासनदेव धरणेन्द्रयक्ष ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

देवी पद्मावती है प्रभु, पार्श्व जिन की यक्षिणी।
जैनशासन जिन प्रभु की, जो रही शुभ रक्षिणी।।
हम बुलाते यज्ञ में शुभ, भेंट देने के लिए।
यह रहा सम्मान अनुपम, कार्य मंगल जो किए।।23।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री पार्श्वनाथस्य शासनदेवी पद्मावति यक्षि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

निज पर विजय प्राप्त करके जो, महावीर कहलाते।
ऐसे वीर प्रभु के चरणों, सादर शीश झुकाते।।24।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर का यक्ष देव, गुह्यक कहलाया।
जिनशासन का रक्षक, प्रभु के चरणों आया।।
यज्ञ भाग देने का, हमने भाव बनाया।
अतः आज आह्वानन, करके यहाँ बुलाया।।24।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री महावीरस्वामिन शासनदेव गृह्यकयक्ष ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

श्री वीर जिन की यक्षिणी, भक्ति करे सद्भाव से।
सिद्धायिनी है नाम जिसका, सिर झुकावे चाव से।।
हम बुलाते यज्ञ में शुभ, भेंट देने के लिए।
यह रहा सम्मान अनुपम, कार्य मंगल जो किए।।24।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री महावीरस्वामिन शासनदेवी सिद्धायिनी यक्षि ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलादि अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

दोहा- नव ग्रह शांति यज्ञ में, आओ शासन देव।
यज्ञभाग शुभ लीजिए, आकर यहाँ सदैव।।

ॐ आं क्रों ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकर शासनदेव व गोमुख प्रमुख सर्वयक्षा ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं अर्घ्यं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां-प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा।

दोहा- महामृत्युञ्जय विधान में, यक्षिणी आवें सभी।
भक्ति पूजा भाव से कर, भेंट भी पावें अभी।।

ॐ आं क्रों ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकर शासनदेवी चक्रेश्वरी प्रमुख सर्वयक्षी ! अत्र आगच्छ-आगच्छ ! इदं जलं गंधं अक्षतं पुष्पं चरुं दीपं धूपं फलं अर्घ्यं स्वस्तिकं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां-प्रतिगृह्यतां इति स्वाहा।

तृतीयः वलयः

दोहा- नंदाभद्रा जया अरु रिक्ता, पूर्णा तिथियाँ रहीं प्रधान।
पुष्पाञ्जलि करके हम देते, उनको भी शुभ भेंट महान्।।

आह्वानादि पुरःसर तिथि देवताः, नवग्रहदेवता प्रत्येक पूजा प्रतिज्ञापनाय तृतीय वलये पुष्पाक्षतान् क्षिपेत्।

पंचदशतिथिदेवाऽर्चनम्

स्थापना

नंदाभद्रा जया अरु रिक्ता, पूर्णा तिथियाँ रही महान्।
अनेकांत शुभ पक्ष समन्वित, जिनवर के हैं यक्ष प्रधान।।
भक्ति भाव से अर्चा करने, चरणों आते बारम्बार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, श्री जिनेन्द्र की अपरम्पार।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पञ्चदश तिथि देवाः ! अत्र आगच्छ-आगच्छ।
ॐ आं क्रों ह्रीं पञ्चदश तिथि देवाः ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं पञ्चदश तिथि देवाः ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

धनुष बाण ले यक्ष प्रतिपद, प्रतिपक्ष प्रभु पद आवे।
धवलोज्जवल शुभ कांति वाला, पद्म अर्चना को लावे।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं प्रतिपदयक्षाय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

अक्षमालधारी त्रिशूल ले, वैश्वानर सुर सूर्य समान।
गजारुढ़ हो द्वितिया तिथि को, करता आके प्रभु गुणगान।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं वैश्वानराय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

अश्व यान पर राक्षस चढ़कर, मुसलाखेट खट्वांग समेत।
खिला कमल ले तृतिया तिथि को, भाव सहित पूजा के हेत।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं राक्षसाय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

मारुत् आभावाला नघृत, जलज भयासि खेट महान्।
व्याघ्रारुढ़ चतुर्थी के दिन, फलादान करता गुणगान।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं नधृताय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

शरद चंद्र की कांति वाला, सर्पासन पर पन्नग देव।
श्रृणि पाश ले हाथ पञ्चमी, के दिन अर्चा करें सदैव।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पन्नगाय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

कशांक दान डमरू फरीम कुश, खड्ग अक्षमाला के साथ।
नंदा अधिपति असुर षष्ठी को, पूजे शत्रुपत्र ले हाथ।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं असुराय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

वेणु प्रकाश सप्तमी के दिन, अश्वारूढ़ देव सुकुमार।
पाशांकुश फल भोज हाथ ले, वंदन करता बारम्बार।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुकुमाराय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

ले कृपाण फल खेट हाथ में, अर्चा करने पितृ देव।
जगतपति आठें को आवे, प्राणी रक्षा करे सदैव।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पितृदेवाय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

शूल कपाल नेत्र त्रयधारी, उदित सूर्य सम करे प्रकाश।
श्री विश्वमाली नवमी को, जिन पूजा करता है खास।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं विश्वमालिदेवाय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

खेट बाण खड्गोज्वल धारी, मन में अतिशय करुणाधार।
पूर्णाधिप द्वितीय दशमी को, चमर मोर पर हुआ सवार।।10।।

ॐ आं क्रों ह्रीं चमरदेवाय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

धनुष बाण तलवार खेट ले, हो प्रसन्न कर ऊपर हाथ।
एकादशि का ईश वैरोचन, भक्ति सहित झुकावे माथ।।11।।

ॐ आं क्रों ह्रीं वैरोचनाय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

हंसारुढ़ महाविद्युत भी, इन्द्र वर्ण सम जोड़े हाथ।
धनुष बाण पूत्री कृपाण ले, द्वादशेश अर्चा को साथ।।12।।

ॐ आं क्रों ह्रीं महाविद्युतदेवाय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

मारदेव चढ़कर गवेन्द्र पर, चन्द्र खड्ग फल ले निज हाथ।
त्रयोदश्चधिप वर्ण नीले में, अर्चा को द्रव्य लावे साथ।।13।।

ॐ आं क्रों ह्रीं मारदेवाय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

मुदगरांक फल गदा कुठारी, चतुर्दश्यधिपति ले हाथ।
चढ़ गवेन्द्र पर नील वर्ण में, अर्चा करे झुकावे माथ।।14।।

ॐ आं क्रों ह्रीं विश्वेश्वराय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

कमनीय वदन बाणामय पाशी, दण्डत्रय को दण्ड ले हाथ।
पिण्डाशन पञ्चादश तिथि को, अर्चा करे झुकाए माथ।।15।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पिण्डाशनाय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

नवग्रह देव हेतु भेंट

स्थापना

नित्य परिक्रमा मेरु गिरि की, मनुज लोक में करें सदैव।
निग्रहानुग्रह करने वाले, ज्योतिषवासी सारे देव।।
ढाई द्वीप के बाह्य अवस्थित, रवि चन्द्र आदि सुरनाथ।
श्री जिनेन्द्र का आह्वानन कर, अर्चा करो सभी मिल साथ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं नवग्रह देवाः ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ आं क्रों ह्रीं नवग्रह देवाः ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं नवग्रह देवाः ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टकं

सतत् प्रकाश ताप प्रतिभासी, रवि विमान का है आधीश।
पल्योपम आयु का धारी, कमल हाथ ले नत हो शीश।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा करता, सूर्य महाग्रह पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं आदित्य महाग्रहाय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

लाख वर्ष पल्लाधिक आयु, बलक्षरोचि शुभ आभावान।
महारत्नकृत तोद्धवेषयुत, श्रेष्ठ ग्रहाधिप रहा महान्।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा करता, सोम महाग्रह पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सोम महाग्रहाय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

सुरोद्यमान आकार मृगाधिक, अर्घ कोष श्रित प्रभु विमान।
अर्घ्य पल्य आयु के धारी, यक्षाश्रित सुकुमार महान्।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, मंगल ग्रह जिन पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं भौम महाग्रहाय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

लोक पूज्य सत्त्वोहित केहरि, केन्द्र त्रिकोणे जन सुखकार।
अर्घ्य प्राप्त कर पुष्टिकर्त्ता, सोम पुत्र है मंगलकार।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, बुध ग्रह श्री जिन पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं बुध महाग्रहाय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

बलि भेटग्राही सुर राजमंत्री, स्वर्ग लोक में रहा महान्।
पयःप्रपूरित घृत संतुष्टक, वियत विहारी श्रेष्ठ प्रधान।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, गुरु महाग्रह पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं गुरु महाग्रहाय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

वाम हस्त में रहा कमण्डल, शुचि दण्डधारी गुणगान।
सव्यपाण कविराज मुख्य है, जिसके वस्त्र सुधौत महान्।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, शुक्र महाग्रह पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुक्र महाग्रहाय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

है रजनीश शत्रु छाया सुत, सूर्य खचारि पुत्र महान्।
कृष्ण वर्ण अष्टारिग सज्जन, सौख्यकार अतिशय गुणवान।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, शनि महाग्रह पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शनि महाग्रहाय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

शशि बिम्ब को छठे मास में, प्रच्छादित करता है आन।
निज के बिम्ब से परिवर्तित कर, हो स्वभाव में तुष्ट महान्।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, राहु महाग्रह पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं राहु महाग्रहाय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

वियद बिहारी पुण्य कृष्ण ध्वज, एकादशास्थ है छायावान।
कृष्ण वर्णधारी है अनुपम, सभवन पूज्य है आभावान।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करता, केतु महाग्रह पद में आन।
विशद भाव से वंदन करके, करता है अतिशय गुणगान।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं केतु महाग्रहाय इदं अर्घ्यं गृहाण-गृहाण स्वाहा।

चतुस्र वलयः द्वादश बीजाक्षर पूजा

चन्द्रप्रभु जी चन्द्र किरण सम, धवल रहे अतिशयकारी।
मानो श्रेष्ठ चन्द्रमा दूजे, उदित हुए मंगलकारी।।
इन्द्रादि से वंदनीय हैं, ऋषीपति जिनराज प्रभो !
बन्ध कषाय जीतने वाले, वंदू तुमरे चरण विभो।।
वरं परं उत्पन्न हुआ शुभ, बिन्दु सहित अरजं शुभकार।
होम सहित अर्हं शुभ लपहा, पहः प्राप्त है मंगलकार।।
स्वरटांतवेष्टित बीज पूर्व 'क्ष', शुभ अक्षर है महिमावंत।
द्वादश पद्म पत्र से पत्रित, स्वरावृत्त साधक है ऽनन्त।।
द्वादश शांत कलान्वित पद शुभ, पञ्चाक्षर पीयूष विशेष।
क्ष्वीं ह्वीं क्षिं बिन्दु सहितं, सपरं श्रेष्ठ अग्र लिख शेष।
संघट शांत बाह्य परिवृत्त कर, 'मृत्युञ्जय' पद हो निर्वाण।।
उसके बाह्य क्षितिभृत सम्पुट, जल मृत्युञ्जय पूज्य महान्।

(इति पठित्वा यंत्रोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

दिव्य चक्र चक्रान्वित सबसे, रक्षादि मृत्युञ्जय यंत्र।
मृत्यु विनाशक हेतु शांतिप्रद, ध्यायें हम मृत्युञ्जय मंत्र।।
'अ' बीजाक्षर मातृकादि शुभ, बीज मंत्र मण्डल सुप्रसिद्ध।
स्वपद प्रशस्त मंत्र न्यसामी, यंत्र मृत्युञ्जय पूज्य प्रसिद्ध।।

सर्वोपमृत्यु निवारण हेतु, सब अभीष्ट फलप्रद शुभ नाम।
दिव्य चक्र क्षिति इन्द्र अमर के, मृत्युञ्जय को करें प्रणाम।।
श्रेष्ठ सुनहरे भूत-प्रेत गण, अरु पिशाच राक्षस के देव।
सब रागों के विध्वंसक शुभ, सुख-शांति जो करें सदैव।।

सर्व रोग हर सुखकर जानो, मृत्युञ्जय शुभ मंत्र महान्।
अर्चनीय है भवि जीवों से, हम भी करते हैं गुणगान।।

(इति पठित्वा नमस्कारं कुर्यात्)

स्थापना

गंगा का शीतल निर्मल जल, करता है भव ताप हरण।
करके शुभ अभिषेक यंत्र का, मृत्युञ्जय हो श्रेष्ठ वरण।।
जल गंधाक्षत चरु शुभ पुष्प, दीप धूप फल आदि सार।
मृत्युञ्जय हो प्राप्त हमें शुभ, जैनधर्म आगम अनुसार।।

ॐ नमोऽर्हते भगवते देवाधिदेव, सर्वयन्त्रमन्त्र सिद्धिकराय ह्रीं ह्रीं द्रीं द्रीं क्रों क्रों ॐ ॐ झं वं ह्वः पः हः हं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ आ उ सा..नामधेयस्य..सर्वापमृत्युविनाशनं कुरु-करु। मृत्युञ्जययन्त्राधिपतिः ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ नमोऽर्हते.... अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ नमोऽर्हते....अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टकं

नाना मणि प्रचय से भासुर, कण्ठ युक्त अतिशय मनहार।
ताल कलित मल दिव्य तोय से, भरकर लाए हम भृंगार।।

जो संसार ताप विनिवारण, हेतु भूत है अपरम्पार।
परम यंत्र मृत्युञ्जय पूजें, विशद भाव से बारम्बार।।1।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ग लोक की ललनाएँ शुभ, श्रेष्ठ सरोरुह मूर्ति महान्।
कुमकुम और कर्पूर विमिश्रित, दिव्य गंध ले अतिशयवान।।
श्रेष्ठ गंध उपमान मुक्त शुभ, सर्वलोक में अपरम्पार।
परम यंत्र मृत्युञ्जय पूजें, विशद भाव से बारम्बार।।2।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध अंध षट्चरण सुसंस्कृत, झंवितांग है श्रेष्ठ महान्।
है कल्याण कीर्ति के सदृश, कमलाक्षत अति महिमावान।।
जो अक्षुण्ण मोक्ष सुख साधन, हेतु भूत हैं अपरम्पार।
परम यंत्र मृत्युञ्जय पूजें, विशद भाव से बारम्बार।।3।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ कंकेलि कुण्डकुट जोत्पल, कमल केतकी अतिशयकार।
श्रेष्ठ गंध जिसकी अनल्पतर, बंधुक पुष्प रहे मनहार।।
मुकुट माल्य आदि मरीचिका, दिव्यांगना सम अपरम्पार।
परम यंत्र मृत्युञ्जय पूजें, विशद भाव से बारम्बार।।4।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जग भक्ति अनुपम घृत उज्ज्वल, शाक पिण्ड है अतिशयवान।
अमृत पिण्ड विडम्ब भक्ष शुभ, सरस लिए नैवेद्य महान्।।
कांत विडम्बर कृत क्षम भाई, पल्य वक्त्र है अपरम्पार।
परम यंत्र मृत्युञ्जय पूजें, विशद भाव से बारम्बार।।5।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गांगुदीप्ति परिवर्जित क्या है, भानुचन्द्र का प्रखर प्रकाश।
मुकुलित कमल रहा उन्मुद्रित, रत्न दीप है अतिशय खास।।

भानुचन्द्र सम तेज सु गुम्फित, प्रभा पटल है अपरम्पार।
परम यंत्र मृत्युञ्जय पूजें, विशद भाव से बारम्बार।।6।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ वस्तु कालेयक आदि, के वितान से कर निर्माण।
गंधवती शुभ धूप अग्नि में, खेते हैं हम सर्व महान्।।
प्रखर कांति निर्जित है चञ्चल, इन्द्र भास्कर सम अविकार।
परम यंत्र मृत्युञ्जय पूजें, विशद भाव से बारम्बार।।7।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना रस युत पूर्ण सुगंधित, श्रेष्ठ वर्ण के फल मनहार।
जम्बू आम कपित्थ सुदाड़िम, पनस पूग द्राक्षा अविकार।।
श्रेष्ठ मनोरम फल अति सुंदर, चढ़ा रहे हम अपरम्पार।
परम यंत्र मृत्युञ्जय पूजें, विशद भाव से बारम्बार।।8।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध अक्षत ले अनुपम, ले नैवेद्य प्रदीप प्रजाल।
धूपादि फल अर्घ्य बनाकर, अर्घ्य चढ़ाते श्रेष्ठ त्रिकाल।।
स्वर्ग मोक्ष के भव्य सुखों का, एक बीज है अपरम्पार।
परम यंत्र मृत्युञ्जय पूजें, विशद भाव से बारम्बार।।9।।

ॐ आं क्रों सर्वापमृत्युञ्जयकराय सर्वशान्तिकराय रक्षा मृत्युञ्जयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंतर भूत शाकिनी डाकिन, किन्नरादि ग्रह पन्नग देव।
हो उत्पात किसी के द्वारा, शाश्वत शांत करो तुम एव।। *(शांतये शांतिधारा)*

यंत्रराज की पूजा करके, व्याधि भीति विष का हो नाश।
तुष्टि पुष्टि बल आयु विभूति, सुख-शांति का होय विकाश।।

(दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

ॐ सतत् वरयन्त्रात् शांतिरस्तु, समस्तव्याधिभीतिविषनाशनमस्तु।
तुष्टिपुष्टि-बलायुर्विभूतिवर्धनमस्तु सततं वरयन्त्रात्। (इत्याशीर्वादः)

अथ यंत्र स्तोत्रम्

दोहा- **पूर्वोपार्जित कर्म से, जीवन है उदभ्रांत।**
मृत्युञ्जय के जाप से, पीड़ा हो उपशांत।।1।।

(शम्भू छन्द)

गर्भ में आने के छह महिने, पूर्व इन्द्र देता आदेश।
रत्नवृष्टि शुभ नव महिने तक, धन कुबेर तुम करो विशेष।।
सोलह स्वप्न देखती माता, गर्भ समय में अपरम्पार।
अष्ट देवियाँ श्री आदि सब, सेवा करतीं बारम्बार।।2।।

अर्पित करें महामायामय, बालक ला माता के पास।
इन्द्र साथ में चऊ निकाय के, देव ऐरावत लाते खास।।
मेरु गिरि पर क्षीर नीर से, करते बालक का अभिषेक।
शची कुंकुमादि चर्चित कर, वंदन करती माथा टेक।।3।।

जब विरक्त होते विषयों से, स्तुति करते इन्द्र नरेन्द्र।
करें प्रशंसा लौकान्तिक भी, शिविका लाते श्रेष्ठ सुरेन्द्र।।
वन में जाकर वृक्ष के नीचे, दीक्षा धारण करते देव।
निजानंद अमृत को पीकर, निज में रहते लीन सदैव।।4।।

सद्दर्शन युत कृशाकृशाव्रत, सह उत्साह उचित स्थान।
धर्मध्यान से गलित आयु त्रय, अप्रमत्त पा गुणस्थान।।
दृष्टिघ्नातप साधारण चऊ, जाति त्रय निद्रा पहिचान।
सूक्ष्म स्थावर नरक तिर्यंच द्वय, उद्योत कषाय अष्ट यह मान।।5।।

देव नपुंसक स्त्री हास्यादि, पुरुषवेद त्रय नशे कषाय।
अनिवृत्ति के नव भागों में, दशे स्थान लोभ नश जाय।।

निद्रा प्रचला पूर्व समय में, ज्ञान दर्शनावरणान्तराय।
क्षीण कषाय के अंत समय में, नाश बनें अर्हत् जिनराय।।6।।

द्रव्यभावमय सूक्ष्म कषायी, हो वितर्क वीची से ध्यान।
व्यंजनार्थ मंगलमय जानो, हो पृथक्त्वीचारी ध्यान।।
कर्म संक्रमण करके मन से, प्राप्त किया एकत्त्वी ध्यान।
सब कर्मांश भेदने वाले, करते चेतन गुण रसपान।।7।।

मोहरिपु के नाशक पाते, यथाख्यात चारित्र महान्।
निर्विचार हो शुद्ध आत्मा, में विलसित हो करते ध्यान।।
उज्ज्वल स्वच्छ छलकते चित् का, पाकर के आनंद विशेष।
शेष कर्म अरि का गालन कर, बन जाते फिर आप जिनेश।।8।।

विश्वैश्वर्य विघाति घातिकर, सहजोच्छेदोदगतान्तक दर्श।
संविद वीर्य सुखात्मिक अनुपम, तीन लोक आकीर्णादर्श।।
जीवन मुक्त धर्म चक्राधिप, दयावान तीर्थाधिनाथ।
चौंतिस अतिशय प्रगटाये प्रभु, आठों प्रातिहार्य भी साथ।।9।।

देवों द्वारा प्रकट किए शुभ, परम उल्लसित लक्षण श्रेष्ठ।
श्रीयुत नित्य पाद युगलों में, नियुक्त किए हैं यक्ष यथेष्ट।।
यक्ष वृंद पहले से आकर, उचित व्यवस्था करें विशेष।
देवेन्द्रों के द्वारा पूजित, विस्मयकारी हुए जिनेश।।10।।

दो हैं गंध वर्ण रस बंधन, पञ्च शरीर और संघात।
छह संस्थान संहनन सुर द्विक, अगुरुलघु उच्छ्वासोपघात।।
अयशकीर्ति परघात अनादेय, सुस्वर शुभ स्थिर युग जान।
गमन गति द्वय स्पर्शाष्टक, प्रकृतियों की होती हान।।11।।

आंगोपांग तीन दुर्भगयुत, प्रत्येक नीच कुल अरु निर्माण।
सभी बहत्तर उपान्त्य समय में, अयोग केवली के सब आन।।
आनुपूर्वी आदेय इन्द्रियाँ, पञ्च यशःकीर्ति पर्याप्त।
सुभग उच्च कुल त्रस बादर शुभ, नाश अंत में बनते आप्त।।12।।

तीर्थंकर प्रकृति का वेदन, करते तेरहवें गुणस्थान।
निराकृत्य कर अन्य प्रकृतियाँ, पाते समुच्छिन्न क्रिया ध्यान।।
सम्यक्त्वादि अष्ट गुणों को, पाकर बनते जगत प्रधान।
ऊर्ध्वगमन कर एक समय में, बनते शीघ्र सिद्ध भगवान।।13।।

मुक्तिश्री को पाने वाले, चिदानंद को पाते नाथ।
इन्द्र मुकुट से अग्नि प्रज्ज्वलन, हेतू स्वयं झुकाते माथ।।
चंदनादि से तन का सुरगण, करते हैं अग्नि संस्कार।
भुवनाधीश प्रभु बन जाते, सिद्ध शिरोमणि मंगलकार।।14।।

बाह्याभ्यंतर से जिन स्वामी, सिद्धशिला के बनते ईश।
पूर्वाकार नित्य संस्थित जिन, हो जाते हैं पूज्य महीश।।
अमित काल तक शुद्ध सुखों का, करते हैं जो भोग महान्।
'आशाधर'[1] पाने श्रेयश सुख, दिव्य प्राप्त करने निर्वाण।।15।।

श्रेय मार्ग के ज्ञानहीन नर, भवज्वाला में दुःख सहें।
दीन-हीन हो भ्रमण करे जग, मोहित तन में सदा रहें।।
अर्हत् पद का रहा अनुग्रह, जिससे मिलता पुण्य निधान।
अर्हत् सिद्ध प्राप्त कर शिवपद, पाने वाले जीव महान्।।16।।

1. संस्कृत महामृत्युञ्जय विधान के रचयिता।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ प्रत्येक पूजा 'अ वर्ण'

सोरठा- 'अ' वर्णादि पूर्ण, बीजाक्षर अनुक्रम लिए।
महामंत्र परिपूर्ण, जल गंधादि से पूजते।।

अवर्णादि बीजाक्षर प्रत्येक पूजा प्रतिज्ञापनार्थं पुष्पाक्षतान् क्षिपेत्

'अ' वर्ण पूजा

जटा मुकुटधारी द्विज कुल में, जो उद्भूत पुरुषवत् ज्ञान।
चतुरानन जो है सुगंध युत, कनक कुण्डलोल्लसित महान्।।
एक लाख योजन तक विकसित, कूर्माङ्ग है जिसकी पहचान।
सकल अचिन्त्य सिद्धिदायक हम, भजें 'अ' वर्ण गुणों की खान।
चतुर्ज्ञान के धारी गणधर, ने कीन्हा जिसका व्याख्यान।
जैनागम के द्रव्यभाव श्रुत, का उर में करते आह्वान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्ण ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्ण ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्ण ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सुन्दरी छन्द

कलश जल से भर के लाए हैं, जन्मादि रोग नशाने आए हैं।
हृदय में हर्ष हमारे छाए हैं, विशद मुक्ति के भाव बनाए हैं।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर से गंध बनाए हैं, भव ताप नशाने को हम आए हैं।
हृदय में हर्ष हमारे छाए हैं, विशद मुक्ति के भाव बनाए हैं।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सु अक्षय श्रेष्ठ चढ़ाने लाए हैं, सुपद अक्षय को पाने आए हैं।
हृदय में हर्ष हमारे छाए हैं, विशद मुक्ति के भाव बनाए हैं।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प यह रंग-बिरंगे लाए हैं, काम का रोग नशाने आए हैं।
हृदय में हर्ष हमारे छाए हैं, विशद मुक्ति के भाव बनाए हैं।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस चरु यह श्रेष्ठ बनाए हैं, क्षुधा का रोग नशाने आए हैं।
हृदय में हर्ष हमारे छाए हैं, विशद मुक्ति के भाव बनाए हैं।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर के दीप जलाए हैं, मोह अंध के नाश हेतु आए हैं।
हृदय में हर्ष हमारे छाए हैं, विशद मुक्ति के भाव बनाए हैं।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप खेने अग्नि में लाए हैं, कर्म नाश करने हम आए हैं।
हृदय में हर्ष हमारे छाए हैं, विशद मुक्ति के भाव बनाए हैं।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस फल श्रेष्ठ चढ़ाने लाए हैं, मोक्ष महाफल पाने आए हैं।
हृदय में हर्ष हमारे छाए हैं, विशद मुक्ति के भाव बनाए हैं।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य से यह अर्घ्य बनाए हैं, पद अनर्घ पाने हम आए हैं।
हृदय में हर्ष हमारे छाए हैं, विशद मुक्ति के भाव बनाए हैं।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विष्णुपद छंद)

शास्त्र हस्त वस्त्रान्वित अनुपम, शुभ सुवर्ण जानो।
भूषणांग युत वाहन स्थित, पूज्य 'अ' वर्ण मानो।।
विघ्न निवारण हेतु सारे, करने पाप विनाश।
नीरादि वसुद्रव्य से अर्चा, करते आके पास।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत अ वर्णाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- आह्वानादि कर्मकर, पावे श्रेय महान्।
सर्व पूर्णता प्राप्त हो, शांति कांति हो आन।।

ॐ आं क्रों ह्रीं महामेरुसदृश...अवर्ण...नामधेयस्य...सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा।

।। शान्तिधारा ।।

'ध' वर्ण पूजा

विद्रुमभूषित अंग चतुर्भुज, गुग्गुल गंध हेम के साथ।
कृष्णानन त्रिलोचनधारी, वश्य हनी कहलाए साथ।।
अर्चनीय है हेम प्रभामय, वर्ण 'ध' कार गुणों की खान।
कहा भूत हर सिद्धि प्रदायक, करने वाला जो कल्याण।।
चतुर्ज्ञान के धारी गणधर, ने कीन्हा जिसका व्याख्यान।
जैनागम के द्रव्यभाव श्रुत, का उर में करते आह्वान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्ण ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्ण ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्ण ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सोरठा

देते जल की धार, जन्म-जरादि नाश हो।
पाने भव से पार, पूजा करते भाव से।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

लाए चंदन गार, भव आताप विनाश हो।
पाने भव से पार, पूजा करते भाव से।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत लिए निखार, अक्षय पद हमको मिले।
पाने भव से पार, पूजा करते भाव से।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प लिए शुभकार, कामबाण का नाश हो।
पाने भव से पार, पूजा करते भाव से।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्पित चरु मनहार, क्षुधा नशाने के लिए।
पाने भव से पार, पूजा करते भाव से।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप जला शिवकार, मोह नाश को लाए हैं।
पाने भव से पार, पूजा करते भाव से।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुगन्ध अपार, कर्म नाश को खेवते।
पाने भव से पार, पूजा करते भाव से।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल लाए रसदार, मोक्ष महापद के लिए।
पाने भव से पार, पूजा करते भाव से।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

लेके अर्घ्य सम्हार, पद अनर्घ के हेतु हम।
पाने भव से पार, पूजा करते भाव से।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विष्णुपद छंद)

शास्त्र हस्त वस्त्रान्वित अनुपम, शुभ सुवर्ण जानो।
भूषणांग युत वाहन स्थित, पूज्य 'ध' वर्ण मानो।।
विघ्न निवारण हेतु करने, सारे पाप विनाश।
नीरादि वसुद्रव्य से अर्चा, करते आके पास।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णवर्ण सर्वाभरणभूषित ध वर्णाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- आह्वानादि कर्मकर, पावे श्रेय महान्।
सर्व पूर्णता प्राप्त हो, शांति कांति हो आन।।

ॐ आं क्रों ह्रीं महामेरुसदृश...धवर्ण...नामधेयस्य...सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा।

।। शान्तिधारा ।।

'ठ' वर्ण पूजा

शशि शिखा उज्ज्वल किरीटमय, चूड़ामणि शत योजनवान।
विप्र प्रियम्बक उग्र गंधयुत, मिनस केतु रक्तांबर जान।।
श्वेत अंग पाशाङ्कुश आयुध, गगन मयूर है पुरुषाकार।
भवभीति सब विघ्न विनाशक, दक्ष रहा शुभ वर्ण 'ठ' कार।।
चतुर्ज्ञान के धारी गणधर, ने कीन्हा जिसका व्याख्यान।
जैनागम के द्रव्यभाव श्रुत, का उर में करते आह्वान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शशिधरवर्ण शशिचूड़ामणि किरीटालंकृत ठ वर्ण ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।

ॐ आं क्रों ह्रीं शशिधरवर्ण शशिचूड़ामणि किरीटालंकृत ठ वर्ण ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ आं क्रों ह्रीं शशिधरवर्ण शशिचूड़ामणि किरीटालंकृत ठ वर्ण ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(भुजंग प्रयाद)

यमुना नदी से जल निर्मल भराए, जन्मादि रोगों के नाशन को आए।
करते हैं पूजा हम भव तापहारी, जीवन बने मेरा शिव सौख्यकारी।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केसर में चन्दन घिसकर के लाए, भव ताप का नाश करने हम आए।
करते हैं पूजा हम भव तापहारी, जीवन बने मेरा शिव सौख्यकारी।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत ये अक्षय हमने धुवाए, अक्षय सुपद पाने हेतु हम आए।
करते हैं पूजा हम भव तापहारी, जीवन बने मेरा शिव सौख्यकारी।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

थाली में सुन्दर सुमन भरके लाए, रतिदोष को नाश करने हम आए।
करते हैं पूजा हम भव तापहारी, जीवन बने मेरा शिव सौख्यकारी।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य रसदार हमने बनाए, क्षुधारोग के नाश हेतु हम आए।
करते हैं पूजा हम भव तापहारी, जीवन बने मेरा शिव सौख्यकारी।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों के दीपक शुभ हमने जलाए, मोहान्ध का नाश करने हम आए।
करते हैं पूजा हम भव तापहारी, जीवन बने मेरा शिव सौख्यकारी।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में धूप यह खेने को लाए, आठों करम नाश करने हम आए।
करते हैं पूजा हम भव तापहारी, जीवन बने मेरा शिव सौख्यकारी।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे सरस फल चढ़ाने को लाए, महामोक्षफल प्राप्त करने हम आए।
करते हैं पूजा हम भव तापहारी, जीवन बने मेरा शिव सौख्यकारी।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य आठों हमने चंपावन मिलाए, पाने अनर्घ पद हम भी तो आए।
करते हैं पूजा हम भव तापहारी, जीवन बने मेरा शिव सौख्यकारी।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विष्णुपद छंद)

शास्त्र हस्त वस्त्रान्वित अनुपम, शुभ सुवर्ण जानो।
भूषणांग युत वाहन स्थित, पूज्य 'ठ' वर्ण मानो।।
विघ्न निवारण हेतु सारे, करने पाप विनाश।
नीरादि वसुद्रव्य से अर्चा, करते आके पास।।

ॐ आं क्रों ह्रीं रक्ताम्बराभरणभूषिताय ठ वर्णाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- आह्वानादि कर्मकर, पावे श्रेय महान्।
सर्व पूर्णता प्राप्त हो, शांति कांति हो आन।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शशिधरवर्ण मयूरस्थित ठवर्ण द्वितीयस्थानस्थित ठ बीज.. नामधेयस्य...सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा।

।। शान्तिधारा।।

'ह' वर्ण पूजा

सर्वाभरण विभूषित अनुपम, जो प्रसन्न हृदयी सुखकार।
कहा गया स्तम्भस्तोदक्षत, अर्चनीय है वर्ण 'ह' कार।।
चतुर्ज्ञान के धारी गणधर, ने कीन्हा जिसका व्याख्यान।
जैनागम के द्रव्यभाव श्रुत, का उर में करते आह्वान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्ण ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्ण ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्ण ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टकं

हम निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादि रोग नशाएँ।
अब भव का भ्रमण नशाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चन्दन श्रेष्ठ घिसाएँ, भव का संताप नशाएँ।
अब भव का भ्रमण नशाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षत श्रेष्ठ चढ़ाएँ, शुभ अक्षत पद हम पाएँ।
अब भव का भ्रमण नशाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम सुरभित पुष्प चढ़ाएँ, रतिदोष से मुक्ति पाएँ।
अब भव का भ्रमण नशाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सरस बनवाएँ, अपनी हम क्षुधा नशाएँ।
अब भव का भ्रमण नशाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम घृत के दीप जलाएँ, सब मोह-तिमिर विनशाएँ।
अब भव का भ्रमण नशाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में धूप जलाएँ, आठों ही कर्म नशाएँ।
अब भव का भ्रमण नशाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सुन्दर सरस चढ़ाएँ, फिर मोक्ष महाफल पाएँ।
अब भव का भ्रमण नशाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अनुपम अर्घ्य बनाएँ, शुभ पद अनर्घ्य पा जाएँ।
अब भव का भ्रमण नशाएँ, इस भव से मुक्ति पाएँ।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विष्णुपद छंद)

शास्त्र हस्त वस्त्रान्वित अनुपम, शुभ सुवर्ण जानो।
भूषणांग युत वाहन स्थित, पूज्य 'ह' वर्ण मानो।।
विघ्न निवारण हेतु सारे, करने पाप विनाश।
नीरादि वसुद्रव्य से अर्चा, करते आके पास।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह वर्णाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- आह्वानादि कर्मकर, पावे श्रेय महान्।
सर्व पूर्णता प्राप्त हो, शांति कांति हो आन।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पुण्डरीकनिभ वज्राभरणभूषित ह बीज..... नामधेयस्य.....सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा। ।। शान्तिधारा।।

'क्ष' वर्ण पूजा

गदा शंख खेटाब्ज बाण हल, खड्ग चक्रमूसल त्रिशूल।
शक्त्यांकुश कोदण्ड पासकर, विपुल वज्र षोडश भुज मूल।।
भानु तेज झट मुकुट किरीटयुत, हेम अंग वनतेयारूढ़।
त्रिभुवन निलय राजान्वय स्थित, पूज्य वर्ण 'क्ष' बीज है गूढ़।।
चतुर्ज्ञान के धारी गणधर, ने कीन्हा जिसका व्याख्यान।
जैनागम के द्रव्यभाव श्रुत, का उर में करते आह्वान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण गरुडपृष्ठाधिष्ठित षोडश भुजालंकृत क्ष बीज ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण गरुडपृष्ठाधिष्ठित षोडश भुजालंकृत क्ष बीज ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण गरुडपृष्ठाधिष्ठित षोडश भुजालंकृत क्ष बीज ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

चौपाई

प्रासुक निर्मल नीर भराए, नाश हेतु जन्मादि आए।
भक्ति जग में रही निराली, शुभ सौभाग्य जगाने वाली।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णविभूषित क्ष बीजाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगन्धित चन्दन लाएँ, भव आताप नशाने आएँ।
भक्ति जग में रही निराली, शुभ सौभाग्य जगाने वाली।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णविभूषित क्ष बीजाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धोकर अक्षय अक्षत लाएँ, अक्षय पद पाने हम आएँ।
भक्ति जग में रही निराली, शुभ सौभाग्य जगाने वाली।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णविभूषित क्ष बीजाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मनहर पुष्प चढ़ाने लाएँ, काम नाश करने हम आएँ।
भक्ति जग में रही निराली, शुभ सौभाग्य जगाने वाली।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णविभूषित क्ष बीजाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सरस नैवेद्य बनाएँ, क्षुधा नशाने को हम आएँ।
भक्ति जग में रही निराली, शुभ सौभाग्य जगाने वाली।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णविभूषित क्ष बीजाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतमय मनहर दीप जलाएँ, मोह नशाने को हम आएँ।
भक्ति जग में रही निराली, शुभ सौभाग्य जगाने वाली।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णविभूषित क्ष बीजाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अग्नि में खेने लाएँ, आठों कर्म नशाने आएँ।
भक्ति जग में रही निराली, शुभ सौभाग्य जगाने वाली।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णविभूषित क्ष बीजाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल के थाल भराएँ, मोक्ष महाफल पाने आएँ।
भक्ति जग में रही निराली, शुभ सौभाग्य जगाने वाली।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णविभूषित क्ष बीजाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य से अर्घ्य बनाएँ, पद अनर्घ्य चढ़ाने को आएँ।
भक्ति जग में रही निराली, शुभ सौभाग्य जगाने वाली।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णविभूषित क्ष बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विष्णुपद छंद)

शास्त्र हस्त वस्त्रान्वित अनुपम, शुभ सुवर्ण जानो।
भूषणांग युत वाहन स्थित, पूज्य 'ध' वर्ण मानो।।
विघ्न निवारण हेतु सारे, करने पाप विनाश।
नीरादि वसुद्रव्य से अर्चा, करते आके पास।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्णविभूषित क्ष बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- आह्वानादि कर्मकर, पावे श्रेय महान्।
सर्व पूर्णता प्राप्त हो, शांति कांति हो आन।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण षोडशभुजालंकृत क्ष बीज..... नामधेयस्य... सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा। *।। शान्तिधारा ।।*

अथ सकल स्वर पूजा

जो कुदोदभहि है स्थानगत, अनुपम शांत रहे मनहार।
शंख चंद सम शांत वर्ण सब, सर्वलोक में मंगलकार।।
दुष्ट ग्रहों के उच्चाटन में, बीज वर्ण हैं कुशल महान्।
सकल स्वरों का स्थापन कर, करते हैं उर में आह्वान।।
चतुर्ज्ञान के धारी गणधर ने, कीन्हा जिसका व्याख्यान।
जैनागम के द्रव्यभाव श्रुत का, उर में करते आह्वान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी-डाकिनी-भूत-व्यन्तर-पिशाच-राक्षस-ग्रहयूथच्छेदन-भेदन-ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वर ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी-डाकिनी-भूत-व्यन्तर-पिशाच-राक्षस-ग्रहयूथच्छेदन-भेदन-ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वर ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी-डाकिनी-भूत-व्यन्तर-पिशाच-राक्षस-ग्रहयूथच्छेदन-भेदन-ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वर ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सुखमा छन्द

निर्मल जल से पूजा रचाएँ, जन्म-जरादि रोग नशाएँ।
भक्ति में मन रमे हमारा, शिव पथ का जो बने सहारा।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी-डाकिनी-भूत-व्यन्तर-पिशाच-राक्षस-ग्रहयूथच्छेदन-भेदन-ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वराय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन जल के साथ मिलाए, भव आताप नाश हो जाए।
भक्ति में मन रमे हमारा, शिव पथ का जो बने सहारा।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी-डाकिनी-भूत-व्यन्तर-पिशाच-राक्षस-ग्रहयूथच्छेदन-भेदन-ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वराय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय यहाँ चढ़ाने लाए, अक्षय पद हमको मिल जाए।
भक्ति में मन रमे हमारा, शिव पथ का जो बने सहारा।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी-डाकिनी-भूत-व्यन्तर-पिशाच-राक्षस-ग्रहयूथच्छेदन-भेदन-ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वराय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भाँति-भाँति फूल मँगाएँ, काम दोष मेरा नश जाए।
भक्ति में मन रमे हमारा, शिव पथ का जो बने सहारा।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी-डाकिनी-भूत-व्यन्तर-पिशाच-राक्षस-ग्रहयूथच्छेदन-भेदन-ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वराय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के शुभ नैवेद्य बनाएँ, क्षुधा नशाने हम भी आएँ।
भक्ति में मन रमे हमारा, शिव पथ का जो बने सहारा।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी-डाकिनी-भूत-व्यन्तर-पिशाच-राक्षस-ग्रहयूथच्छेदन-भेदन-ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वराय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के जगमग दीप जलाएँ, मोह-तिमिर नाशी कहलाएँ।
भक्ति में मन रमे हमारा, शिव पथ का जो बने सहारा।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी-डाकिनी-भूत-व्यन्तर-पिशाच-राक्षस-ग्रहयूथच्छेदन-भेदन-ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वराय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अग्नि में खेने लाए, कर्मों से मुक्ति मिल जाए।
भक्ति में मन रमे हमारा, शिव पथ का जो बने सहारा।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी-डाकिनी-भूत-व्यन्तर-पिशाच-राक्षस-ग्रहयूथच्छेदन-भेदन-ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वराय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि थाल भराएँ, मोक्ष महापद पाने आएँ।
भक्ति में मन रमे हमारा, शिव पथ का जो बने सहारा।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी-डाकिनी-भूत-व्यन्तर-पिशाच-राक्षस-ग्रहयूथच्छेदन-भेदन-ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वराय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाएँ, पद अनर्घ्य पाने हम आएँ।
भक्ति में मन रमे हमारा, शिव पथ का जो बने सहारा।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी-डाकिनी-भूत-व्यन्तर-पिशाच-राक्षस-ग्रहयूथच्छेदन-भेदन-ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विष्णुपद छंद)

सर्व कर्म व्याधि विनाश में, जो समर्थ जानो।
सब भूतारि के नाशक स्वर, नमूँ श्रेष्ठ मानो।।
विघ्न निवारण हेतु सारे, करने पाप विनाश।
नीरादि वसुद्रव्य से अर्चा, करते आके पास।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी-डाकिनी-भूत-व्यन्तर-पिशाच-राक्षस-ग्रहयूथच्छेदन-भेदन-ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- आह्वानादि कर्मकर, पावे श्रेय महान्।
सर्व पूर्णता प्राप्त हो, शांति कांति हो आन।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्रवर्ण सर्वाभरणभूषित शाकिनी-डाकिनी-भूत-व्यन्तर-पिशाच-राक्षस-ग्रहयूथच्छेदन-भेदन-ताडनकर्म समर्थाक्षर सकल स्वर.....नामधेयस्य...सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा। *।। शान्तिधारा ।।*

अथ ॐकार पूजा

पद्म सुगंधित पर पद्मासन, श्रेष्ठ वर्ण परमात्म स्वरूप।
कोटि सूर्य चन्द्र सम उज्ज्वल, शोभित होता जिसका रूप।।
स्व अभीष्ट फल सिद्धिदायक, प्रणव बीज है शुभ ॐकार।
अर्चा करते भक्ति भाव से, हृदय सजाते बारम्बार।।
चतुर्ज्ञान के धारी गणधर ने, कीन्हा जिसका व्याख्यान।
जैनागम के द्रव्यभाव श्रुत का, उर में करते आह्वान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पंचवर्णान्वित ॐकार बीज ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।

ॐ आं क्रों ह्रीं पंचवर्णान्वित ॐकार बीज ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं पंचवर्णान्वित ॐकार बीज ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द-मोतिया दाम)

भराया हमने निर्मल नीर, मिटे जन्मादि जरा की पीर।
करे जो भक्ति से गुणगान, मिले उनको भी पद निर्वाण।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योतिः स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मिलाकर केसर लाए नीर, मिटाने को भव-भव पीर।
करे जो भक्ति से गुणगान, मिले उनको भी पद निर्वाण।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योतिः स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धुवाए अक्षत यहाँ महान्, प्राप्त अक्षय पद हो भगवान।
करे जो भक्ति से गुणगान, मिले उनको भी पद निर्वाण।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योतिः स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुगन्धित चढ़ा रहे हम फूल, काम हो मेरा भी निर्मूल।
करे जो भक्ति से गुणगान, मिले उनको भी पद निर्वाण।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योतिः स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस नैवेद्य बनाए खास, क्षुधा हो मेरी पूर्ण विनाश।
करे जो भक्ति से गुणगान, मिले उनको भी पद निर्वाण।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योतिः स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमय लाए दीप प्रजाल, नशे मम पूर्ण मोह का जाल।
करे जो भक्ति से गुणगान, मिले उनको भी पद निर्वाण।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योतिः स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जलाते अग्नि में हम धूप, कर्म नाश पाने जिन स्वरूप।
करे जो भक्ति से गुणगान, मिले उनको भी पद निर्वाण।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योतिः स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस फल लाए यहाँ महान्, मोक्षपद पाने को निर्वाण।
करे जो भक्ति से गुणगान, मिले उनको भी पद निर्वाण।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योतिः स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

बनाया सब द्रव्यों से अर्घ्य, चढ़ाके पाएँ सुपद अनर्घ्य।
करे जो भक्ति से गुणगान, मिले उनको भी पद निर्वाण।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योतिः स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

नीर सुगंधित गंध सु सुरभित, श्वेताक्षर शुभ पुष्प प्रधान।
चरु श्रेष्ठ ले दीप निकर शुभ, धूप और फल अर्घ्य महान्।।
शुभ्र सु उज्ज्वल शुभ देहामृत, त्रैलोकेश्वर शांत अपार।
पञ्च ब्रह्ममय सर्व पवन शुभ, का आराधक अपरम्पार।।
ॐ बीज सुख सार्ध सिद्ध शुभ, अर्हत् कथिताक्षर शुभ मंत्र।
पूर्णकाम स्वर नमूँ काम हर, मुनि गणधरयुत ध्येय सुयंत्र।।

ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योतिः स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकाराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- आह्वानादि कर्मकर, पावे श्रेय महान्।
सर्व पूर्णता प्राप्त हो, शांति कांति हो आन।।

ॐ आं क्रों ह्रीं परंज्योतिः स्वरूपानन्तचतुष्टयात्मकाय ॐकार.... नामधेयस्य...सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा। *।। शान्तिधारा ।।*

'क्षी' बीज वर्ण पूजा

सुर गंधर्व यक्ष अरु राक्षस, ब्रह्म सुराक्षस आदि देव।
क्षितिमण्डल के मध्य श्रेष्ठ 'क्षी,' बीज वर्ण है पूज्य सदैव।।
चतुर्ज्ञान के धारी गणधर ने, कीन्हा जिसका व्याख्यान।
जैनागम के द्रव्यभाव श्रुत, का उर में करते आह्वान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीज ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीज ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीज ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

शेर छन्द

प्रासुक शुभ नीर से त्रय धार कराएँ, हम जन्मादि रोगों से मुक्ति पाएँ।
जागें अरि सौभाग्य सुख-शांति जगाएँ, कर्मों को नाश करके हम शिवपुर जाएँ।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीजाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केसर को चंदन के संग घिसाएँ, भवाताप नाश करके हम मुक्ति पाएँ।
जागें अरि सौभाग्य सुख-शांति जगाएँ, कर्मों को नाश करके हम शिवपुर जाएँ।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीजाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तन्दुल के स्वच्छ अनुपम शुभ थाल भराएँ, अक्षय सुपद को पाएँ न जग में भ्रमाएँ।
जागें अरि सौभाग्य सुख-शांति जगाएँ, कर्मों को नाश करके हम शिवपुर जाएँ।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीजाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित सुगन्धित शुभ पुष्प मँगाएँ, कामरोग अपना हम भी तो नशाएँ।
जागें अरि सौभाग्य सुख-शांति जगाएँ, कर्मों को नाश करके हम शिवपुर जाएँ।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीजाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुपम नैवेद्य के शुभ हम थाल भराएँ, क्षुधा रोग नाश करके मुक्ति पाएँ।
जागें अरि सौभाग्य सुख-शांति जगाएँ, कर्मों को नाश करके हम शिवपुर जाएँ।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीजाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय कपूर के शुभ हम दीप जलाएँ, मोह महाअंध नाश शिवपद पाएँ।
जागें अरि सौभाग्य सुख-शांति जगाएँ, कर्मों को नाश करके हम शिवपुर जाएँ।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीजाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गंध युक्त धूप खेने लाए, कर्म नाश करने के भाव बनाएँ।
जागें अरि सौभाग्य सुख-शांति जगाएँ, कर्मों को नाश करके हम शिवपुर जाएँ।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीजाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सरस फल के शुभ थाल भराए, मोक्ष महाफल हम भी पाने आए।
जागें अरि सौभाग्य सुख-शांति जगाएँ, कर्मों को नाश करके हम शिवपुर जाएँ।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीजाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य से हमने अर्घ्य बनाए, पद अनर्घ्य पाने के भाव जगाएँ।
जागें अरि सौभाग्य सुख-शांति जगाएँ, कर्मों को नाश करके हम शिवपुर जाएँ।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विष्णुपद छंद)

शास्त्र हस्त वस्त्रान्वित अनुपम, शुभ सुवर्ण जानो।
भूषणांग युत वाहन स्थित, पूज्य 'क्षी' वर्ण मानो।।
विघ्न निवारण हेतु सारे, करने पाप विनाश।
नीरादि वसुद्रव्य से अर्चा, करते आके पास।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- आह्वानादि कर्मकर, पावे श्रेय महान्।
सर्व पूर्णता प्राप्त हो, शांति कांति हो आन।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हेमवर्ण क्षी बीज..... नामधेयस्य.... सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा।

।। शान्तिधारा ।।

अथ 'ल' बीज वर्ण पूजा

कृष्ण दक्ष सभाद्य कहा है, शुभ सल्लक्ष योजनादर्घ्य।
क्षिति मण्डल कोणस्थ बीज 'ल', को पूजें हम देने अर्घ्य।।
चतुर्ज्ञान के धारी गणधर ने, कीन्हा जिसका व्याख्यान।
जैनागम के द्रव्यभाव श्रुत का, उर में करते आह्वान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीज ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीज ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीज ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सखी छन्द

जल की भर लाए झारी, त्रय रोग नशावन कारी।
हम भक्ति में रम जाएँ, अपने सौभाग्य जगाएँ।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीजाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाएँ, भव का संताप नशाएँ।
हम भक्ति में रम जाएँ, अपने सौभाग्य जगाएँ।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीजाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अक्षय अक्षत लाए, अक्षय पद पाने आए।
हम भक्ति में रम जाएँ, अपने सौभाग्य जगाएँ।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीजाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह सुरभित पुष्प मँगाए, रति दोष नशाने आएँ।
हम भक्ति में रम जाएँ, अपने सौभाग्य जगाएँ।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीजाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सरस बनवाए, हम क्षुधा नशाने आए।
हम भक्ति में रम जाएँ, अपने सौभाग्य जगाएँ।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीजाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह मंगल दीप जलाएँ, अब मोह नशाने आएँ।
हम भक्ति में रम जाएँ, अपने सौभाग्य जगाएँ।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीजाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पावन धूप जलाएँ, अब आठों कर्म नशाएँ।
हम भक्ति में रम जाएँ, अपने सौभाग्य जगाएँ।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीजाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ताजे सरस मँगाएँ, हम मोक्ष महाफल पाएँ।
हम भक्ति में रम जाएँ, अपने सौभाग्य जगाएँ।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीजाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अनुपम अर्घ्य चढ़ाएँ, फिर पद अनर्घ्य पा जाएँ।
हम भक्ति में रम जाएँ, अपने सौभाग्य जगाएँ।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विष्णुपद छंद)

शास्त्र हस्त वस्त्रान्वित अनुपम, शुभ सुवर्ण जानो।
भूषणांग युत वाहन स्थित, पूज्य 'ल' वर्ण मानो।।
विघ्न निवारण हेतु सारे, करने पाप विनाश।
नीरादि वसुद्रव्य से अर्चा, करते आके पास।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कनकवर्ण चतुर्भुजालंकृत ल बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- आह्वानादि कर्मकर, पावे श्रेय महान्।
सर्व पूर्णता प्राप्त हो, शांति कांति हो आन।।

ॐ आं क्रों ह्रीं महामेरुसदृश ल वर्ण..... नामधेयस्य...सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा।

।। शान्तिधारा ।।

अथ 'व' बीज वर्ण पूजा

कलायुक्त कोमल काय कांति, अंग विभूषित शक्तिवान।
अर्चनीय द्विअष्ट पत्र 'व', कर्मानन्तपति गुणवान।।
चतुर्ज्ञान के धारी गणधर, ने कीन्हा जिसका व्याख्यान।
जैनागम के द्रव्यभाव श्रुत का, उर में करते आह्वान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीज ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीज ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीज ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पद्धडी छंद)

जल की हम देते तीन धार, अब जन्मादि से मिले पार।
हम निज आतम का करें ध्यान, अब जागे मेरा विशद ज्ञान।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीजाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन अर्पित करते सुवास, अब भवाताप का हो विनाश।
हम निज आतम का करें ध्यान, अब जागे मेरा विशद ज्ञान।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीजाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत लाए महान्, पद प्राप्त होय अक्षय महान्।
हम निज आतम का करें ध्यान, अब जागे मेरा विशद ज्ञान।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीजाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ाते हैं महान्, हो रतिदोष की पूर्ण हान।
हम निज आतम का करें ध्यान, अब जागे मेरा विशद ज्ञान।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीजाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाते यह विशेष, मम क्षुधा नाश होये अशेष।
हम निज आतम का करें ध्यान, अब जागे मेरा विशद ज्ञान।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीजाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का दीपक ले प्रजाल, अब करे मोह का पूर्व जाल।
हम निज आतम का करें ध्यान, अब जागे मेरा विशद ज्ञान।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीजाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम धूप हुतासन में महान्, खेते करने को कर्म हान।
हम निज आतम का करें ध्यान, अब जागे मेरा विशद ज्ञान।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीजाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चढ़ा रहे फल यहाँ आज, अब मोक्ष महल का मिले ताज।
हम निज आतम का करें ध्यान, अब जागे मेरा विशद ज्ञान।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीजाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अब चढ़ा रहे हैं यहाँ अर्घ्य, हो प्राप्त मुझे भी पद अनर्घ्य।
हम निज आतम का करें ध्यान, अब जागे मेरा विशद ज्ञान।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

सर्वाभरण विभूषित अनुपम, जो प्रसन्न हृदयी सुखकार।
सर्व विघ्न शांति कारक 'व', पूज्यनीय है मंगलकार।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त वकार बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- आह्वानादि कर्मकर, पावे श्रेय महान्।
सर्व पूर्णता प्राप्त हो, शांति कांति हो आन।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त व बीज..... नामधेयस्य.....सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा। *।। शान्तिधारा ।।*

अथ 'र' बीज वर्ण पूजा

कलायुक्त कोमल काय कांति, अंग विभूषित शक्तिवान।
अर्चनीय द्विअष्ट पत्र 'र', कर्मानन्तपति गुणखान।।
चतुर्ज्ञान के धारी गणधर, ने कीन्हा जिसका व्याख्यान।
जैनागम के द्रव्यभाव श्रुत का, उर में करते आह्वान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीज ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीज ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीज ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अडिल्य छंद)

निर्मल जल प्रासुक करके हम लाए हैं, जन्म-जरादि रोग नशाने को आए हैं।
मृत्यु को जीत मृत्युञ्जय जिनेन्द्र हो गये, कर्म आपने विशद ज्ञान से क्षए।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केसर घिसकर के लाए हैं, भवाताप नशाने को हम भी तो आए हैं।
मृत्यु को जीत मृत्युञ्जय जिनेन्द्र हो गये, कर्म आपने विशद ज्ञान से क्षए।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक जल से अक्षत श्रेष्ठ धुवाए हैं, अक्षय पद पाने को यहाँ चढ़ाएँ हैं।
मृत्यु को जीत मृत्युञ्जय जिनेन्द्र हो गये, कर्म आपने विशद ज्ञान से क्षए।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

रंग-बिरंगे पुष्प रंगा करके लाए हैं, काम रोग को यहाँ नशाने आए हैं।
मृत्यु को जीत मृत्युञ्जय जिनेन्द्र हो गये, कर्म आपने विशद ज्ञान से क्षए।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घी बूरा से यह नैवेद्य बनाए हैं, क्षुधा नशाने आज यहाँ हम आए हैं।
मृत्यु को जीत मृत्युञ्जय जिनेन्द्र हो गये, कर्म आपने विशद ज्ञान से क्षए।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घी के दीपक हमने यहाँ जलाएँ हैं, मोह-तिमिर के नाश हेतु यहाँ लाए हैं।
मृत्यु को जीत मृत्युञ्जय जिनेन्द्र हो गये, कर्म आपने विशद ज्ञान से क्षए।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खेने को यह धूप अग्नि में लाए हैं, अष्ट कर्म के नाश हेतु हम आए हैं।
मृत्यु को जीत मृत्युञ्जय जिनेन्द्र हो गये, कर्म आपने विशद ज्ञान से क्षए।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भाँति-भाँति के फल से थाल भराए हैं, मोक्ष महाफल पाने यहाँ चढ़ाएँ हैं।
मृत्यु को जीत मृत्युञ्जय जिनेन्द्र हो गये, कर्म आपने विशद ज्ञान से क्षए।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य से अर्घ्य बनाकर लाए हैं, पद अनर्घ्य पाने जिनपद में आए हैं।
मृत्यु को जीत मृत्युञ्जय जिनेन्द्र हो गये, कर्म आपने विशद ज्ञान से क्षए।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

सर्वाभरण विभूषित अनुपम, जो प्रसन्न हृदयी सुखकार।
सर्व विघ्न शांति कारक 'र' पूज्यनीय है मंगलकार।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- आह्वानादि कर्मकर, पावे श्रेय महान्।
सर्व पूर्णता प्राप्त हो, शांति कांति हो आन।।

ॐ आं क्रों ह्रीं षोडशकलायुक्त र बीज..... नामधेयस्य.....सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा। *।। शान्तिधारा ।।*

अथ 'फ' बीज वर्ण पूजा

कलायुक्त कोमल काय कांति, अंग विभूषित शक्तिवान।
अर्चनीय द्विअष्ट पत्र 'फ', कर्मानन्तपति गुणखान।।
चतुर्ज्ञान के धारी गणधर, ने कीन्हा जिसका व्याख्यान।
जैनागम के द्रव्यभाव श्रुत, का उर में करते आह्वान।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीज ! अत्र एहि-एहि संवौषट् आह्वाननं।
ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीज ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीज ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सृग्विणी छन्द

नीर यह कूप का श्रेष्ठ भर लाए हैं, रोग त्रय नाश करने हम आए हैं।
हे महाभूतपति आप गणाधीश हो, नाथ तीन लोक के प्रभु महावीर हो।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध यह सुगन्धमय आज यहाँ लाए हैं, भवाताप नाश हेतु भाव से आए हैं।
हे महाभूतपति आप गणाधीश हो, नाथ तीन लोक के प्रभु महावीर हो।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ यह अक्षय अखण्ड शुभ लाए हैं, अक्षय पद पाने को आज यहाँ आए हैं।
हे महाभूतपति आप गणाधीश हो, नाथ तीन लोक के प्रभु महावीर हो।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प यह सुगन्धित अर्चना को लाए हैं, कामबाण नाश हेतु थाल में सजाए हैं।
हे महाभूतपति आप गणाधीश हो, नाथ तीन लोक के प्रभु महावीर हो।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मिष्ठ यह नैवेद्य शुभ सद्य ही बनाए हैं, क्षुधारोग नाश हेतु अर्चना को लाए हैं।
हे महाभूतपति आप गणाधीश हो, नाथ तीन लोक के प्रभु महावीर हो।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घी के शुभ दीप यह रत्नमय जलाएँ हैं, मोह ताप नाश हेतु आज यहाँ आए हैं।
हे महाभूतपति आप गणाधीश हो, नाथ तीन लोक के प्रभु महावीर हो।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गंधयुक्त शुभ धूप ये जलाएँ हैं, अष्टकर्म नाश हेतु धूप शुभ उड़ाए हैं।
हे महाभूतपति आप गणाधीश हो, नाथ तीन लोक के प्रभु महावीर हो।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मिष्ठ फल श्रेष्ठ यह थाल में भराए हैं, महामोक्षफल प्राप्ति हेतु ये लाए हैं।
हे महाभूतपति आप गणाधीश हो, नाथ तीन लोक के प्रभु महावीर हो।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य को मिलाके अर्घ्य ये बनाए हैं, पद अनर्घ्य प्राप्ति हेतु आज यहाँ आए हैं।
हे महाभूतपति आप गणाधीश हो, नाथ तीन लोक के प्रभु महावीर हो।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

सर्वाभरण विभूषित अनुपम, जो प्रसन्न हृदयी सुखकार।
सर्व विघ्न शांति कारक 'फ' पूज्यनीय है मंगलकार।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीजाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- आह्वानादि कर्मकर, पावे श्रेय महान्।
सर्व पूर्णता प्राप्त हो, शांति कांति हो आन।।

ॐ आं क्रों ह्रीं कलायुक्त फ वर्ण बीज..... नामधेयस्य.....सर्वशांतिं विधेहि स्वाहा। *।। शान्तिधारा ।।*

अथ मण्डलस्योपरि दिग्पालार्चनम्

(शम्भू छन्द)

इन्द्राग्नि यम नैऋत वारुण, पवन कुबेर इन्द्र ईशान।
है धरणेन्द्र अधो का पालक, सोम ऊर्ध्व का रहा महान्।।
पूर्वादि दिश के देवों का, करते हैं हम आह्वान।
श्री जिनेन्द्र की पूजा वंदन, मिलकर करें सभी अर्चन।।

(दिग्पाल पूजा विधानाय पुष्पाक्षतान् क्षिपेत्)

गजारुढ़ हो पूर्व दिशा से, शचि इन्द्र कई साथ महान्।
अक्षत शस्त्र कोटि ले हाथों, शोभित होता सूर्य महान्।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, दिक्सुरेन्द्र का आह्वान।
पूर्व दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे इन्द्रदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं इन्द्रदेव ! इदं अर्घ्यं पाद्यं...गृहाण-गृहाण स्वाहा।

शुभ दैदीप्यमान ज्वालायुत, आग्नेय से अग्निदेव।
तीव्र फुलिगें उठती जिसमें, शक्ति हस्त से युक्त सदैव।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, अग्नि इन्द्र का है आह्वान।
आग्नेय के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे आग्नेय देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं आग्नेय देव ! इदं अर्घ्यं पाद्यं...गृहाण-गृहाण स्वाहा।

सुभट प्रचण्ड दण्ड बाहुयुत, चण्डान्वित मुद्दण्ड कोदण्ड।
छाया कटाक्षद्यति भासमान शुभ, लोलाय बाहयत श्रेष्ठ अखण्ड।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, सुर चमरेन्द्र का है आह्वान।
दक्षिण दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे यमदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे यमदेव ! इदं अर्घ्यं पाद्यं...गृहाण-गृहाण स्वाहा।

ऋक्ष देह व्यंजित ऋक्षाक्षत, रत्न कांति सम आभावान।
ऋक्षारुढ़ अस्त्र मुद्गर ले, अतिशय उज्ज्वल कांतिमान।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, नैऋत्य देव का है आह्वान।
नैऋत्य दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे नैऋत देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे नैऋत देव ! इदं अर्घ्यं पाद्यं...गृहाण-गृहाण स्वाहा।

मकरारुढ़ अस्त्र परिवेष्टित, नागपाश ले अपने साथ।
मुक्तामय कल्पित है अनुपम, सुन्दर द्रव्य लिए हैं हाथ।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, वरुण देव का है आह्वान।
पश्चिम दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे वरुण देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे वरुण देव ! इदं अर्घ्यं पाद्यं...गृहाण-गृहाण स्वाहा।

महामहिज आयुध ले हाथों, अश्वारुढ़ शक्तिधारी।
वायुवेग विलास भूषान्वित, वायव्यकोण का अधिकारी।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, पवनइन्द्र का है आह्वान।
वायव्य दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे पवन देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पवन देव ! इदं अर्घ्यं पाद्यं...गृहाण-गृहाण स्वाहा।

रत्नोज्ज्वल पुष्पों से शोभित, देवि धनादि को ले साथ।
उत्तर से विमान पर चढ़कर, धनद कई इन्द्रों का नाथ।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, है कुबेर का शुभ आह्वान।
उत्तर दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे कुबेर देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे कुबेर देव ! इदं अर्घ्यं पाद्यं...गृहाण-गृहाण स्वाहा।

जटा मुकुट वृषभादि रुढ़ हो, गिरिवर पूत्री को ले साथ।
धवलोज्ज्वल अंगों का धारी, शुभ त्रिशूल ले अपने हाथ।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, ईशान देव का शुभ आह्वान।
ईशान दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे ईशान देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे ईशान देव ! इदं अर्घ्यं पाद्यं...गृहाण-गृहाण स्वाहा।

वायु वेग वेगार्जित निज के, धरणेन्द्र पद्मावति का ईश।
उच्च कठोर कूर्म आरोही, अधोलोक का है आधीश।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, धरणेन्द्र का भी है आह्वान।
अधर दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे धरणेन्द्र देव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे धरणेन्द्र देव ! इदं अर्घ्यं पाद्यं...गृहाण-गृहाण स्वाहा।

चटाटोप चल शौर्य उदारी, मूर्ति विदारित है विकराल।
सिंहारुढ़ मदभ्र कांतियुत, रोहणीश करता नत भाल।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा हेतु, सोम इन्द्र का है आह्वान।
ऊर्ध्व दिशा के प्रतिहारी बन, करो चरण में मंगलगान।।10।।

ॐ आं क्रों ह्रीं हे सोमदेव ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे सोमदेव ! इदं अर्घ्यं पाद्यं...गृहाण-गृहाण स्वाहा।

अथ चतुःद्वारपालार्चनं

सोम इन्द्र कोदण्ड काण्ड ले, स्फुटदृष्टि मुष्टीधारी।
भव्य मरुद्भट वेद्या जानो, कथानुरक्त महिमाकारी।।
पुरोद्धार पुरु के उद्धारक, सुख-शांति का दो वरदान।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा का शुभ, आकर करो साथ रसपान।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं धनुर्धराय अर-अर त्वर-त्वर ह्रूं सोम ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं सोमाय इदं अर्घ्यं पाद्यं...गृहाण-गृहाण स्वाहा।

जो शत्रु को दण्डित करते, धारण करते दण्ड महान्।
पास रहे सुर चण्ड देव कई, देते हैं जो करुणादान।।
निज परिवार सहित यमेन्द्र तुम, सुख-शांति का दो वरदान।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा का शुभ, आकर करो साथ रसपान।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं दण्डधराय अर-अर त्वर-त्वर ह्रूं सोम ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं यमाय इदं अर्घ्यं पाद्यं...गृहाण-गृहाण स्वाहा।

हालाहल भाला ज्वाला अरु, जटा आदि भीला अहिपास।
वीर सुरों की सेना लेकर, पश्चिम द्वार में करो निवास।।
वरुण इन्द्र परिवार सहित आ, सुख-शांति का दो वरदान।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा का शुभ, आकर करो साथ रसपान।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पाशधराय अर-अर त्वर-त्वर ह्रूं सोम ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं वरुणाय इदं अर्घ्यं पाद्यं...गृहाण-गृहाण स्वाहा।

शत्रु लोक आकम्पित जिनसे, गदा आदि धारी कई देव।
लोकाक्रम उत्ताल सुरों से, उत्तर दिश में रहे सदैव।।
हे कुबेर ! परिवार सहित तुम, सुख-शांति का दो वरदान।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा का शुभ, आकर करो साथ रसपान।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं गदाधराय अर-अर त्वर-त्वर ह्रूं सोम ! अत्र आगच्छ-आगच्छ इत्यादि।
ॐ आं क्रों ह्रीं गदाधराय कुबेराय इदं अर्घ्यं पाद्यं...गृहाण-गृहाण स्वाहा।

जाप्यह्ल ॐ ह्रीं अर्हं झं वं व्हः पः हः मम सर्वापमृत्युञ्जय कुरु-कुरु स्वाहा। *(लोंग या पुष्प से 108 बार जाप करें)*

जयमाला

दोहा- अष्ट द्रव्य के साथ में, दीपक लिया प्रजाल।
महामृत्युञ्जय की यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

छंद-तोटक

जय प्रथम जिनेश्वर आदि जिनं, जय महि परमेश्वर शीलधरं।
जय नमित सुरासुर सौख्य करं, जय जन्म-मरण दुःख पूर्णहरं।।
जय महित् सदन के ईश परम, प्रभु पाए अपना लक्ष्य चरम।
प्रभु ने प्रगटाए मूलगुणं, फिर धारे द्वादश श्रेष्ठ गणं।।1।।
जय चन्द्र सुरेन्द्र नरेन्द्र जयं, जय-जय उपदेशक उभय नयं।
जय नाभि जिनेश्वर आप गृहं, जय मरुदेवि के पुत्र परं।।
जय इन्द्र न्हवन कर मेरु गिरं, जय देह पाँच सौ धनुष परं।
जय लख चौरासी पूर्व परं, जग में कहलाए आयु धरं।।2।।
जय धर्म प्रवर्तन किए वरं, जय कर्मोपदेशक आप परं।
प्रभु जिन योगीश्वर हुए प्रथम, जय संयमधारी हैं उत्तम।।
जय सेवित व्यंतर नाग सुरं, जय नमित सुरासुर भानु परं।
जय-जय जगति पति क्लेश हरं, जय मनोकामना पूर्ण करं।।3।।
जय ज्ञान रूप जय धर्म रूप, जय चन्द्र वदन अकलंक रूप।
जय भव्य दयाकर भव्य हंस, जय प्रगटित शुभकर चारुवंश।।
जय ईश्वर गुण गण महतिमान, जय-जय श्रीपति जयश्रीवान।
जय पाप तिमिर हन चन्द्र रूप, जय दोष निवारक जिन अनूप।।4।।
जय मोक्षमार्ग के प्रथम ईश, तव पद में झुकते नराधीश।
जय गणधर यतिपति सेव्य पाद, जय शारद नीरद दिव्यनाद।।
जय जन-जन के दुःखहरणहार, हे पूर्ण ! दिगम्बर निराकार।
जय नित्य निरंजन अवनि पाल, जय नाशक हारे कर्म जाल।।5।।
जय-जय जिन स्वामी पूज्यपाद, तव शासन अतिशय निशावाद।
जय-जय हे जिनवर मूर्तिमान, तुमसे इस जग की रही शान।।
जय शरणागत के शरण रूप, तुम तीर्थ रहे अतिशय अनूप।
हम विशद जोड़कर दोय हाथ, नत वंदन करते चरण नाथ।।6।।

करके कर्मों का पूर्ण अन्त, तव पाये हो प्रभु गुणानंत।
तुम सिद्ध शिला के बने ईश, तव चरण झुकाते अतः शीश।।
मेरे मन में यह जगी आस, हो जन्म-मरण का पूर्ण नाश।
हम विनती करते बार-बार, हमको अब भव से करो पार।।7।।

घत्तानंद छंद

जय-जय जिनचंदं, आनंद कंदं, नाभिराय नृप के नंदं।
जय आदि जिनंदं, दोष निकंदं, चौबिस जिनवर पद वंद्यं।।

ॐ नमोऽर्हते भगवते देवाधिदेवाय यन्त्रमन्त्रसिद्धिकराय ह्रीं ह्रीं द्रीं द्रीं क्रों क्रों ॐ ॐ ह्रौं वं पः हः हं झं इवीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ उ सा.... नामधेयस्य.... सर्वशान्तिं कुरु-कुरु। तुष्टिं कुरु-कुरु। सिद्धिं कुरु-कुरु। वृद्धिं कुरु-कुरु। समस्तक्षामडामरभयविनाशनं कुरु-कुरु सर्वशान्तिकराय रक्षापमृत्युञ्जयाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धीर वीर सम्यक् गुणधारी, अविनाशी अविचल अविकार।
अष्ट कर्म मल के नाशी जिन, काव्योद्भव सातों के हार।।
सार्ध विजय आदि के सुखकर, निर्मलतम जिनश्री के धाम।
मंगल करें गुरु गज पंतक, जिनवर गुरुपद 'विशद' प्रणाम।।

(इत्याशीर्वादः इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ आनंद स्तवन

चौपाई

जय-जय श्री जिनराज निराले, प्रभु दुर्मोह नशाने वाले।
प्रहत मदन जिनराज कहाए, प्रहवद देवराज जिन गाए।।
हो रुचिरत रविराज निराले, शक्ताहिराज स्तुति वाले।
प्रचुर सुगुण राजन अविकारी, अच्युताधीश राज शिवकारी।।
जय-जय श्री जिनधीर कहाए, जन्माब्धि का पार जो पाए।
प्रभित विभव सारी कहलाए, प्रौढ़ तीर्थ अवतारी गाए।।

प्रभु कमार प्रहतहत जानो, प्रोद्गतानंद पूरी मानो।
प्रहसित शत सूरी जिन स्वामी, अंशु प्रकृष्ट भार हो नामी।।
जय जिन मित्र ध्वांत विध्वंशी, स्वतिशय गुण गात्री अरि ध्वंशी।
ज्ञान स्फूर्ति पात्र अविकारी, श्रेष्ठ परम पद के प्रभु धारी।।
देव पात्र उल्लसद हैं भाई, इह परलोक शरण सुखदाई।
जय जिन जैत्र क्ष्मात्र हमारे, जय याराम चैत्र मतवारे।।
विधृत वेत्र त्रिदश अविनाशी, चित्रात पत्र श्वेत सुख राशि।
निरातिशय चारित्र के धारी, श्री मदर्थोक्त सूत्र सुखकारी।।
तरु दात्र स्व दुरघ कहाए, श्री कलत्र श्रायस कहलाए।
अत्यंत पूत त्रात जिन स्वामी, स्थिर तर सुखदायकनामी।।
कर्म संघात घात के धारी, जलदवात जिन कुमत निवारी।
ज्ञेय जात प्रवचन रथ सूत, प्रमत ख्यात देवाभि नूत।।
जय जिनचन्द्र छिन्न दुर्मोही, तन्द्रप्रणत नर सुर मन मोही।
प्राणिमन्द्र प्रीणित भासांद्र, रुद्र चन्द्र प्रवचन सरिदिन्द्र।।
जय जिन चंद्र जात सुप्रीत, त्रिभुवन भव्य कीर्ति तव्य स्फीत।
वरद स्वाति संभावितव्य, नमतसितव्य प्रत्यह महितव्य।।
स्मृति पथ श्रेयस निहितव्य, जिन त्रिकाल पूजित भावितव्य।
प्रतिहत रतीनाथ जिनमाथ, संपतनाथ ज्ञात सुरनाथ।।
मोहापनाथ सु नत नर नाथ, श्रुतिक श्रीमद् लोकाधिनाथ।
प्राणनाथ श्री वधु महान्, जदिन नाथ इह लोक प्रधान।।
श्री खण्डिता नंग सुकाण्ड, निमिष खण्डज्ञाता ब्रह्माण्ड।
हरित लसित शुभ नमद सुतुण्ड, ध्यानाधीराग्नि शुभ कुण्ड।।
जन्म वार्धो सुगुण तरण्ड, मणिकरण्ड विनमित चिदखण्ड।
श्रायसानन्द पिण्ड जयकार, 'विशद' धर्म के प्रभु आधार।।

इत्यानन्द स्तवनेन वेद्यास्त्रिवार प्रदक्षिणं कृत्त्वा पञ्चाग प्रणामं कुर्यात्। (इत्याशीर्वादः)

महामृत्युञ्जय चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच हैं, तीर्थंकर चौबीस।
मृत्युञ्जय हम पूजते, चरणों में धर शीश।।

चौपाई

कर्म घातिया चार नशाए, अतः आप अर्हत् कहलाए।
अनन्त चतुष्टय जो प्रगटाए, दर्शन ज्ञान-वीर्य सुख पाए।।
दोष अठारह पूर्ण नशाए, छियालिस गुणधारी कहलाए।
चौतिस अतिशय जिनने पाए, प्रातिहार्य आठों प्रगटाए।।
समवशरण शुभ देव रचाए, खुश हो जय-जयकार लगाए।
समवशरण की शोभ न्यारी, उससे भी रहते अविकारी।।
देव शरण में प्रभु के आते, चरण-कमल तल कमल रचाते।
सौ योजन सुभिक्षता होवे, सब प्रकार की आपद खोवे।।
भक्त शरण में जो भी आते, चतुर्दिशा से दर्शन पाते।
गगन गमन प्रभु जी शुभ पाते, प्राणी मैत्री भाव जगाते।।
प्रभो ! ज्ञान के ईश कहाए, अनिमिष दृग प्रभु के बतलाए।
दिव्य देशना प्रभु सुनाते, सुर-नर-पशु सुनकर हर्षाते।।
मृत्युञ्जय जिन प्रभु कहाते, जीत मृत्यु को शिव पद पाते।
ज्ञान अनन्त दर्श सुख पाते, वीर्य अनन्त प्रभु प्रगटाते।।
सिद्ध सनातन आप कहाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए।
अनुपम शिवसुख पाने वाले, ज्ञान शरीरी रहे निराले।।
नित्य निरंजन जो अविनाशी, गुण अनन्त की हैं प्रभु राशि।
तुमने उत्तम संयम पाया, जिसका फल यह अनुपम गाया।।
रत्नत्रय पा ध्यान लगाया, तप से निज को स्वयं तपाया।
कई ऋद्धियाँ तुमने पाईं, किन्तु वह तुमको न भाईं।।

उनसे भी अपना मुख मोड़ा, मुक्ति वधू से नाता जोड़ा।
सहस्र आठ लक्षण के धारी, आप बने प्रभु मंगलकारी।।
सहस्र आठ शुभ नाम उपाए, सार्थक सारे नाम बताए।
नाम सभी शुभ मंत्र कहाए, जो भी इन मंत्रों को ध्याए।।
सुख-शांति सौभाग्य जगाए, अपने सारे कर्म नशाए।
विषय भोग में नहीं रमाए, रत्नत्रय पा संयम पाए।।
तीन योग से ध्यान लगाए, निज स्वरूप में वह रम जाए।
संवर करे निर्जरा पावे, अनुक्रम से वह कर्म नशावे।।
बीजाक्षर भी पूजें ध्यावें, जिनपद में नित प्रीति बढ़ावें।
कभी मंत्र जपने लग जाए, कभी प्रभु को हृदय बसाए।।
स्वर व्यंजन आदि भी ध्याए, अतिशय कर्म निर्जरा पाए।
पुण्य प्राप्त करता शुभकारी, शिवपथ का कारण मनहारी।।
इस भव का सब वैभव पाए, उसके मन को वह न भाए।
तजकर जग का वैभव सारा, जिनने भेष दिगम्बर धारा।।
वह बनते त्रिभुवन के स्वामी, हम भी बने प्रभु अनुगामी।
यही भावना रही हमारी, कृपा करो हम पर त्रिपुरारी।।
मृत्युञ्जय हम भी हो जाएँ, इस जग में अब नहीं भ्रमाएँ।
जागे अब सौभाग्य हमारा, मिले चरण का नाथ सहारा।।
शिव पद जब तक ना पा जाएँ, तब तक तुमको हृदय सजाए।
नित-प्रति हम तुमरे गुण गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांति आनन्द पा, बने श्री का नाथ।।
सुत सम्पत्ति सुगुण पा, होवे इन्द्र समान।
मृत्युञ्जय होके 'विशद', पावे पद निर्वाण।।

विसर्जन

ज्ञान से या अज्ञान से, शास्त्रोक्त शुभ कार्य।
तव प्रसाद से हे प्रभु !, होय सफल अनिवार्य।।1।।
आह्वानन न जानता, न ही पूजा साथ।
नहीं विसर्जन जानता, क्षमा करो हे नाथ !।।2।।
क्रियाहीन मंत्रहीन हूँ, द्रव्यहीन जिनदेव।
क्षमा करो रक्षा करो, हे जिनराज ! सदैव।।3।।
अनुक्रम से जिन भक्ति कर, करो प्रभु गुणगान।
हर्षित होके तुम विशद, जाओ निज स्थान।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं अस्मिन् मृत्युञ्जय महामण्डल विधान समये आगन्तुक सर्व देवाः स्वस्थाने गच्छतः गच्छतः गच्छतः, जः जः जः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

प्रशस्ति

वृषभादि चौबीस जिन, जग में हुए महान्।
उनके चरणों में नमन, जिनका तीर्थ प्रधान।।1।।
गौतमादि गणधर परम, कुन्दकुन्द आचार्य।
आदिसागराचार्य की, परम्परागत आर्य।।2।।
विमल सिन्धु के शिष्य हैं, भरत सागराचार्य।
विराग सिन्धु दीक्षा दिए, बने विशद आचार्य।।3।।
प्रेरित हो जिन भक्ति से, मृत्युञ्जयी विधान।
पद्यमयी रचना शुभम्, कर कीन्हा गुणगान।।4।।
वीर निर्माण पच्चीस सौ, छत्तिस माघ महान।
तिथि पञ्चमी शुक्ल की, अतिशय रही प्रधान।।5।।
जिला कहा अजमेर शुभ, सावर है इक ग्राम।
रचना करके पूर्ण यह, लिया विशद विश्राम।।6।।
पूजा करके भाव से, पाओ पुण्य निधान।
भूल-चूक को भूलकर क्षमा करो धीमान्।।7।।

।। इति मृत्युञ्जय पूज्य विधान सम्पूर्ण।।

मृत्युञ्जय विधान की आरती

मृत्युञ्जय की करते हैं हम, आरति मंगलकारी।
दीप जलाकर घी के लाए, जिनवर के दरबार।
हो जिनवर हम सब उतारें मंगल आरती....
मृत्यु को जीता है तुमने, सारे कर्म विनाशे।
सिद्ध शिला पर धाम बनाया, आतम ज्ञान प्रकाशे।।
हो जिनवर.... ।।1।।
तुम्हें पूजने वाले अपने, सारे रोग नशावें।
आकस्मिक बाधाएँ कोई, कभी पास न आवें।।
हो जिनवर.... ।।2।।
भूत-प्रेत-व्यन्तर की बाधा, भक्तों से भय खावे।
तंत्र-टोटका की बाधा भी, पास नहीं आ पावें।।
हो जिनवर.... ।।3।।
मृत्युञ्जय की पूजा करके, मृत्युञ्जय को पावें।
करते आरती भक्ति भाव से, निज के गुण प्रगटावें।।
हो जिनवर.... ।।4।।
विमल गुणों में अवगाहन कर, भरत क्षेत्र में आवें।
राग-त्याग पाके विराग फिर, 'विशद' गुणों को पावें।।
हो जिनवर.... ।।5।।

तीर्थंकर के जो गुण गाते हैं, अपने सारे पाप नशाते हैं।
मृत्युञ्जयी हो जावें, शिव पदवी को पावें।
मिट जावें आवागमन-
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है।

नोट - जो महानुभाव सहस्रनाम के अर्घ्य चढ़ाना चाहते हैं वह सहस्रनाम विधान से चढ़ाएँ (पेज. नं. 12... पर देखें)। यदि आहूति देना इष्ट हो तो भी दे सकते हैं।

सोरठा- हे स्तुत्त्व ! जिनदेव, भक्ति करूँ मैं बुद्धि से।
अष्टोत्तर नामेव, सहस्र पाप उपशांत कर।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ प्रथम वलय प्रथम कोष्ठे श्रीमदादि शतनामेभ्यः अर्घ्यं समर्पयेत्

1	ॐ ह्रीं श्री **श्रीमते** नमः	2	ॐ ह्रीं श्री **स्वयंभुवे** नमः
3	ॐ ह्रीं श्री **वृषभाय** नमः	4	ॐ ह्रीं श्री **शंभवाय** नमः
5	ॐ ह्रीं श्री **शंभवे** नमः	6	ॐ ह्रीं श्री **आत्मभुवे** नमः
7	ॐ ह्रीं श्री **स्वयंप्रभाय** नमः	8	ॐ ह्रीं श्री **प्रभवे** नमः
9	ॐ ह्रीं श्री **भोक्त्रे** नमः	10	ॐ ह्रीं श्री **विश्वभुवे** नमः
11	ॐ ह्रीं श्री **अपुनर्भवाय** नमः	12	ॐ ह्रीं श्री **विश्वात्मानाय** नमः
13	ॐ ह्रीं श्री **विश्वलोकेशाय** नमः	14	ॐ ह्रीं श्री **विश्वतश्चक्षुषे** नमः
15	ॐ ह्रीं श्री **अक्षराय** नमः	16	ॐ ह्रीं श्री **विश्वविदे** नमः
17	ॐ ह्रीं श्री **विश्वविद्येशाय** नमः	18	ॐ ह्रीं श्री **विश्वयोनये** नमः
19	ॐ ह्रीं श्री **अनश्वराय** नमः	20	ॐ ह्रीं श्री **विश्वदृश्वने** नमः
21	ॐ ह्रीं श्री **विभवे** नमः	22	ॐ ह्रीं श्री **धात्रे** नमः
23	ॐ ह्रीं श्री **विश्वेशाय** नमः	24	ॐ ह्रीं श्री **विश्वलोचनाय** नमः
25	ॐ ह्रीं श्री **विश्वव्यापिने** नमः	26	ॐ ह्रीं श्री **विद्यवे** नमः
27	ॐ ह्रीं श्री **वेधसे** नमः	28	ॐ ह्रीं श्री **शाश्वताय** नमः
29	ॐ ह्रीं श्री **विश्वतोमुखाय** नमः	30	ॐ ह्रीं श्री **विश्वकर्मणे** नमः
31	ॐ ह्रीं श्री **जगज्ज्येष्ठाय** नमः	32	ॐ ह्रीं श्री **विश्वमूर्तये** नमः
33	ॐ ह्रीं श्री **जिनेश्वराय** नमः	34	ॐ ह्रीं श्री **विश्वदृशे** नमः
35	ॐ ह्रीं श्री **विश्वभूतेशाय** नमः	36	ॐ ह्रीं श्री **विश्वज्योतिषे** नमः
37	ॐ ह्रीं श्री **अनीश्वराय** नमः	38	ॐ ह्रीं श्री **जिनाय** नमः
39	ॐ ह्रीं श्री **जिष्णवे** नमः	40	ॐ ह्रीं श्री **अमेयात्मने** नमः
41	ॐ ह्रीं श्री **विश्वरीशाय** नमः	42	ॐ ह्रीं श्री **जगत्पतये** नमः
43	ॐ ह्रीं श्री **अनन्तजिते** नमः	44	ॐ ह्रीं श्री **अचिन्त्यात्मने** नमः
45	ॐ ह्रीं श्री **भव्यबंधवे** नमः	46	ॐ ह्रीं श्री **अबंधनाय** नमः
47	ॐ ह्रीं श्री **युगादिपुरुषाय** नमः	48	ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्मणे** नमः
49	ॐ ह्रीं श्री **पञ्चब्रह्ममयाय** नमः	50	ॐ ह्रीं श्री **शिवाय** नमः

51 ॐ ह्रीं श्री **पराय** नमः
52 ॐ ह्रीं श्री **परतराय** नमः
53 ॐ ह्रीं श्री **सूक्ष्माय** नमः
54 ॐ ह्रीं श्री **परमेष्ठिने** नमः
55 ॐ ह्रीं श्री **सनातनाय** नमः
56 ॐ ह्रीं श्री **स्वयंज्योतिषे** नमः
57 ॐ ह्रीं श्री **अजाय** नमः
58 ॐ ह्रीं श्री **अजन्मने** नमः
59 ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्मयोनये** नमः
60 ॐ ह्रीं श्री **अयोनिजाय** नमः
61 ॐ ह्रीं श्री **मोहारिविजयने** नमः
62 ॐ ह्रीं श्री **मोहमल्लजेताय** नमः
63 ॐ ह्रीं श्री **धर्मचक्रिणे** नमः
64 ॐ ह्रीं श्री **दयाध्वजाय** नमः
65 ॐ ह्रीं श्री **प्रशांतारये** नमः
66 ॐ ह्रीं श्री **अनन्तात्मने** नमः
67 ॐ ह्रीं श्री **योगिने** नमः
68 ॐ ह्रीं श्री **योगीश्वरार्चिताय** नमः
69 ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्मविदे** नमः
70 ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्मतत्त्वज्ञाय** नमः
71 ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्मोद्याविदे** नमः
72 ॐ ह्रीं श्री **यतीश्वराय** नमः
73 ॐ ह्रीं श्री **शुद्धाय** नमः
74 ॐ ह्रीं श्री **बुद्धाय** नमः
75 ॐ ह्रीं श्री **प्रबुद्धात्मने** नमः
76 ॐ ह्रीं श्री **सिद्धार्थाय** नमः
77 ॐ ह्रीं श्री **सिद्धशासनाय** नमः
78 ॐ ह्रीं श्री **सिद्धाय** नमः
79 ॐ ह्रीं श्री **सिद्धान्तविदे** नमः
80 ॐ ह्रीं श्री **ध्येयाय** नमः
81 ॐ ह्रीं श्री **सिद्धसाध्याय** नमः
82 ॐ ह्रीं श्री **जगद्धिताय** नमः
83 ॐ ह्रीं श्री **सहिष्णवे** नमः
84 ॐ ह्रीं श्री **अच्युताय** नमः
85 ॐ ह्रीं श्री **अनन्ताय** नमः
86 ॐ ह्रीं श्री **प्रभविष्णवे** नमः
87 ॐ ह्रीं श्री **भवोद्भवाय** नमः
88 ॐ ह्रीं श्री **प्रभुष्णवे** नमः
89 ॐ ह्रीं श्री **अजराय** नमः
90 ॐ ह्रीं श्री **अजर्याय** नमः
91 ॐ ह्रीं श्री **भ्राजिष्णवे** नमः
92 ॐ ह्रीं श्री **धीश्वराय** नमः
93 ॐ ह्रीं श्री **अव्ययाय** नमः
94 ॐ ह्रीं श्री **विभावसवे** नमः
95 ॐ ह्रीं श्री **असम्भूष्णवे** नमः
96 ॐ ह्रीं श्री **स्वयंभूष्णवे** नमः
97 ॐ ह्रीं श्री **पुरातनाय** नमः
98 ॐ ह्रीं श्री **परमात्मने** नमः
99 ॐ ह्रीं श्री **परमज्योतिषे** नमः
100 ॐ ह्रीं श्री **त्रिजगत्परमेश्वराय** नमः

दोहा– श्रीमत् आदि नाम शत्, शोभित रहे महान्।
धर्म तीर्थ कर्त्ता विभो, अर्चा करूँ प्रधान ।।1 ।।

ॐ ह्रीं **श्रीमदादिशतनामावलिभ्यः** पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रथम वलय द्वितीय कोष्ठे स्थविष्ठादि शतनामेभ्यः अर्घ्यं समर्पयेत्

1 ॐ ह्रीं श्री **दिव्यभाषापतये** नमः
2 ॐ ह्रीं श्री **दिव्याय** नमः
3 ॐ ह्रीं श्री **पूतवाचे** नमः
4 ॐ ह्रीं श्री **पूतशासनाय** नमः
5 ॐ ह्रीं श्री **पूतात्मने** नमः
6 ॐ ह्रीं श्री **परमज्योतिषे** नमः

7 ॐ ह्रीं श्री **धर्माध्यक्षाय** नमः
8 ॐ ह्रीं श्री **दमीश्वराय** नमः
9 ॐ ह्रीं श्री **श्रीपतये** नमः
10 ॐ ह्रीं श्री **भगवते** नमः
11 ॐ ह्रीं श्री **अर्हते** नमः
12 ॐ ह्रीं श्री **अरजसे** नमः
13 ॐ ह्रीं श्री **विरजसे** नमः
14 ॐ ह्रीं श्री **शुचये** नमः
15 ॐ ह्रीं श्री **तीर्थकृते** नमः
16 ॐ ह्रीं श्री **केवलिने** नमः
17 ॐ ह्रीं श्री **ईशानाय** नमः
18 ॐ ह्रीं श्री **पूजार्हाय** नमः
19 ॐ ह्रीं श्री **स्नातकाय** नमः
20 ॐ ह्रीं श्री **अमलाय** नमः
21. ॐ ह्रीं श्री **अनंतदीप्तये** नमः
22 ॐ ह्रीं श्री **ज्ञानात्मने** नमः
23 ॐ ह्रीं श्री **स्वयंबुद्धाय** नमः
24 ॐ ह्रीं श्री **प्रजापतये** नमः
25 ॐ ह्रीं श्री **मुक्ताय** नमः
26 ॐ ह्रीं श्री **शक्ताय** नमः
27 ॐ ह्रीं श्री **निराबाधाय** नमः
28 ॐ ह्रीं श्री **निष्कलाय** नमः
29 ॐ ह्रीं श्री **भुवनेश्वराय** नमः
30 ॐ ह्रीं श्री **निरंजनाय** नमः
31 ॐ ह्रीं श्री **जगत्ज्योतिषे** नमः
32 ॐ ह्रीं श्री **निरुक्तोक्तये** नमः
33 ॐ ह्रीं श्री **निरामयाय** नमः
34 ॐ ह्रीं श्री **अचलस्थितये** नमः
35 ॐ ह्रीं श्री **अक्षोभ्याय** नमः
36 ॐ ह्रीं श्री **कूटस्थाय** नमः
37 ॐ ह्रीं श्री **स्थाणवे** नमः
38 ॐ ह्रीं श्री **अक्षयाय** नमः
39 ॐ ह्रीं श्री **अग्रण्ये** नमः
40 ॐ ह्रीं श्री **ग्रामण्ये** नमः
41 ॐ ह्रीं श्री **नेत्रे** नमः
42 ॐ ह्रीं श्री **प्रणेत्रे** नमः
43 ॐ ह्रीं श्री **न्यायशास्त्रविदे** नमः
44 ॐ ह्रीं श्री **शास्त्रे** नमः
45 ॐ ह्रीं श्री **धर्मपतये** नमः
46 ॐ ह्रीं श्री **धर्म्याय** नमः
47 ॐ ह्रीं श्री **धर्मात्मने** नमः
48 ॐ ह्रीं श्री **धर्मतीर्थकृते** नमः
49 ॐ ह्रीं श्री **वृषध्वजाय** नमः
50 ॐ ह्रीं श्री **वृषाधीश** नमः
51 ॐ ह्रीं श्री **वृषकेतवे** नमः
52 ॐ ह्रीं श्री **वृषायुधाय** नमः
53 ॐ ह्रीं श्री **वृषाय** नमः
54 ॐ ह्रीं श्री **वृषपतये** नमः
55 ॐ ह्रीं श्री **भर्त्रे** नमः
56 ॐ ह्रीं श्री **वृषभांकाय** नमः
57 ॐ ह्रीं श्री **वृषोद्भवाय** नमः
58 ॐ ह्रीं श्री **हिरण्यनाभये** नमः
59 ॐ ह्रीं श्री **भूतात्मने** नमः
60 ॐ ह्रीं श्री **भूभृते** नमः
61 ॐ ह्रीं श्री **भूतभावनाय** नमः
62 ॐ ह्रीं श्री **प्रभवाय** नमः
63 ॐ ह्रीं श्री **विभवाय** नमः
64 ॐ ह्रीं श्री **भास्वते** नमः
65 ॐ ह्रीं श्री **भवाय** नमः
66 ॐ ह्रीं श्री **भावाय** नमः
67 ॐ ह्रीं श्री **भवान्तकाय** नमः
68 ॐ ह्रीं श्री **हिरण्यगर्भाय** नमः
69 ॐ ह्रीं श्री **श्रीगर्भाय** नमः
70 ॐ ह्रीं श्री **प्रभूतविभवाय** नमः
71 ॐ ह्रीं श्री **अभवाय** नमः
72 ॐ ह्रीं श्री **स्वयंप्रभवे** नमः

73 ॐ ह्रीं श्री **प्रभूतात्मने** नमः
74 ॐ ह्रीं श्री **भूतनाथाय** नमः
75 ॐ ह्रीं श्री **जगत्प्रभवे** नमः
76 ॐ ह्रीं श्री **सर्वादये** नमः
77 ॐ ह्रीं श्री **सर्वदृशे** नमः
78 ॐ ह्रीं श्री **सार्वाय** नमः
79 ॐ ह्रीं श्री **सर्वज्ञाय** नमः
80 ॐ ह्रीं श्री **सर्वदर्शनाय** नमः
81 ॐ ह्रीं श्री **सर्वात्मने** नमः
82 ॐ ह्रीं श्री **सर्वलोकेशाय** नमः
83 ॐ ह्रीं श्री **सर्वविदे** नमः
84 ॐ ह्रीं श्री **सर्वलोकजिते** नमः
85 ॐ ह्रीं श्री **सुगतये** नमः
86 ॐ ह्रीं श्री **सुश्रुताय** नमः
87 ॐ ह्रीं श्री **सुश्रुते** नमः
88 ॐ ह्रीं श्री **सुवाचे** नमः
89 ॐ ह्रीं श्री **सूरये** नमः
90 ॐ ह्रीं श्री **बहुश्रुताय** नमः
91 ॐ ह्रीं श्री **विश्रुताय** नमः
92 ॐ ह्रीं श्री **विश्वतःपादाय** नमः
93 ॐ ह्रीं श्री **विश्वशीर्षाय** नमः
94 ॐ ह्रीं श्री **शुचिश्रवसे** नमः
95 ॐ ह्रीं श्री **सहस्रशीर्षाय** नमः
96 ॐ ह्रीं श्री **क्षेत्रज्ञाय** नमः
97 ॐ ह्रीं श्री **सहस्राक्षाय** नमः
98 ॐ ह्रीं श्री **सहस्रपदे** नमः
99 ॐ ह्रीं श्री **भूतभव्यभवद्भर्त्रे** नमः
100 ॐ ह्रीं श्री **विश्वविद्यामहेश्वराय** नमः

दोहा– प्रथम दिव्य भाषापति, आदि जिनके नाम।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, नाभिज करूँ प्रणाम ।।2 ।।

ॐ ह्रीं **दिव्यभाषापत्यादिशतनामेभ्यः** पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रथम वलय तृतीय कोष्ठे स्थविष्ठादि शतनामेभ्यः अर्घ्यं समर्पयेत्

1 ॐ ह्रीं श्री **स्थविष्ठाय** नमः
2 ॐ ह्रीं श्री **स्थविराय** नमः
3 ॐ ह्रीं श्री **ज्येष्ठाय** नमः
4 ॐ ह्रीं श्री **प्रष्ठाय** नमः
5 ॐ ह्रीं श्री **प्रेष्ठाय** नमः
6 ॐ ह्रीं श्री **वरिष्ठधिये** नमः
7 ॐ ह्रीं श्री **स्थेष्ठाय** नमः
8 ॐ ह्रीं श्री **गरिष्ठाय** नमः
9 ॐ ह्रीं श्री **बंहिष्ठाय** नमः
10 ॐ ह्रीं श्री **श्रेष्ठाय** नमः
11 ॐ ह्रीं श्री **अणिष्ठाय** नमः
12 ॐ ह्रीं श्री **गरिष्ठगिरे** नमः
13 ॐ ह्रीं श्री **विश्वभृषे** नमः
14 ॐ ह्रीं श्री **विश्वसृजे** नमः
15 ॐ ह्रीं श्री **विश्वेशे** नमः
16 ॐ ह्रीं श्री **विश्वभुजे** नमः
17 ॐ ह्रीं श्री **विश्वनायकाय** नमः
18 ॐ ह्रीं श्री **विश्वासिने** नमः
19 ॐ ह्रीं श्री **विश्वरूपात्मने** नमः
20 ॐ ह्रीं श्री **विश्वजिते** नमः
21 ॐ ह्रीं श्री **विजितांतकाय** नमः
22 ॐ ह्रीं श्री **विभवाय** नमः
23 ॐ ह्रीं श्री **विभयाय** नमः
24 ॐ ह्रीं श्री **वीराय** नमः
25 ॐ ह्रीं श्री **विशोकाय** नमः
26 ॐ ह्रीं श्री **विजराय** नमः
27 ॐ ह्रीं श्री **अजरते** नमः
28 ॐ ह्रीं श्री **विरागाय** नमः

29 ॐ ह्रीं श्री **विरताय** नमः
30 ॐ ह्रीं श्री **असंगाय** नमः
31 ॐ ह्रीं श्री **विविक्ताय** नमः
32 ॐ ह्रीं श्री **वीतमत्सराय** नमः
33 ॐ ह्रीं श्री **विनेयजनताबंधवे** नमः
34 ॐ ह्रीं श्री **विलीनाशेषकल्मषाय** नमः
35 ॐ ह्रीं श्री **वियोगाय** नमः
36 ॐ ह्रीं श्री **योगविदे** नमः
37 ॐ ह्रीं श्री **विदुषे** नमः
38 ॐ ह्रीं श्री **विधात्रे** नमः
39 ॐ ह्रीं श्री **सुविधये** नमः
40 ॐ ह्रीं श्री **सुधिये** नमः
41 ॐ ह्रीं श्री **क्षांतिभाजे** नमः
42 ॐ ह्रीं श्री **पृथ्वीमूर्तये** नमः
43 ॐ ह्रीं श्री **शांतिभाजे** नमः
44 ॐ ह्रीं श्री **सलिलात्मकाय** नमः
45 ॐ ह्रीं श्री **वायुमूर्तये** नमः
46 ॐ ह्रीं श्री **असंगात्मने** नमः
47 ॐ ह्रीं श्री **वह्निमूर्तये** नमः
48 ॐ ह्रीं श्री **अधर्मदहे** नमः
49 ॐ ह्रीं श्री **सुयज्वने** नमः
50 ॐ ह्रीं श्री **यजमानात्मने** नमः
51 ॐ ह्रीं श्री **सुत्वने** नमः
52 ॐ ह्रीं श्री **सुत्रामपूजिताय** नमः
53 ॐ ह्रीं श्री **ऋत्विजे** नमः
54 ॐ ह्रीं श्री **यज्ञपतये** नमः
55 ॐ ह्रीं श्री **याज्याय** नमः
56 ॐ ह्रीं श्री **यज्ञांगाय** नमः
57 ॐ ह्रीं श्री **अमृताय** नमः
58 ॐ ह्रीं श्री **हविषे** नमः
59 ॐ ह्रीं श्री **व्योममूर्तये** नमः
60 ॐ ह्रीं श्री **अमूर्तात्मने** नमः
61 ॐ ह्रीं श्री **निर्लेपाय** नमः
62 ॐ ह्रीं श्री **निर्मलाय** नमः
63 ॐ ह्रीं श्री **अचलाय** नमः
64 ॐ ह्रीं श्री **सोममूर्तये** नमः
65 ॐ ह्रीं श्री **सुसौम्यात्मने** नमः
66 ॐ ह्रीं श्री **सूर्यमूर्तये** नमः
67 ॐ ह्रीं श्री **महाप्रभाय** नमः
68 ॐ ह्रीं श्री **मंत्रविदे** नमः
69 ॐ ह्रीं श्री **मंत्रकृते** नमः
70 ॐ ह्रीं श्री **मंत्रिणे** नमः
71 ॐ ह्रीं श्री **मंत्रमूर्तये** नमः
72 ॐ ह्रीं श्री **स्वतंत्राय** नमः
73 ॐ ह्रीं श्री **तंत्रकृते** नमः
74 ॐ ह्रीं श्री **स्वन्ताय** नमः
75 ॐ ह्रीं श्री **कृतान्तान्ताय** नमः
76 ॐ ह्रीं श्री **कृतान्तकृते** नमः
77 ॐ ह्रीं श्री **कृतिने** नमः
78 ॐ ह्रीं श्री **कृतार्थाय** नमः
79 ॐ ह्रीं श्री **सत्कृत्याय** नमः
80 ॐ ह्रीं श्री **कृतकृत्याय** नमः
81 ॐ ह्रीं श्री **कृतक्रतवे** नमः
82 ॐ ह्रीं श्री **नित्याय** नमः
83 ॐ ह्रीं श्री **मृत्युंजयाय** नमः
84 ॐ ह्रीं श्री **अमृत्यवे** नमः
85 ॐ ह्रीं श्री **अमृतात्मने** नमः
86 ॐ ह्रीं श्री **अमृतोद्भवाय** नमः
87 ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्मनिष्ठाय** नमः
88 ॐ ह्रीं श्री **परंब्रह्मणे** नमः
89 ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्मात्मने** नमः
90 ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्मसंभवाय** नमः
91 ॐ ह्रीं श्री **महाब्रह्मपतये** नमः
92 ॐ ह्रीं श्री **ऋत्विजे ब्रह्मेटे** नमः
93 ॐ ह्रीं श्री **महाब्रह्मपदेश्वराय** नमः
94 ॐ ह्रीं श्री **सुप्रसन्नाय** नमः

95 ॐ ह्रीं श्री **प्रसन्नात्मने** नमः
96 ॐ ह्रीं श्री **ज्ञानधर्मदमप्रभवे** नमः
97 ॐ ह्रीं श्री **प्रशमात्मने** नमः
98 ॐ ह्रीं श्री **प्रशान्तात्मने** नमः
99 ॐ ह्रीं श्री **पुराणपुरुषोत्तमाय** नमः
100 ॐ ह्रीं श्री **ब्रह्मसंभवाय** नमः

दोहा– स्थविष्ठादि नाम शत्, नाभि सुत के नाम।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, उनको करूँ प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं श्री **स्थविष्ठादिशतनामभ्यः** नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रथम वलय चतुर्थ कोष्ठे महाशोकध्वजादि शतनामेभ्यः अर्घ्यं समर्पयेत्

1 ॐ ह्रीं श्री **महाशोकध्वजाय** नमः
2 ॐ ह्रीं श्री **अशोकाय** नमः
3 ॐ ह्रीं श्री **काय** नमः
4 ॐ ह्रीं श्री **स्रष्ट्रे** नमः
5 ॐ ह्रीं श्री **पद्मविष्टराय** नमः
6 ॐ ह्रीं श्री **पद्मेशाय** नमः
7 ॐ ह्रीं श्री **पद्मसंभूतये** नमः
8 ॐ ह्रीं श्री **पद्मनाभये** नमः
9 ॐ ह्रीं श्री **अनुत्तराय** नमः
10 ॐ ह्रीं श्री **पद्मयोनये** नमः
11 ॐ ह्रीं श्री **जगदयोनये** नमः
12 ॐ ह्रीं श्री **इत्याय** नमः
13 ॐ ह्रीं श्री **स्तुत्याय** नमः
14 ॐ ह्रीं श्री **स्तुतीश्वराय** नमः
15 ॐ ह्रीं श्री **स्तवनार्हाय** नमः
16 ॐ ह्रीं श्री **हृषीकेशाय** नमः
17 ॐ ह्रीं श्री **जितजेयाय** नमः
18 ॐ ह्रीं श्री **कृतक्रियाय** नमः
19 ॐ ह्रीं श्री **गणाधिपाय** नमः
20 ॐ ह्रीं श्री **गणज्येष्ठाय** नमः
21 ॐ ह्रीं श्री **गण्याय** नमः
22 ॐ ह्रीं श्री **पुण्याय** नमः
23 ॐ ह्रीं श्री **गणाग्रण्ये** नमः
24 ॐ ह्रीं श्री **गुणाकराय** नमः
25 ॐ ह्रीं श्री **गुणाम्भोधये** नमः
26 ॐ ह्रीं श्री **गुणज्ञाय** नमः
27 ॐ ह्रीं श्री **गुणनायकाय** नमः
28 ॐ ह्रीं श्री **गुणादरिणे** नमः
29 ॐ ह्रीं श्री **गुणाच्छेदिने** नमः
30 ॐ ह्रीं श्री **निर्गुणाय** नमः
31 ॐ ह्रीं श्री **पुण्यगिरे** नमः
32 ॐ ह्रीं श्री **गुणाय** नमः
33 ॐ ह्रीं श्री **शरण्याय** नमः
34 ॐ ह्रीं श्री **पुण्यवाचे** नमः
35 ॐ ह्रीं श्री **पूताय** नमः
36 ॐ ह्रीं श्री **वरेण्याय** नमः
37 ॐ ह्रीं श्री **पुण्यनायकाय** नमः
38 ॐ ह्रीं श्री **अगण्याय** नमः
39 ॐ ह्रीं श्री **पुण्यधिये** नमः
40 ॐ ह्रीं श्री **गुण्याय** नमः
41 ॐ ह्रीं श्री **पुण्यकृत** नमः
42 ॐ ह्रीं श्री **पुण्यशासनाय** नमः
43 ॐ ह्रीं श्री **धर्मरामाय** नमः
44 ॐ ह्रीं श्री **गुणग्रामाय** नमः
45 ॐ ह्रीं श्री **पुण्यापुण्यनिरोधाय** नमः
46 ॐ ह्रीं श्री **पापापेताय** नमः
47 ॐ ह्रीं श्री **विपापात्मने** नमः
48 ॐ ह्रीं श्री **विपाप्य** नमः
49 ॐ ह्रीं श्री **वीत्कल्मषाय** नमः
50 ॐ ह्रीं श्री **निर्द्वंद्वाय** नमः

51 ॐ ह्रीं श्री **निर्मदाय** नमः
52 ॐ ह्रीं श्री **शांताय** नमः
53 ॐ ह्रीं श्री **निर्मोहाय** नमः
54 ॐ ह्रीं श्री **निरुपद्रवाय** नमः
55 ॐ ह्रीं श्री **निर्निमेषाय** नमः
56 ॐ ह्रीं श्री **निराहाराय** नमः
57 ॐ ह्रीं श्री **निष्क्रियाय** नमः
58 ॐ ह्रीं श्री **निरुपप्लवाय** नमः
59 ॐ ह्रीं श्री **निष्कलंकाय** नमः
60 ॐ ह्रीं श्री **निरस्तैनसे** नमः
61 ॐ ह्रीं श्री **निर्धूतागसे** नमः
62 ॐ ह्रीं श्री **निरास्रवाय** नमः
63 ॐ ह्रीं श्री **विशालाय** नमः
64 ॐ ह्रीं श्री **विपुलज्योतिषे** नमः
65 ॐ ह्रीं श्री **अतुलाय** नमः
66 ॐ ह्रीं श्री **अचिन्त्यवैभवाय** नमः
67 ॐ ह्रीं श्री **सुसंवृत्ताय** नमः
68 ॐ ह्रीं श्री **सुगुप्तात्मने** नमः
69 ॐ ह्रीं श्री **सुबुधे** नमः
70 ॐ ह्रीं श्री **सुनयतत्त्ववित्** नमः
71 ॐ ह्रीं श्री **एकविद्याय** नमः
72 ॐ ह्रीं श्री **महाविद्याय** नमः
73 ॐ ह्रीं श्री **मुनये** नमः
74 ॐ ह्रीं श्री **परिवृढाय** नमः
75 ॐ ह्रीं श्री **पत्ये** नमः
76 ॐ ह्रीं श्री **धीशाय** नमः
77 ॐ ह्रीं श्री **विद्यानिधये** नमः
78 ॐ ह्रीं श्री **साक्षिणे** नमः
79 ॐ ह्रीं श्री **विनेत्रे** नमः
80 ॐ ह्रीं श्री **विहितान्तकाय** नमः
81 ॐ ह्रीं श्री **पित्रे** नमः
82 ॐ ह्रीं श्री **पितामहाय** नमः
83 ॐ ह्रीं श्री **पात्रे** नमः
84 ॐ ह्रीं श्री **पवित्राय** नमः
85 ॐ ह्रीं श्री **पावनाय** नमः
86 ॐ ह्रीं श्री **गतये** नमः
87 ॐ ह्रीं श्री **त्रात्रे** नमः
88 ॐ ह्रीं श्री **भिषग्वराय** नमः
89 ॐ ह्रीं श्री **वर्याय** नमः
90 ॐ ह्रीं श्री **वरदाय** नमः
91 ॐ ह्रीं श्री **परमाय** नमः
92 ॐ ह्रीं श्री **पुंसे** नमः
93 ॐ ह्रीं श्री **कवि** नमः
94 ॐ ह्रीं श्री **पुराणपुरुषाय** नमः
95 ॐ ह्रीं श्री **वर्षीयसे** नमः
96 ॐ ह्रीं श्री **ऋषभाय** नमः
97 ॐ ह्रीं श्री **पुरुवे** नमः
98 ॐ ह्रीं श्री **प्रतिष्ठाप्रभवाय**[1] नमः
99 ॐ ह्रीं श्री **हेतवे** नमः
100 ॐ ह्रीं श्री **भुवनैकपितामहाय** नमः

दोहा– महाशोक ध्वज आदि शत्, शोभित होते नाम।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, उनको करूँ प्रणाम।।4।।

ॐ ह्रीं श्री **महाशोकध्वजादिशतनामेभ्यः** पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रथम वलय पंचम कोष्ठे श्रीवृक्षलक्षणादि शतनामेभ्यः अर्घ्यं समर्पयेत्

1 ॐ ह्रीं श्री **श्रीवृक्षलणाय** नमः
2 ॐ ह्रीं श्री **श्लक्ष्णाय** नमः
3 ॐ ह्रीं श्री **लक्षण्याय** नमः
4 ॐ ह्रीं श्री **शुभलक्षणाय** नमः
5 ॐ ह्रीं श्री **निरक्षाय** नमः
6 ॐ ह्रीं श्री **पुण्डरीकाक्षाय** नमः

7 ॐ ह्रीं श्री **पुष्कलाय** नमः
8 ॐ ह्रीं श्री **पुष्करेक्षणाय** नमः
9 ॐ ह्रीं श्री **सिद्धिदाय** नमः
10 ॐ ह्रीं श्री **सिद्धसंकल्पाय** नमः
11 ॐ ह्रीं श्री **सिद्धात्मने** नमः
12 ॐ ह्रीं श्री **सिद्धसाधनाय** नमः
13 ॐ ह्रीं श्री **बुद्धबोध्याय** नमः
14 ॐ ह्रीं श्री **महाबोधये** नमः
15 ॐ ह्रीं श्री **वर्धमानाय** नमः
16 ॐ ह्रीं श्री **महर्द्धिकाय** नमः
17 ॐ ह्रीं श्री **वेदांगाय** नमः
18 ॐ ह्रीं श्री **वेदविदे** नमः
19 ॐ ह्रीं श्री **वेद्याय** नमः
20 ॐ ह्रीं श्री **जातरूपाय** नमः
21 ॐ ह्रीं श्री **विदांवराय** नमः
22 ॐ ह्रीं श्री **वेदवेद्याय** नमः
23 ॐ ह्रीं श्री **स्वसंवेद्याय** नमः
24 ॐ ह्रीं श्री **विवेदाय** नमः
25 ॐ ह्रीं श्री **वदताम्बराय** नमः
26 ॐ ह्रीं श्री **अनादिनिधनाय** नमः
27 ॐ ह्रीं श्री **व्यक्ताय** नमः
28 ॐ ह्रीं श्री **व्यक्तवाचे** नमः
29 ॐ ह्रीं श्री **व्यक्तशासनाय** नमः
30 ॐ ह्रीं श्री **युगादिकृते** नमः
31 ॐ ह्रीं श्री **युगाधराय** नमः
32 ॐ ह्रीं श्री **युगादये** नमः
33 ॐ ह्रीं श्री **जगदादिजाय** नमः
34 ॐ ह्रीं श्री **अतीन्द्राय** नमः
35 ॐ ह्रीं श्री **अतीन्द्रियाय** नमः
36 ॐ ह्रीं श्री **धीन्द्राय** नमः
37 ॐ ह्रीं श्री **महेन्द्राय** नमः
38 ॐ ह्रीं श्री **अतीन्द्रियार्थदृशे** नमः
39 ॐ ह्रीं श्री **अनिन्द्रियाय** नमः
40 ॐ ह्रीं श्री **अहमिन्द्रार्च्याय** नमः
41 ॐ ह्रीं श्री **महेन्द्रमहिताय** नमः
42 ॐ ह्रीं श्री **महते** नमः
43 ॐ ह्रीं श्री **उद्भाव** नमः
44 ॐ ह्रीं श्री **कारणाय** नमः
45 ॐ ह्रीं श्री **कर्त्रे** नमः
46 ॐ ह्रीं श्री **पारगाय** नमः
47 ॐ ह्रीं श्री **भवतारकाय** नमः
48 ॐ ह्रीं श्री **अग्राह्याय** नमः
49 ॐ ह्रीं श्री **गहनाय** नमः
50 ॐ ह्रीं श्री **गुह्याय** नमः
51 ॐ ह्रीं श्री **परार्ध्याय** नमः
52 ॐ ह्रीं श्री **परमेश्वराय** नमः
53 ॐ ह्रीं श्री **अनन्तर्द्धये** नमः
54 ॐ ह्रीं श्री **अमेयर्द्धये** नमः
55 ॐ ह्रीं श्री **अचिन्त्यर्द्धये** नमः
56 ॐ ह्रीं श्री **समग्रधिये** नमः
57 ॐ ह्रीं श्री **प्राग्रयाय** नमः
58 ॐ ह्रीं श्री **प्राग्रहराय** नमः
59 ॐ ह्रीं श्री **अभ्यग्राय** नमः
60 ॐ ह्रीं श्री **प्रत्यग्राय** नमः
61 ॐ ह्रीं श्री **अग्रयाय** नमः
62 ॐ ह्रीं श्री **अग्रिमाय** नमः
63 ॐ ह्रीं श्री **अग्रजाय** नमः
64 ॐ ह्रीं श्री **महातपसे** नमः
65 ॐ ह्रीं श्री **महातेजसे** नमः
66 ॐ ह्रीं श्री **महोदर्काय** नमः
67 ॐ ह्रीं श्री **महोदयाय** नमः
68 ॐ ह्रीं श्री **महायशसे** नमः
69 ॐ ह्रीं श्री **महाधाम्ने** नमः
70 ॐ ह्रीं श्री **महासत्त्वाय** नमः
71 ॐ ह्रीं श्री **महाधृतये** नमः
72 ॐ ह्रीं श्री **महाधैर्याय** नमः

73 ॐ ह्रीं श्री **महावीर्याय** नमः
74 ॐ ह्रीं श्री **महासंपदे** नमः
75 ॐ ह्रीं श्री **महाबलाय** नमः
76 ॐ ह्रीं श्री **महाशक्तये** नमः
77 ॐ ह्रीं श्री **महाज्योतिषे** नमः
78 ॐ ह्रीं श्री **महाभूतये** नमः
79 ॐ ह्रीं श्री **महाद्युतये** नमः
80 ॐ ह्रीं श्री **महामतये** नमः
81 ॐ ह्रीं श्री **महानीतये** नमः
82 ॐ ह्रीं श्री **महाक्षान्तये** नमः
83 ॐ ह्रीं श्री **महादयाय** नमः
84 ॐ ह्रीं श्री **महाप्रज्ञाय** नमः
85 ॐ ह्रीं श्री **महाभागाय** नमः
86 ॐ ह्रीं श्री **महानंदाय** नमः
87 ॐ ह्रीं श्री **महाकवये** नमः
88 ॐ ह्रीं श्री **महामहाय** नमः
89 ॐ ह्रीं श्री **महाकीर्तये** नमः
90 ॐ ह्रीं श्री **महाकान्तये** नमः
91 ॐ ह्रीं श्री **महावपुषे** नमः
92 ॐ ह्रीं श्री **महादानाय** नमः
93 ॐ ह्रीं श्री **महाज्ञानाय** नमः
94 ॐ ह्रीं श्री **महायोगाय** नमः
95 ॐ ह्रीं श्री **महागुणाय** नमः
96 ॐ ह्रीं श्री **महामहपतये** नमः
97 ॐ ह्रीं श्री **प्राप्तमहाकल्याणपंचकाय** नमः
98 ॐ ह्रीं श्री **महाप्रभवे** नमः
99 ॐ ह्रीं श्री **महाप्रातिहार्याधीशाय** नमः
100 ॐ ह्रीं श्री **महेश्वराय** नमः

दोहा- **श्री वृक्ष लक्षणादि शत्, नित्य रहे यह नाम।**
अष्ट द्रव्य से पूजकर, करते विशद प्रणाम ।।5 ।।

ॐ ह्रीं **श्रीवृक्षलक्षणादिशतनामेभ्यः** पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रथम वलय द्वितीय कोष्ठे स्थविष्ठादि शतनामेभ्यः अर्घ्यं समर्पयेत्

1 ॐ ह्रीं श्री **महामुनये** नमः
2 ॐ ह्रीं श्री **महामौनिने** नमः
3 ॐ ह्रीं श्री **महाध्यानिने** नमः
4 ॐ ह्रीं श्री **महादमाय** नमः
5 ॐ ह्रीं श्री **महाक्षमाय** नमः
6 ॐ ह्रीं श्री **महाशीलाय** नमः
7 ॐ ह्रीं श्री **महायज्ञाय** नमः
8 ॐ ह्रीं श्री **महामखाय** नमः
9 ॐ ह्रीं श्री **महाव्रतपतये** नमः
10 ॐ ह्रीं श्री **मह्याय** नमः
11 ॐ ह्रीं श्री **महाकांतिधराय** नमः
12 ॐ ह्रीं श्री **अधिपाय** नमः
13 ॐ ह्रीं श्री **महामैत्रीमयाय** नमः
14 ॐ ह्रीं श्री **अमेयाय** नमः
15 ॐ ह्रीं श्री **महोपायाय** नमः
16 ॐ ह्रीं श्री **महोमयाय** नमः
17 ॐ ह्रीं श्री **महाकारुणिकाय** नमः
18 ॐ ह्रीं श्री **मंत्रे** नमः
19 ॐ ह्रीं श्री **महामंत्राय** नमः
20 ॐ ह्रीं श्री **महायतये** नमः
21 ॐ ह्रीं श्री **महानादाय** नमः
22 ॐ ह्रीं श्री **महाघोषाय** नमः
23 ॐ ह्रीं श्री **महेज्याय** नमः
24 ॐ ह्रीं श्री **महसांपतये** नमः
25 ॐ ह्रीं श्री **महाध्वरधराय** नमः
26 ॐ ह्रीं श्री **धुर्याय** नमः
27 ॐ ह्रीं श्री **महौदार्याय** नमः
28 ॐ ह्रीं श्री **महिष्ठवाचे** नमः

29 ॐ ह्रीं श्री **महात्मने** नमः
30 ॐ ह्रीं श्री **महसांधाम्ने** नमः
31 ॐ ह्रीं श्री **महर्षये** नमः
32 ॐ ह्रीं श्री **महितोदयाय** नमः
33 ॐ ह्रीं श्री **महाक्लेशांकुशाय** नमः
34 ॐ ह्रीं श्री **शूराय** नमः
35 ॐ ह्रीं श्री **महाभूतपतये** नमः
36 ॐ ह्रीं श्री **गुरवे** नमः
37 ॐ ह्रीं श्री **महापराक्रमाय** नमः
38 ॐ ह्रीं श्री **अनन्ताय** नमः
39 ॐ ह्रीं श्री **महाक्रोधरिपवे** नमः
40 ॐ ह्रीं श्री **वशिने** नमः
41 ॐ ह्रीं श्री **महाभवाब्धिसंतारिणे** नमः
42 ॐ ह्रीं श्री **महामोहाद्रिसूदनाय** नमः
43 ॐ ह्रीं श्री **महागुणाकराय** नमः
44 ॐ ह्रीं श्री **क्षान्ताय** नमः
45 ॐ ह्रीं श्री **महायोगीश्वराय** नमः
46 ॐ ह्रीं श्री **शमिने** नमः
47 ॐ ह्रीं श्री **महाध्यानपतये** नमः
48 ॐ ह्रीं श्री **ध्यातमहाधर्माय** नमः
49 ॐ ह्रीं श्री **महाव्रताय** नमः
50 ॐ ह्रीं श्री **महाकर्मारिघ्ने** नमः
51 ॐ ह्रीं श्री **आत्मज्ञाय** नमः
52 ॐ ह्रीं श्री **महादेवाय** नमः
53 ॐ ह्रीं श्री **महेशित्रे** नमः
54 ॐ ह्रीं श्री **सर्वक्लेशापहाय** नमः
55 ॐ ह्रीं श्री **साधवे** नमः
56 ॐ ह्रीं श्री **सर्वदोषहराय** नमः
57 ॐ ह्रीं श्री **हराय** नमः
58 ॐ ह्रीं श्री **असंख्येयाय** नमः
59 ॐ ह्रीं श्री **अप्रमेयात्मने** नमः
60 ॐ ह्रीं श्री **शमात्मने** नमः
61 ॐ ह्रीं श्री **प्रशमाकराय** नमः
62 ॐ ह्रीं श्री **सर्वयोगीश्वराय** नमः
63 ॐ ह्रीं श्री **अचिन्त्याय** नमः
64 ॐ ह्रीं श्री **श्रुतात्मने** नमः
65 ॐ ह्रीं श्री **विष्टरश्रवसे** नमः
66 ॐ ह्रीं श्री **दान्तात्मने** नमः
67 ॐ ह्रीं श्री **दमतीर्थेशाय** नमः
68 ॐ ह्रीं श्री **योगात्मने** नमः
69 ॐ ह्रीं श्री **ज्ञानसर्वगाय** नमः
70 ॐ ह्रीं श्री **प्रधानाय** नमः
71 ॐ ह्रीं श्री **आत्मने** नमः
72 ॐ ह्रीं श्री **प्रकृतये** नमः
73 ॐ ह्रीं श्री **परमाय** नमः
74 ॐ ह्रीं श्री **परमोदयाय** नमः
75 ॐ ह्रीं श्री **प्रक्षीणबंधाय** नमः
76 ॐ ह्रीं श्री **कामारये** नमः
77 ॐ ह्रीं श्री **क्षेमकृते** नमः
78 ॐ ह्रीं श्री **क्षेमशासनाय** नमः
79 ॐ ह्रीं श्री **प्रणवाय** नमः
80 ॐ ह्रीं श्री **प्रणयाय** नमः
81 ॐ ह्रीं श्री **प्राणाय** नमः
82 ॐ ह्रीं श्री **प्राणदाय** नमः
83 ॐ ह्रीं श्री **प्रणतेश्वराय** नमः
84 ॐ ह्रीं श्री **प्रमाणाय** नमः
85 ॐ ह्रीं श्री **प्रणिधये** नमः
86 ॐ ह्रीं श्री **दक्षाय** नमः
87 ॐ ह्रीं श्री **दक्षिणाय** नमः
88 ॐ ह्रीं श्री **अध्वर्यवे** नमः
89 ॐ ह्रीं श्री **अध्वराय** नमः
90 ॐ ह्रीं श्री **आनन्दाय** नमः
91 ॐ ह्रीं श्री **नन्दनाय** नमः
92 ॐ ह्रीं श्री **नन्दाय** नमः
93 ॐ ह्रीं श्री **वंद्याय** नमः
94 ॐ ह्रीं श्री **अनिंद्याय** नमः

95 ॐ ह्रीं श्री **अभिनंदनाय** नमः
96 ॐ ह्रीं श्री **कामघ्ने** नमः
97 ॐ ह्रीं श्री **कामदाय** नमः
98 ॐ ह्रीं श्री **काम्याय** नमः
99 ॐ ह्रीं श्री **कामधेनवे** नमः
100 ॐ ह्रीं श्री **अरिंजयाय** नमः

दोहा– महामुन्यादि शत् शुभम्, आदि जिनके नाम।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, करते विशद प्रणाम ।।6 ।।

ॐ ह्रीं श्री **महामुन्यादिशतनामेभ्यः** पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रथम वलय सप्तम कोष्ठे असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनामेभ्यः अर्घ्यं समर्पयेत्

1 ॐ ह्रीं श्री **असंस्कृतसुसंस्काराय** नमः
2 ॐ ह्रीं श्री **अप्राकृताय** नमः
3 ॐ ह्रीं श्री **वैकृतांतकृते** नमः
4 ॐ ह्रीं श्री **अंतकृते** नमः
5 ॐ ह्रीं श्री **कांतगवे** नमः
6 ॐ ह्रीं श्री **कांताय** नमः
7 ॐ ह्रीं श्री **चिन्तामणये** नमः
8 ॐ ह्रीं श्री **अभीष्टदाय** नमः
9 ॐ ह्रीं श्री **अजिताय** नमः
10 ॐ ह्रीं श्री **जितकामारये** नमः
11 ॐ ह्रीं श्री **अमिताय** नमः
12 ॐ ह्रीं श्री **अमितशासनाय** नमः
13 ॐ ह्रीं श्री **जितक्रोधाय** नमः
14 ॐ ह्रीं श्री **जितामित्राय** नमः
15 ॐ ह्रीं श्री **जितक्लेशाय** नमः
16 ॐ ह्रीं श्री **जितांतकाय** नमः
17 ॐ ह्रीं श्री **जिनेन्द्राय** नमः
18 ॐ ह्रीं श्री **परमानंदाय** नमः
19 ॐ ह्रीं श्री **मुनीन्द्राय** नमः
20 ॐ ह्रीं श्री **दुंदुभिस्वनाय** नमः
21 ॐ ह्रीं श्री **महेन्द्रवंद्याय** नमः
22 ॐ ह्रीं श्री **योगीन्द्राय** नमः
23 ॐ ह्रीं श्री **यतीन्द्राय** नमः
24 ॐ ह्रीं श्री **नाभिनंदनाय** नमः
25 ॐ ह्रीं श्री **नाभेयाय** नमः
26 ॐ ह्रीं श्री **नाभिजा** नमः
27 ॐ ह्रीं श्री **अजाताय** नमः
28 ॐ ह्रीं श्री **सुव्रताय** नमः
29 ॐ ह्रीं श्री **मनवे** नमः
30 ॐ ह्रीं श्री **उत्तमाय** नमः
31 ॐ ह्रीं श्री **अभेद्याय** नमः
32 ॐ ह्रीं श्री **अनत्ययाय** नमः
33 ॐ ह्रीं श्री **अनाश्वते** नमः
34 ॐ ह्रीं श्री **अधिकाय** नमः
35 ॐ ह्रीं श्री **अधिगुरवे** नमः
36 ॐ ह्रीं श्री **सुगिरे** नमः
37 ॐ ह्रीं श्री **सुमेधसे** नमः
38 ॐ ह्रीं श्री **विक्रमिणे** नमः
39 ॐ ह्रीं श्री **स्वामिने** नमः
40 ॐ ह्रीं श्री **दुराधर्षाय** नमः
41 ॐ ह्रीं श्री **निरुत्सुकाय** नमः
42 ॐ ह्रीं श्री **विशिष्टाय** नमः
43 ॐ ह्रीं श्री **शिष्टभुजे** नमः
44 ॐ ह्रीं श्री **शिष्टाय** नमः
45 ॐ ह्रीं श्री **प्रत्ययाय** नमः
46 ॐ ह्रीं श्री **कामनाय** नमः
47 ॐ ह्रीं श्री **अनघाय** नमः
48 ॐ ह्रीं श्री **क्षेमिणे** नमः
49 ॐ ह्रीं श्री **क्षेमंकराय** नमः
50 ॐ ह्रीं श्री **अक्षयाय** नमः

51 ॐ ह्रीं श्री **क्षेमधर्मपतये** नमः
52 ॐ ह्रीं श्री **क्षमिने** नमः
53 ॐ ह्रीं श्री **अग्राह्याय** नमः
54 ॐ ह्रीं श्री **ज्ञाननिग्राह्याय** नमः
55 ॐ ह्रीं श्री **ज्ञानगम्याय** नमः
56 ॐ ह्रीं श्री **निरुत्तराय** नमः
57 ॐ ह्रीं श्री **सुकृतिने** नमः
58 ॐ ह्रीं श्री **धातवे** नमः
59 ॐ ह्रीं श्री **इज्यार्हाय** नमः
60 ॐ ह्रीं श्री **सुनयाय** नमः
61 ॐ ह्रीं श्री **श्रीसुनिवासाय** नमः
62 ॐ ह्रीं श्री **चतुराननाय** नमः
63 ॐ ह्रीं श्री **चतुर्वक्त्राय** नमः
64 ॐ ह्रीं श्री **चतुरास्याय** नमः
65 ॐ ह्रीं श्री **चतुर्मुखाय** नमः
66 ॐ ह्रीं श्री **सत्यात्मने** नमः
67 ॐ ह्रीं श्री **सत्यविज्ञानाय** नमः
68 ॐ ह्रीं श्री **सत्यवाचे** नमः
69 ॐ ह्रीं श्री **सत्यशासनाय** नमः
70 ॐ ह्रीं श्री **सत्याशिषे** नमः
71 ॐ ह्रीं श्री **सत्यसंधानाय** नमः
72 ॐ ह्रीं श्री **सत्याय** नमः
73 ॐ ह्रीं श्री **सत्यपरायणाय** नमः
74 ॐ ह्रीं श्री **स्थेयसे** नमः
75 ॐ ह्रीं श्री **स्थवीयसे** नमः
76 ॐ ह्रीं श्री **नेदीयसे** नमः
77 ॐ ह्रीं श्री **दवीयसे** नमः
78 ॐ ह्रीं श्री **दूरदर्शनाय** नमः
79 ॐ ह्रीं श्री **अणोरणीयसे** नमः
80 ॐ ह्रीं श्री **अनणवे** नमः
81 ॐ ह्रीं श्री **गरीयसमाद्यगुरवे** नमः
82 ॐ ह्रीं श्री **सदायोगाय** नमः
83 ॐ ह्रीं श्री **सदाभोगाय** नमः
84 ॐ ह्रीं श्री **सदातृप्ताय** नमः
85 ॐ ह्रीं श्री **सदाशिवाय** नमः
86 ॐ ह्रीं श्री **सदागतये** नमः
87 ॐ ह्रीं श्री **सदासौख्याय** नमः
88 ॐ ह्रीं श्री **सदाविद्याय** नमः
89 ॐ ह्रीं श्री **सदोदयाय** नमः
90 ॐ ह्रीं श्री **सुघोषाय** नमः
91 ॐ ह्रीं श्री **सुमुखाय** नमः
92 ॐ ह्रीं श्री **सौम्याय** नमः
93 ॐ ह्रीं श्री **सुखदाय** नमः
94 ॐ ह्रीं श्री **सुहिताय** नमः
95 ॐ ह्रीं श्री **सुहृदे** नमः
96 ॐ ह्रीं श्री **सुगुप्ताय** नमः
97 ॐ ह्रीं श्री **गुप्तिभृते** नमः
98 ॐ ह्रीं श्री **गोप्त्रे** नमः
99 ॐ ह्रीं श्री **लोकाध्यक्षाय** नमः
100 ॐ ह्रीं श्री **दमेश्वराय** नमः

दोहा– असंस्कृत से आदि कर, आदि जिन के नाम।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, उनको करूँ प्रणाम ।।7 ।।

ॐ ह्रीं श्री **असंस्कृतसुसंस्कारादिशतनामेभ्यः** पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रथम वलय अष्टम कोष्ठे बृहद् बृहस्पत्यादि शतनामेभ्यः अर्घ्यं समर्पयेत्

1 ॐ ह्रीं श्री **बृहद्बृहस्पतये** नमः
2 ॐ ह्रीं श्री **वाग्मिने** नमः
3 ॐ ह्रीं श्री **वाचस्पतये** नमः
4 ॐ ह्रीं श्री **उदारधिये** नमः
5 ॐ ह्रीं श्री **मनीषिणे** नमः
6 ॐ ह्रीं श्री **धिषणाय** नमः

7 ॐ ह्रीं श्री **धीमते** नमः
8 ॐ ह्रीं श्री **शेमुषीशाय** नमः
9 ॐ ह्रीं श्री **गिरांपतये** नमः
10 ॐ ह्रीं श्री **नैकरूपाय** नमः
11 ॐ ह्रीं श्री **नयोत्तुंगाय** नमः
12 ॐ ह्रीं श्री **नैकात्मने** नमः
13 ॐ ह्रीं श्री **नैकधर्मकृते** नमः
14 ॐ ह्रीं श्री **अविज्ञेयाय** नमः
15 ॐ ह्रीं श्री **अप्रतर्क्यात्मने** नमः
16 ॐ ह्रीं श्री **कृतज्ञाय** नमः
17 ॐ ह्रीं श्री **कृतलक्षणाय** नमः
18 ॐ ह्रीं श्री **ज्ञानगर्भाय** नमः
19 ॐ ह्रीं श्री **दयागर्भाय** नमः
20 ॐ ह्रीं श्री **रत्नगर्भाय** नमः
21 ॐ ह्रीं श्री **प्रभास्वराय** नमः
22 ॐ ह्रीं श्री **पद्मगर्भाय** नमः
23 ॐ ह्रीं श्री **जगद्गर्भाय** नमः
24 ॐ ह्रीं श्री **हेमगर्भाय** नमः
25 ॐ ह्रीं श्री **सुदर्शनाय** नमः
26 ॐ ह्रीं श्री **लक्ष्मीवते** नमः
27 ॐ ह्रीं श्री **त्रिदशाध्यक्षाय** नमः
28 ॐ ह्रीं श्री **दृढ़ीयसे** नमः
29 ॐ ह्रीं श्री **इनाय** नमः
30 ॐ ह्रीं श्री **ईशित्रे** नमः
31 ॐ ह्रीं श्री **मनोहराय** नमः
32 ॐ ह्रीं श्री **मनोज्ञांगाय** नमः
33 ॐ ह्रीं श्री **धीराय** नमः
34 ॐ ह्रीं श्री **गम्भीरशासनाय** नमः
35 ॐ ह्रीं श्री **धर्मयूपाय** नमः
36 ॐ ह्रीं श्री **दयायागाय** नमः
37 ॐ ह्रीं श्री **धर्मनेमये** नमः
38 ॐ ह्रीं श्री **मुनीश्वराय** नमः
39 ॐ ह्रीं श्री **धर्मचक्रायुधाय** नमः
40 ॐ ह्रीं श्री **देवाय** नमः
41 ॐ ह्रीं श्री **कर्मघ्ने** नमः
42 ॐ ह्रीं श्री **धर्मघोषणाय** नमः
43 ॐ ह्रीं श्री **अमोघवाचे** नमः
44 ॐ ह्रीं श्री **अमोघाज्ञाय** नमः
45 ॐ ह्रीं श्री **निर्मलाय** नमः
46 ॐ ह्रीं श्री **अमोघशासनाय** नमः
47 ॐ ह्रीं श्री **सुरूपाय** नमः
48 ॐ ह्रीं श्री **सुभगाय** नमः
49 ॐ ह्रीं श्री **त्यागिने** नमः
50 ॐ ह्रीं श्री **ज्ञात्रे** नमः
51 ॐ ह्रीं श्री **समाहिताय** नमः
52 ॐ ह्रीं श्री **सुस्थिताय** नमः
53 ॐ ह्रीं श्री **स्वस्थाय** नमः
54 ॐ ह्रीं श्री **स्वास्थ्यभाजे** नमः
55 ॐ ह्रीं श्री **नीरजस्काय** नमः
56 ॐ ह्रीं श्री **निरुद्धवाय** नमः
57 ॐ ह्रीं श्री **अलेपाय** नमः
58 ॐ ह्रीं श्री **निष्कलंकात्मने** नमः
59 ॐ ह्रीं श्री **वीतरागाय** नमः
60 ॐ ह्रीं श्री **गतस्पृहाय** नमः
61 ॐ ह्रीं श्री **वश्येन्द्रियाय** नमः
62 ॐ ह्रीं श्री **विमुक्तात्मने** नमः
63 ॐ ह्रीं श्री **निःसपत्नाय** नमः
64 ॐ ह्रीं श्री **जितेन्द्रियाय** नमः
65 ॐ ह्रीं श्री **प्रशांताय** नमः
66 ॐ ह्रीं श्री **अनन्तधामर्षये** नमः
67 ॐ ह्रीं श्री **मंगलाय** नमः
68 ॐ ह्रीं श्री **मलघ्ने** नमः
69 ॐ ह्रीं श्री **अनघाय** नमः
70 ॐ ह्रीं श्री **अनीदृशे** नमः
71 ॐ ह्रीं श्री **उपमाभूताय** नमः
72 ॐ ह्रीं श्री **दिष्टये** नमः

73 ॐ ह्रीं श्री **दैवाय** नमः
74 ॐ ह्रीं श्री **अगोचराय** नमः
75 ॐ ह्रीं श्री **अमूर्ताय** नमः
76 ॐ ह्रीं श्री **मूर्तिमते** नमः
77 ॐ ह्रीं श्री **एकाय** नमः
78 ॐ ह्रीं श्री **नैकाय** नमः
79 ॐ ह्रीं श्री **अध्यात्मगम्याय** नमः
80 ॐ ह्रीं श्री **अगम्यात्मने** नमः
81 ॐ ह्रीं श्री **योगविदे** नमः
82 ॐ ह्रीं श्री **योगिवंदिताय** नमः
83 ॐ ह्रीं श्री **सर्वत्रगाय** नमः
84 ॐ ह्रीं श्री **सदाभाविने** नमः
85 ॐ ह्रीं श्री **त्रिकालविषयार्थदृशे** नमः
86 ॐ ह्रीं श्री **शंकराय** नमः
87 ॐ ह्रीं श्री **शंवदाय** नमः
88 ॐ ह्रीं श्री **दांताय** नमः
89 ॐ ह्रीं श्री **दमिने** नमः
90 ॐ ह्रीं श्री **क्षान्तिपरायणाय** नमः
91 ॐ ह्रीं श्री **अधिपाय** नमः
92 ॐ ह्रीं श्री **परमानंदाय** नमः
93 ॐ ह्रीं श्री **परमात्मज्ञाय** नमः
94 ॐ ह्रीं श्री **परात्पराय** नमः
95 ॐ ह्रीं श्री **त्रिजगद्वल्लभाय** नमः
96 ॐ ह्रीं श्री **अभ्यर्च्याय** नमः
97 ॐ ह्रीं श्री **त्रिजगन्मंगलोदयाय** नमः
98 ॐ ह्रीं श्री **त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्रये** नमः
99 ॐ ह्रीं श्री **त्रिलोकाग्रशिखामणये** नमः

दोहा– वृहदादि को आदिकर, क्रमशः यह सौ नाम।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, करते विशद प्रणाम।।8।।

ॐ ह्रीं श्री **वृहद्वृहस्पत्यादिशतनामेभ्यः** पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रथम वलय नवम कोष्ठे त्रिकालदर्शितादि शतनामेभ्यः अर्घ्यं समर्पयेत्

1 ॐ ह्रीं श्री **त्रिकालदर्शिने** नमः
2 ॐ ह्रीं श्री **लोकेशाय** नमः
3 ॐ ह्रीं श्री **लोकधात्रे** नमः
4 ॐ ह्रीं श्री **दृढ़व्रताय** नमः
5 ॐ ह्रीं श्री **सर्वलोकातिगाय** नमः
6 ॐ ह्रीं श्री **पूज्याय** नमः
7 ॐ ह्रीं श्री **सर्वलोकैकसारथये** नमः
8 ॐ ह्रीं श्री **पुराणाय** नमः
9 ॐ ह्रीं श्री **पुरुषाय** नमः
10 ॐ ह्रीं श्री **पूर्वाय** नमः
11 ॐ ह्रीं श्री **कृतपूर्वांगविस्तराय** नमः
12 ॐ ह्रीं श्री **आदिदेवाय** नमः
13 ॐ ह्रीं श्री **पुराणाद्याय** नमः
14 ॐ ह्रीं श्री **पुरुदेवाय** नमः
15 ॐ ह्रीं श्री **अधिदेवतायै** नमः
16 ॐ ह्रीं श्री **युगमुख्याय** नमः
17 ॐ ह्रीं श्री **युगज्येष्ठाय** नमः
18 ॐ ह्रीं श्री **युगादिस्थितिदेशकाय** नमः
19 ॐ ह्रीं श्री **कल्याणवर्णाय** नमः
20 ॐ ह्रीं श्री **कल्याणाय** नमः
21 ॐ ह्रीं श्री **कल्याय** नमः
22 ॐ ह्रीं श्री **कल्याणप्रकृतये** नमः
23 ॐ ह्रीं श्री **कल्याणप्रकृतये** नमः
24 ॐ ह्रीं श्री **दीप्रकल्याणात्मने** नमः
25 ॐ ह्रीं श्री **विकल्मषाय** नमः
26 ॐ ह्रीं श्री **विकलंकाय** नमः
27 ॐ ह्रीं श्री **कलातीताय** नमः
28 ॐ ह्रीं श्री **कलिलघ्नाय** नमः

29 ॐ ह्रीं श्री **कलाधराय** नमः
30 ॐ ह्रीं श्री **देवदेवाय** नमः
31 ॐ ह्रीं श्री **जगन्नाथाय** नमः
32 ॐ ह्रीं श्री **जगद्बंधवे** नमः
33 ॐ ह्रीं श्री **जगतद्विभवे** नमः
34 ॐ ह्रीं श्री **जगद्धितैषिणे** नमः
35 ॐ ह्रीं श्री **लोकज्ञाय** नमः
36 ॐ ह्रीं श्री **सर्वगाय** नमः
37 ॐ ह्रीं श्री **जगदग्रजाय** नमः
38 ॐ ह्रीं श्री **चराचरगुरवे** नमः
39 ॐ ह्रीं श्री **गोप्याय** नमः
40 ॐ ह्रीं श्री **गूढ़ात्मने** नमः
41 ॐ ह्रीं श्री **गूढ़गोचराय** नमः
42 ॐ ह्रीं श्री **सद्योजाताय** नमः
43 ॐ ह्रीं श्री **प्रकाशात्मने** नमः
44 ॐ ह्रीं श्री **ज्वलज्ज्वलनसप्रभाय** नमः
45 ॐ ह्रीं श्री **आदित्यवर्णाय** नमः
46 ॐ ह्रीं श्री **भर्माभाय** नमः
47 ॐ ह्रीं श्री **सुप्रभाय** नमः
48 ॐ ह्रीं श्री **कनकप्रभाय** नमः
49 ॐ ह्रीं श्री **सुवर्णवर्णाय** नमः
50 ॐ ह्रीं श्री **रुक्माभाय** नमः
51 ॐ ह्रीं श्री **सूर्यकोटिसमप्रभाय** नमः
52 ॐ ह्रीं श्री **तपनीयनिभाय** नमः
53 ॐ ह्रीं श्री **तुंगाय** नमः
54 ॐ ह्रीं श्री **बालार्काभाय** नमः
55 ॐ ह्रीं श्री **अनलप्रभाय** नमः
56 ॐ ह्रीं श्री **संध्याभ्रबभ्रवे** नमः
57 ॐ ह्रीं श्री **हेमाभाय** नमः
58 ॐ ह्रीं श्री **तप्तचामीकरप्रभाय** नमः
59 ॐ ह्रीं श्री **निष्टप्तकनकच्छायाय** नमः
60 ॐ ह्रीं श्री **कनत्कांचनसन्निभाय** नमः
61 ॐ ह्रीं श्री **हिरण्यवर्णाय** नमः
62 ॐ ह्रीं श्री **स्वर्णाभाय** नमः
63 ॐ ह्रीं श्री **शांतकुंभनिभप्रभाय** नमः
64 ॐ ह्रीं श्री **द्युम्नाभास** नमः
65 ॐ ह्रीं श्री **जातरूपाभाय** नमः
66 ॐ ह्रीं श्री **तप्तंजांबूनदद्युतये** नमः
67 ॐ ह्रीं श्री **सुधौतकलधौतश्रिये** नमः
68 ॐ ह्रीं श्री **प्रदीप्ताय** नमः
69 ॐ ह्रीं श्री **हाटकद्युतये** नमः
70 ॐ ह्रीं श्री **शिष्टेष्टाय** नमः
71 ॐ ह्रीं श्री **पुष्टिदाय** नमः
72 ॐ ह्रीं श्री **पुष्टाय** नमः
73 ॐ ह्रीं श्री **स्पष्टाय** नमः
74 ॐ ह्रीं श्री **स्पष्टाक्षराय** नमः
75 ॐ ह्रीं श्री **क्षमाय** नमः
76 ॐ ह्रीं श्री **शत्रुघ्नाय** नमः
77 ॐ ह्रीं श्री **अप्रतिघाय** नमः
78 ॐ ह्रीं श्री **अमोघाय** नमः
79 ॐ ह्रीं श्री **प्रशास्त्रे** नमः
80 ॐ ह्रीं श्री **शासित्रे** नमः
81 ॐ ह्रीं श्री **स्वभुवे** नमः
82 ॐ ह्रीं श्री **शांतिनिष्ठाय** नमः
83 ॐ ह्रीं श्री **मुनिज्येष्ठाय** नमः
84 ॐ ह्रीं श्री **शिवतातये** नमः
85 ॐ ह्रीं श्री **शांतिदाय** नमः
86 ॐ ह्रीं श्री **शांतिकृते** नमः
87 ॐ ह्रीं श्री **शांतये** नमः
88 ॐ ह्रीं श्री **कांतिमते** नमः
89 ॐ ह्रीं श्री **कांतिमते** नमः
90 ॐ ह्रीं श्री **श्रेयोनिधये** नमः
91 ॐ ह्रीं श्री **अधिष्ठानाय** नमः
92 ॐ ह्रीं श्री **अप्रतिष्ठाय** नमः
93 ॐ ह्रीं श्री **प्रतिष्ठिताय** नमः
94 ॐ ह्रीं श्री **सुस्थिराय** नमः

95 ॐ ह्रीं श्री **स्थावराय** नमः
96 ॐ ह्रीं श्री **स्थाणवे** नमः
97 ॐ ह्रीं श्री **प्रथीयसे** नमः
98 ॐ ह्रीं श्री **प्रथिताय** नमः
99 ॐ ह्रीं श्री **पृथवे** नमः

दोहा- त्रिकालदर्शि को मुख्यकर, शत् नामों के नाथ।
आदि जिनेश्वर पूजता, अष्ट द्रव्य के साथ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री **त्रिकालदर्श्यादिशतनामेभ्यः** पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रथम वलय दशम कोष्ठे दिग्वासादि अष्टोत्तरशतनामेभ्यः अर्घ्यं समर्पयेत्

1 ॐ ह्रीं श्री **दिग्वाससे** नमः
2 ॐ ह्रीं श्री **वातरशनाय** नमः
3 ॐ ह्रीं श्री **निर्ग्रंथेशाय** नमः
4 ॐ ह्रीं श्री **दिगम्बराय** नमः
5 ॐ ह्रीं श्री **निष्किंचनाय** नमः
6 ॐ ह्रीं श्री **निराशंसाय** नमः
7 ॐ ह्रीं श्री **ज्ञानचक्षुषे** नमः
8 ॐ ह्रीं श्री **अमोमुहाय** नमः
9 ॐ ह्रीं श्री **तेजोराशये** नमः
10 ॐ ह्रीं श्री **अनंतौजसे** नमः
11 ॐ ह्रीं श्री **ज्ञानाब्धये** नमः
12 ॐ ह्रीं श्री **शीलसागराय** नमः
13 ॐ ह्रीं श्री **तेजोमयाय** नमः
14 ॐ ह्रीं श्री **अमितज्योतिषे** नमः
15 ॐ ह्रीं श्री **ज्योतिर्मूर्तये** नमः
16 ॐ ह्रीं श्री **तमोपहाय** नमः
17 ॐ ह्रीं श्री **जगच्चूड़ामणये** नमः
18 ॐ ह्रीं श्री **दीप्ताय** नमः
19 ॐ ह्रीं श्री **शंवते** नमः
20 ॐ ह्रीं श्री **विघ्नविनायकाय** नमः
21 ॐ ह्रीं श्री **कलिघ्नाय** नमः
22 ॐ ह्रीं श्री **कर्मशत्रुघ्नाय** नमः
23 ॐ ह्रीं श्री **लोकालोकप्रकाशकाय** नमः
24 ॐ ह्रीं श्री **अनिद्रालवे** नमः
25 ॐ ह्रीं श्री **अतंद्रालवे** नमः
26 ॐ ह्रीं श्री **जागरूकाय** नमः
27 ॐ ह्रीं श्री **प्रमामयाय** नमः
28 ॐ ह्रीं श्री **लक्ष्मीपतये** नमः
29 ॐ ह्रीं श्री **जगज्ज्योतिषे** नमः
30 ॐ ह्रीं श्री **धर्मराजाय** नमः
31 ॐ ह्रीं श्री **प्रजाहिताय** नमः
32 ॐ ह्रीं श्री **मुमुक्षवे** नमः
33 ॐ ह्रीं श्री **बंधमोक्षज्ञाय** नमः
34 ॐ ह्रीं श्री **जिताक्षाय** नमः
35 ॐ ह्रीं श्री **जितमन्मथाय** नमः
36 ॐ ह्रीं श्री **प्रशांतरसशैलूषाय** नमः
37 ॐ ह्रीं श्री **भव्यपेटकनायकाय** नमः
38 ॐ ह्रीं श्री **मूलकर्त्रे** नमः
39 ॐ ह्रीं श्री **स्वभुवे** नमः
40 ॐ ह्रीं श्री **मलघ्नाय** नमः
41 ॐ ह्रीं श्री **मूलकारणाय** नमः
42 ॐ ह्रीं श्री **आप्ताय** नमः
43 ॐ ह्रीं श्री **वागीश्वराय** नमः
44 ॐ ह्रीं श्री **श्रेयसे** नमः
45 ॐ ह्रीं श्री **श्रायसोक्तये** नमः
46 ॐ ह्रीं श्री **निरुक्तवाचे** नमः
47 ॐ ह्रीं श्री **प्रवक्त्रे** नमः
48 ॐ ह्रीं श्री **वचसामीशाय** नमः
49 ॐ ह्रीं श्री **मारजिते** नमः
50 ॐ ह्रीं श्री **विश्वभावविदे** नमः

51 ॐ ह्रीं श्री **सुतनवे** नमः
52 ॐ ह्रीं श्री **तनुनिर्मुक्तये** नमः
53 ॐ ह्रीं श्री **सुगताय** नमः
54 ॐ ह्रीं श्री **हतदुर्नयाय** नमः
55 ॐ ह्रीं श्री **श्रीशाय** नमः
56 ॐ ह्रीं श्री **श्रीश्रितपादाब्जाय** नमः
57 ॐ ह्रीं श्री **वीतभिये** नमः
58 ॐ ह्रीं श्री **अभयंकराय** नमः
59 ॐ ह्रीं श्री **उत्सन्नदोषाय** नमः
60 ॐ ह्रीं श्री **निर्विघ्नाय** नमः
61 ॐ ह्रीं श्री **निश्चलाय** नमः
62 ॐ ह्रीं श्री **लोकवत्सलाय** नमः
63 ॐ ह्रीं श्री **लोकोत्तराय** नमः
64 ॐ ह्रीं श्री **लोकपतये** नमः
65 ॐ ह्रीं श्री **लोकचक्षुषे** नमः
66 ॐ ह्रीं श्री **अपारधिये** नमः
67 ॐ ह्रीं श्री **धीरधिये** नमः
68 ॐ ह्रीं श्री **बुद्धसन्मार्गाय** नमः
69 ॐ ह्रीं श्री **शुद्धाय** नमः
70 ॐ ह्रीं श्री **सत्यसूनृतवाचे** नमः
71 ॐ ह्रीं श्री **प्रज्ञापारमिताय** नमः
72 ॐ ह्रीं श्री **प्राज्ञाय** नमः
73 ॐ ह्रीं श्री **यतये** नमः
74 ॐ ह्रीं श्री **नियमितेन्द्रियाय** नमः
75 ॐ ह्रीं श्री **भदंताय** नमः
76 ॐ ह्रीं श्री **भद्रकृते** नमः
77 ॐ ह्रीं श्री **भद्राय** नमः
78 ॐ ह्रीं श्री **कल्पवृक्षाय** नमः
79 ॐ ह्रीं श्री **वरप्रदाय** नमः
80 ॐ ह्रीं श्री **समुन्मूलिकर्मारये** नमः
81 ॐ ह्रीं श्री **कर्मकाष्ठाशुशुक्षणये** नमः
82 ॐ ह्रीं श्री **कर्मण्याय** नमः
83 ॐ ह्रीं श्री **कर्मठाय** नमः
84 ॐ ह्रीं श्री **प्रांशवे** नमः
85 ॐ ह्रीं श्री **हेयादेयविचक्षणाय** नमः
86 ॐ ह्रीं श्री **अनन्तशक्तये** नमः
87 ॐ ह्रीं श्री **अच्छेद्या** नमः
88 ॐ ह्रीं श्री **त्रिपुरारये** नमः
89 ॐ ह्रीं श्री **त्रिलोचनाय** नमः
90 ॐ ह्रीं श्री **त्रिनेत्राय** नमः
91 ॐ ह्रीं श्री **त्र्यंबकाय** नमः
92 ॐ ह्रीं श्री **त्र्यक्षाय** नमः
93 ॐ ह्रीं श्री **केवलज्ञानवीक्षणाय** नमः
94 ॐ ह्रीं श्री **समंतभद्राय** नमः
95 ॐ ह्रीं श्री **'शांतारये'** नमः
96 ॐ ह्रीं श्री **धर्माचार्याय** नमः
97 ॐ ह्रीं श्री **दयानिधये** नमः
98 ॐ ह्रीं श्री **सूक्ष्मदर्शिने** नमः
99 ॐ ह्रीं श्री **जितानंगाय** नमः
100 ॐ ह्रीं श्री **कृपालवे** नमः
101 ॐ ह्रीं श्री **धर्मदेशकाय** नमः
102 ॐ ह्रीं श्री **शुभंयवे** नमः
103 ॐ ह्रीं श्री **सुखसाद्भूताय** नमः
104 ॐ ह्रीं श्री **पुण्यराशये** नमः
105 ॐ ह्रीं श्री **अनामयाय** नमः
106 ॐ ह्रीं श्री **धर्मपालाय** नमः
107 ॐ ह्रीं श्री **जगत्पालाय** नमः
108 ॐ ह्रीं श्री **धर्मसाम्राज्यनायकाय** नमः

दोहा- दिग्वासादि आठ शत्, राजमान यह नाम।
आदि जिन को पूजते, करके विशद प्रणाम।।10।।

ॐ ह्रीं श्री **दिग्वासादिअष्टोत्तरशतनामेभ्यः** पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैंॐ
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वाननॐ

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वनन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया हैॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैंॐ

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंॐ

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंॐ

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंॐ

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैंॐ

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछतानाॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैंॐ

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना थाॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैंॐ

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैंॐ

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैंॐ

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमालॐ

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण॥
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी॥
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े॥
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया॥
in vkpk;Z izfr"Bk dk 'kqHk] nks gtkj lu~ ik¡p jgkA
rsjg Qjojh calr iapeh] cus xq# vkpk;Z vgkAA
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते॥
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है॥
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है॥
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना॥
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता॥
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें॥
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें॥

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्जः- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता॥
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया॥
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा॥
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे॥
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय॥

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर